कृषि वैज्ञानिका

कृषि विज्ञान, नवाचार एवं खेती की काव्य अभिव्यक्तियाँ

डॉ. डी कुमार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SOUTH ASIA
BIOTECHNOLOGY CENTRE®
दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र
जोधपुर, राजस्थान, भारत

विशेष आभार
संकल्पना/मूर्तरुप : भागीरथ चौधरी

प्रकाशक : दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केंद्र (SABC), जोधपुर, राजस्थान.

आयएसबीएन संख्या: 978-93-5578-082-9

संदर्भ : कुमार, डी., 2023. कृषि वैज्ञानिका – कृषि विज्ञान, नवाचार और खेती की काव्य अभिव्यक्तियाँ, दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केंद्र (SABC), जोधपुर, राजस्थान

मूल्य : रूपये 375/–

कॉपीराईट @ दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केंद्र, 2023 (info@sabc.asia)

सर्वाधिकार सुरक्षित: प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा फोटोग्राफी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक माध्यमों सहित किसी भी रुप में या किसी भी माध्यम से पुनरूत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

कृषि वैज्ञानिका

कृषि विज्ञान, नवाचार एवं खेती की काव्य अभिव्यक्तियाँ

डॉ. डी कुमार
पूर्व प्रधान वैज्ञानिक
आईसीएआर-काजरी, जोधपुर

SOUTH ASIA
BIOTECHNOLOGY CENTRE®
दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र
जोधपुर, राजस्थान, भारत

@ दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केंद्र, 2023

विषय सूची

संदेश

प्राक्कथन

प्रस्तावना

कृषक		01
1	नमस्ते कृषक, नमस्ते भारत	02
2	हे कृषक तुम पर लिखूँ कैसे ?	03
3	कृषक बन जाऊँ मैं	05
4	बीसवीं सदी के भारतीय कृषक	06
5	इक्कीसवीं सदी के भारतीय कृषक	07
6	मैं धरती से जुड़ा किसान हूँ	09
7	किसान मेरी नज़र में	10
8	कृषक गण खेती संग करें क्या ?	11
9	आप भारतीय किसान विशेष	12
10	कृषक की आवश्यकताऐं होती नाम मात्र	13
11	मौसम की बेरुखी से सीखें किसान	14
12	इस धरती के आमजन कृषक गण	15
13	नहीं कुछ, वहीं सब कुछ	16
गाँव		17
14	मेरा गाँव, मेरा मान	18
15	मेरा गाँव राष्ट्र की शान	19
16	गाँवों में वो बातें अब कहाँ ?	20
17	खेत बने अब गाँव हमारे	21
18	कुछ बदल से गए अब गाँव	22

19 हमारे गाँवों का सामाजिक पतन 23
20 ऐसे होते भारत के गाँव 24
21 पकड़ी गाँवों ने उन्नति की राह 25

कृषि सभ्यता 26
22 जान लें दास्तान–ए–कृषि 27
23 समाई भारतीय कृषि संस्कृति में 28
24 क्या है भारतीय कृषि ? 29
25 भूमि कृषि की माँ, करें सेवा 30
26 कृषि है सभ्यता, यज्ञ भी 31
27 कथन, गुर व अनुभव कृषि के 32
28 कम लागत का कुटीर उद्योग कृषि 33
29 कृषि–मृदा–माता–सागर 34
30 खेती के मुख्य कथन 35

कृषि मृदाऐं 36
31 स्वस्थ मृदाऐं संसार की भूख मिटायेंगी 37
32 बंजर ज़मीन की सच्चाईयाँ 38
33 करें भूमि का प्रजनन 39
34 शुष्क भूमियां मांगती ग्रे क्रान्ति 40
35 खेती का हल, खेती से 41
36 खेती किसानी आसान नहीं 42
37 खेती किसानी को करना है आसान 43
38 कृषि व भूमि का बटवार 44

जैविक खेती 45
39 जैविक खेती का अभिप्राय 46

40	जैविक खेती के सिद्धांत	47
41	जैविक खेती प्रारम्भ कैसे करें ?	48
42	जैविक खेती के आधार व विशेषताऐं	49
43	जैविक कीट नियंत्रण	50
44	करें ट्राइकोडरमा सक्रिय	51
45	वेस्ट डीकम्पोजर का करें प्रयोग पुरजोर	52
46	कम्पोस्ट बनाने की संक्षिप्त जानकारी	53
कृषि जलवायु		54
47	वर्षा है उत्सव कृषि का	55
48	सबक सिखा गया वर्ष 2022 का मानसून	56
49	जल प्रबंधन से करें सूखा प्रबंधन	58
50	कृषि वानिकी देगी जलवायु परिवर्तन को चुनौती	59
फसलें		60
51	बाजरा गौरव हमारा	61
52	दालें	62
53	मरु दलहनें	63
54	मसाला फसलें : लागत कम, आय अधिक	64
55	जीरा	65
56	सौंफ	67
57	ईसबगोल	69
58	ग्वार के उपयोग	70
59	लाभ सहजन के	71
कीट प्रबंधन		72
60	कीट प्रबंधन में करें प्रपंचो का प्रयोग	73

61 नर्सरी में कीट प्रबंधन 74
62 बचाएं कपास, गुलाबी सूंडी से, बांधे जैविक गाँठ 75

खाद्यान्न 76
63 अंकुरित बीजों में छिपा लम्बा और स्वस्थ जीवन 77
64 बचने दिल के दौरे से खायें फल विशेष 78
65 करें ना खाद्यान्न बर्बाद 79

स्वेत क्रान्ति 8०
66 ऊँट का दूध बेहद उपयोगी 81
67 देशी व विदेशी गायें 82
68 हे गौ माता तुझे प्रणाम! 83

सफलतम कहानियाँ 85
69 अनार की सफलतम कहानी 86
7० अनार में कीटों की रोकथाम 87
71 मारवाड़ में खजूर की सफलतम कहानी 88
72 पोली हाउस से, संतुष्टि व आत्मनिर्भरता 89
73 संवर्धन, प्रसंस्करण, गेहूं के ज्वारा की कहानी 9०
74 विपरीत हालातों को बनाया मित्र 91

कृषि वैज्ञानिक 92
75 मैं भारत का कृषि वैज्ञानिक 93

नरेन्द्र सिंह तोमर
NARENDRA SINGH TOMAR

D.O. No. ...211.........../AM

सत्यमेव जयते

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकार हर्ष हुआ है कि साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर, जोधपुर द्वारा कृषि क्षेत्र में नवाचार और खेती की नयी विधियों को आसान कविता की भाषा में किसानो तक पहुंचाने के लिए "कृषि वैज्ञानिका – कृषि विज्ञान, नवाचार और खेती की काव्य अभिव्यक्तियाँ" नामक एक नई श्रृंखला का प्रकाशन किया गया है। इस प्रकाशन द्वारा कृषि की विविध जानकारियों को सूक्ष्म कर, कविता स्वरूप में ढाल कर कृषकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। यह एक अनूठा प्रयास है। कठिन, क्लिष्ट, कृषि ज्ञान, अनुसंधान व तकनीकियों को उत्पादन के अन्तिम छोर तक पहुँचाना, चुनौतियों से लदा माना जाता है। कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय विभिन्न भागों, अनुभागों व स्तरों पर कृषक कल्याण कार्य कर रहा है, परन्तु चुनौतियाँ अधिक है इसके अनेक कारण हो सकते है। प्रयास लगातार होते रहने चाहिये।

कृषि के क्षेत्र में, उचित प्रसार के प्रयास करने के लिये, तकनीकियों व अनुसंधानों का पूर्ण ज्ञान करके, उन्हें आसान शब्दों में ढाल कर, कविता के रूप में खेतों व खलिहानों तक ले जाना एक चमत्कारिक प्रयत्न कहा जायेगा। कृषक इस प्रकार के ज्ञान को समझकर, क्रियान्वित कर सकेंगे तथा फसलों, फलों, दूध, वानिकी उत्पादन व भूमि सुधार को पूर्ण ज्ञान से अंजाम तक पहुँचा सकेंगें। इस प्रकार के प्रयासों से कृषकों की भूमियों पर उत्पादन बढ़ेगा, स्थिरता आयेगी तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। कृषकों की समृद्धि व उनका कल्याण ही हमारा लक्ष्य रहा हैं।

आजादी के 75 वे वर्ष में जब देश आजादी का अमृत महोत्सव के साथ साथ अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 मना रहा हैं के उपलक्ष में 75 कृषि ज्ञान सर्जित कविताओं का संग्रह एक अनूठा प्रयास हैं जिसके लिए में साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर, जोधपुर को बधाई देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि यह प्रयास निरंतर चलता रहेगा तथा कृषकगणों की सेवा की जाती रहेगी।

7/1/21

(नरेन्द्र सिंह तोमर)

Office : Room No. 120, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001 Tel.: 23383370, 23782691 Fax : 23384129
Resi. : 3, Krishna Menon Marg, New Delhi-110001, Ph. : 011-23794697 / 98, Fax : 011-23794696

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2023
जयपुर, 25 जनवरी, 2023

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि दक्षिण एशिया जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र, जोधपुर के सौजन्य से वैज्ञानिक डॉ. डी.कुमार और डॉ. भागीरथ चौधरी जी द्वारा कृषि क्षेत्र में नवाचार और खेती की नई विधियों को सरल काव्य शैली में लिखित "कृषि वैज्ञानिका–कृषि विज्ञान, नवाचार और खेती की काव्य अभिव्यक्तियां" पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

खेती के सम्बन्ध में काव्यमय लोकोक्तियां, मुहावरे, दोहे, सोरठे आदि की परम्परा सुविदित है। इससे हवा, बादल, चांद, सूरज आदि से वर्षा, आंधी और सूखे की संभावनाओं का ज्ञान ग्रामीणों और किसानों को कंठस्थ रहता आया है। इस दृष्टि से वैज्ञानिक कृषि और इस क्षेत्र में नवाचार आदि की रचनाएं आपने आप में महत्वपूर्ण है।

आशा है आधुनिक परिवेश में कृषि कर्म पर केन्द्रित पद्य रचनाएं किसानों और ग्रामीणों में लोकप्रिय हो सकेंगी।

मैं लेखक डॉ. डी.कुमार और डॉ. भागीरथ चौधरी को इस नवाचार के लिए बधाई देते हुए पुस्तक के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

डॉ. भागीरथ चौधरी, संस्थापक निदेशक,
दक्षिण एशिया जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र,
36, सुशील नगर, भगत की कोठी,
न्यू पाली रोड़, जोधपुर–342 001(राज.)

सत्यमेव जयते
डॉ. हिमांशु पाठक
सचिव, एवं महानिदेशक
Dr HIMANSHU PATHAK
SECRETARY (DARE) & DIRECTOR GENERAL (ICAR)

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION (DARE)
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH (ICAR)
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि दक्षिण एशिया जैव-प्रौद्योगिकी केन्द्र, जोधपुर द्वारा पिछले कुछ वर्षों से कृषि विज्ञान, नवाचार और तकनीक के आयामों को अंतिम छोर तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद देशभर में फैले अपने अनुसंधान संस्थानों, परियोजना निदेशालयों, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों के साथ विश्व की सबसे बड़ी कृषि अनुसंधान प्रणालियों में से एक है। भारतीय कृषि की प्रगति और किसान कल्याण में परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिषद द्वारा विकसित उच्च उपजशील किस्मों, प्रौद्योगिकियों एवं पशुधन प्रजातियों का विकास करने के परिणामस्वरूप देश में खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और अब हमारा राष्ट्र आयातक से आगे बढ़कर निर्यातक की भूमिका में आ गया है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए विकसित तकनीकों का तेजी से प्रचार प्रसार करना अत्यंत जरूरी हो गया है और इस कार्य में "कृषि वैज्ञानिका - कृषि विज्ञान, नवाचार एवं खेती की काव्य अभिव्यक्तियां' का प्रकाशन करना अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

इस प्रकाशन के लेखकवृंदों के सार्थक प्रयास की सराहना करते हुए मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

दिनांक : 01 फरवरी, 2023

(हिमांशु पाठक)

प्राक्कथन

इस वर्ष भारत जश्न की तिकड़ी मना रहा हैं; एक ओर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 मनाया जा रहा है तो दूसरी ओर आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव में भारत जी–20 की अध्यक्षता कर रहा है। यही सही समय है, जब हम सब भारतवासी हमारे देश के छोटे और सीमांत किसानों के परिश्रमी जीवन और उससे मिली समृद्धि का भी जश्न मनाएं।

भारत छोटे किसानों और लघु उद्योगों का देश है, जो इसके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ताने–बाने का आधार है। यह देश की खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता में किसानों का अहम योगदान है। 140 करोड़ भारतीयों के लिए खाद्य सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता है। किसान, छोटे व्यवसाय और लचीली खाद्य आपूर्ति श्रृंखला देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण पूरक है। नोबल पुरस्कार विजेता कृषि वैज्ञानिक डॉ. नॉर्मन बोरलॉग ने 1970 में नोबल पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा था कि ''आप भूखे पेट समाज में शांति का निर्माण नहीं कर सकते।'

इस कथ्य को ध्यान में रखते हुए भारत के हजारों कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस स्वामीनाथन और डॉ. आर. एस परोदा जैसे विख्यात वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में देश को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में योगदान दे रहे हैं।

भारत ने कोविड–19 जैसी महामारी के दौरान खाद्य सुरक्षा को सर्वोपरि रखा। देश की आबादी को दो वक्त का भोजन सुनिश्चित करने के साथ ही दूसरे देशों को भी पर्याप्त मात्रा में खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवा कर दुनिया के समक्ष मिसाल कायम की।

जलवायु परिवर्तन के इस दौर में किसानों को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अनगिनत चुनौतियां का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में खाद्य उत्पादन के वैज्ञानिक तरीकों पर ध्यान केंद्रित करने और खाद्य सुरक्षित राष्ट्र बनाने की दिशा में पुरजोर कोशिश करनी होगी। चाहे जैविक या प्राकृतिक खेती हो या निवेश गहन व्यावसायिक खेती हमें खाद्य उत्पादन के लिए साक्ष्य और विज्ञान आधारित दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें अपने कृषक समुदाय को नए तरीकों और आधुनिक प्रणाली को अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा ताकि उनकी आय तथा मूल्य प्राप्ति में वृद्धि हो सके। इस प्रकार किसान समुदाय देश की प्रगति का महत्वपूर्ण अंग बन सकेंगे। भारत की नीतियों और कार्यक्रमों में किसानो को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी और उन्हें जैविक व अजैविक चुनौतियों से निपटने के लिए मजबूत बनाना होगा।

भारत और राज्यों के सरकारी संस्थानों के सहयोग से साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर देश के किसानों तथा किसान उत्पाद संगठनों को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमारे संयुक्त

प्रयासों से किसान, किसान उत्पाद संगठन तथा कृषि व्यवसाय देश के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक ताने–बाने को बुनने, वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने और खाद्य सुरक्षा तथा पर्यावरणीय स्थिरता की प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे है।

खाद्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, भारत में, विशेषकर संसाधनों की कमी वाले कृषि क्षेत्रों में, कृषि के वातावरण व कृषि की संपदाओं में काफी विविधताएं हैं, ये विविधताएं सीमित संसाधन तथा तकनीकियों के सीमित प्रसार के कारण, कृषि उद्योग में आय–व्यय में काफी अन्तर पैदा कर देती है। इस अन्तर को कृषि विज्ञान, तकनीक और नवाचार से पाटना तथा सामान्य कृषि क्षेत्रों को और अधिक लाभदायक बनाना होगा। इसके साथ साथ किसानों की आय में बढ़ोतरी और कृषि से जुड़े व्यवसाय के जरिये किसान कल्याण को प्राथमिकता देनी होगी। हमारा हर कदम कृषकों के कल्याण के लिए उठे, हम सब को मिल कर यही सुनिश्चित करना होगा।

इसी क्रम में साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर, जोधपुर ने कृषि के ज्ञान को किसानों तक पहुँचाने की एक विशेष पहल की है। जिसके तहत एक नया प्रकाशन ``कृषि वैज्ञानिक – कृषि विज्ञान, नवाचार और खेती की काव्य अभिव्यक्तियां'' का लेखन किया हैं। कृषि की जटिल तकनीकियों को समझकर, आसान भाषा में परिवर्तित कर, 75 कविताओं का संग्रह, भारत के 75 वें अमृत महोत्सव में किसान समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। हमारे किसान इसे समझ कर, गुनगुनाते हुए, याद रखेंगे तथा अपनी आवश्यकताओं व अपनी जलवायु के लिए अनुकूल तकनीकियों को क्रियान्वित कर सकेंगे। उचित कृषि ज्ञान, तकनीक और नवाचार के खेत–खलिहान में पहुँचने से खेती की पैदावार में बढ़ोतरी होगी, उत्पादकता में स्थिरता आएगी, उत्पाद गुणवत्ता से भरपूर होगा तथा निर्यात की कसौटी पर सही उतरेगा। इस प्रकार के प्रयास से कृषि क्षेत्र में समृद्धि आएगी तथा हर प्रकार से प्रदेश में खुशी की लहर छाने लगेगी। तथास्तु!

डॉ. सी डी मायी /भागीरथ चौधरी
साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर
जोधपुर, राजस्थान
18 फरवरी 2023

प्रस्तावना

राष्ट्र उत्थान के लिए ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण व उत्तम विकल्प नहीं है। ज्ञान की खोज, इसका सृजन, मूल्यांकन व इसका समाज पर प्रभाव ज्ञान की गुणवत्ता एवम् परिपक्वता का निर्धारण करते हैं। ज्ञान स्वहित या समाज हित दोनों के लिए होता है। दोनों ही प्रकार के ज्ञान, समय–समय पर उपलब्ध रहते हैं। ज्ञान जब स्वयं से हटकर समाज या राष्ट्र के काम आता है, तब अधिक सराहा जाता है। सामाजिक ज्ञान सादगी समान है जो कभी निष्क्रिय तथा निष्फल नहीं होता है। इसके विपरीत व्यक्तिगत या व्यक्ति विशेष पर ही ज्ञान का प्रयोग एक चिड़िया समान होता है जो अधिक समय तक प्रभावी नहीं रहता है। अतः हमारे भारतीय समाज में ज्ञान की दौलत को सामाजिक उपयोग, उपभोग, क्रियान्वयन के स्तर पर मान्यता मिलती है। गुरुजनों का सम्मान किसी सम्राट से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। इस ज्ञान को शक्ति या प्रशासन की अपेक्षा इतिहास में अधिक स्थान मिलता है तथा यह सर्व सुखाय ज्ञान विशेष पन्नों पर लिखा जाता है। व्यवहारिक स्तर पर तोला जाये तो, ज्ञान वहीं है जो लिखा जा सकता है या बोला जा सकता है या दोनों प्रकार से इसका अवलोकन किया जाता है। जिस ज्ञान का क्रियान्वयन हो जाता है और यदि वह बहुउपयोगी है एवं समाज व राष्ट्र उत्थान में भागीदारी बन जाता है तो उसे तकनीकी ज्ञान माना जाता है। यही ज्ञान अनुसंधान व विकास का कुंदन बन जाता है।इसका सृजन, प्रसार व प्रचार स्वयं ही होता चला जाता है। इसे किसी सहारे की या किसी मीडिया की आवश्यकता नहीं पड़ती है।आमजन ही, ऐसे ज्ञान के साधन बन जाते हैं तथा ऐसा ज्ञान किसी सीमा, भेदभाव या दुष्प्रचार तथा नफरत से बहुत ऊपर उठ जाता है। बस यही अनुसंधानकर्त्ता या वैज्ञानिक के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। इस ज्ञान को समाज के प्यार, सौहार्द्र तथा आशीर्वाद से नवाजा जाता है।सभी ज्ञान उच्च कोटि की तकनीकी को नहीं छू सकते। ऐसे ज्ञान व तकनीकियों के जनक अनुसंधानकर्त्ता समाज के सरताज हुआ करते है तथा विरले ही होते है।

विज्ञान व कृषि संस्थानों से अर्जित ज्ञान दोनों ही महत्वपूर्ण तथा समान रुप से उपयोगी होते हैं। परन्तु कृषि का ज्ञान देने वाले तथा उपयोग में लाने व लागू करने वाले ग्रामीण संस्थानों के बीच समझ, समझदारी एवं लागू करने की इच्छा शक्ति स्तर में काफी अन्तर पाया जाता है। इसके साथ–साथ वातावरण, भूमि व दूसरे आदानों की उपलब्धता तथा इनकी विविधताऐं इसके क्रियान्वयन को जटिल बना देती हैं। इसके लिए ज्ञान देने वाले तथा प्राप्त करने वालों के स्तर को बराबरी पर लाने की आवश्यकता है।

अतः अनुसंधान संस्थाओं व गांवों में, प्रयोगशाला तथा खेत व खलिहान में कृषि वैज्ञानिकों तथा कृषकों के बीज सामंजस्य, समता व एक–दूसरे को समझने की आवश्यकता है, दोनों को एक–दूसरे का पूरक होना चाहिए।साधारण शब्दों में कहा जाए तो ज्ञान और तकनीकियों का सृजन विशेष स्थिति के लिए होना चाहिए। इस तकनीकी ज्ञान को वातावरण की विविधता की वैतरणी से गुजरना होगा, ताकि यह ज्ञान इन झरोखों से

प्रभावित न हो। जिस मूल्य, स्तर, गुण को लेकर यह ज्ञान प्रयोगशाला से चला था उसी स्वरुप में इसे कृषक को ग्रहण करा देने की क्षमता होनी चाहिए। कृषि तकनीकियों का आधार सीमित, लघु व अतिसंवेदनशील न हो, बल्कि बहुतायत, लचकदार, अप्रभावी, स्थिरता के कारक से बंधा हो। क्रियान्वयन क्षेत्र, वातावरण व प्रयोग करने वाली विधियाँ व आदानों से बदलते रहते हैं। अत: तकनीकियों की उपज व उपयोगिता का अन्तिम प्रभाव 40—50 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिये। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उपज या प्राप्ति की दर, प्रयोगशालाओं व खेतों के बीच में अन्तर 5—7 प्रतिशत से अधिक नहीं आना चाहिए। तकनीकियों में विभीषिकाओं व विषमताओं को सहने की जबरदस्त क्षमता होनी चाहिए। उपज भले ही अधिक ना मिले, तकनीकियों में स्थिरता उच्च स्तरीय होनी चाहिए। तभी तो हमारी कृषि तेजी से बदलते वातावरण व भूमंडलीय ऊष्मा का सामना कर सकेगी। यही आज की आवश्यकता है।

उपरोक्त विभिन्न प्रकार के जटिल ज्ञान को ग्रामीण संस्थाओं, गांवों, खेतों व कृषकों तक पहुंचाने के तरीके भी काफी प्रचलित हैं। यह कार्य विभिन्न स्तरों पर, विभिन्न संस्थाओं व ऐजेंसियों के माध्यम से किया जा रहा है। इसमें नयापन, सुगमता, सरलता, तरलता निरन्तरता को जोड़ने की आवश्यकता है। ताकि ज्ञान/तकनीकियां अपने वास्तिविक स्वरुप में सीधे खेतों तक पहुँचाई जा सकें तथा उचित निष्कर्ष देकर कृषकों के दिल को जीत सकें।

कृषि संबंधित उपरोक्त समस्याओं, उनके निराकरण, वातावरण की विषमताओं, उपलब्ध अनुसंधान व विकास को ध्यान में रखते हुए एक नई पहल विचाराधीन है। यह पहल कृषि अनुसंधान, ज्ञान, तकनीकियों के प्रचार—प्रसार से संबंधित है। विविध ज्ञान को संक्षिप्त व सूक्ष्म करके, आसान शब्दों में कविता के रुप में पिरौने के प्रयत्न किए गए हैं। इन कविताओं के माध्यम से कृषकों को कृषि की जानकारी दी जाएगी। इस पहले प्रयास में कृषि भूमि, कृषि संस्कृति, कृषि की स्थिति, गौ माता, कृषक दर्शन, जैविक खेती, जैविक नियंत्रण, कुछ कृषि जिंसों की सफलतम कहानियों को संकलित करके प्रस्तुत किया गया है। इस कृति में 75 कविताएं, कृषि के इन स्वरुपों पर संकलित व आधारित हैं। आगे आने वाले समय में कृषि के रुप व स्वरुप आवश्यकतानुसार भिन्न होंगे। किसी भी जानकारी या लम्बे ज्ञान को संक्षिप्त कर 20—25 पंक्तियों में प्रस्तुत करना एक चुनौती है, जिसे हमने स्वीकारा है।

मैं समझता हूं तथा पूर्ण आशावादी हूँ कि यह प्रयास सफल होगा, कृषक हितैशी होगा तथा उद्देश्य परक होगा।

डॉ. डी कुमार
पूर्व प्रधान वैज्ञानिक
आईसीएआर—काजरी, जोधपुर

कृषक

नमस्ते कृषक, नमस्ते भारत

सभी कृषकों को, प्यारे देशवासियों को नमस्ते,
मैं, महान, कृषि प्रधान देश का रहने वाला हूँ,
मैं उस भारत देश का रहने वाला हूँ,
जिसने हरित व श्वेत कृषि क्रांतियों से
इन्द्रधनुष व पीली राष्ट्रीय क्रान्तियों से
संसार के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत को
आज तक कायम रखा, तंदुरूस्त रखा है
भारत का प्रजातंत्र आज तक जीवित रखा है
कृषि के सफल उत्पादनों की ही वजह से
रोटी कपड़ा मकान उपलब्ध हो पाये हैं
कृषक अशांत, आंदोलित सड़कों पर आज,
लगता, अब कृषि अनुसंधान विकास की दिशा
बदली सी है किसानों के हित की नहीं संभवतः
लगता है वैज्ञानिकों व अनुसंधान संस्थाओं
के हित की ओर यह झुक अधिक रही है
हक नहीं तो, मौत के प्यारे हो जाते कृषक
मैं, उस महान राष्ट्र में रहता आ रहा हूं जहां,
उनकी दुर्दशा कंगाली, हादसों के आंकड़े,
दिल को झकझोरने रुला देने वाले हैं
कृषि का नाम लेना अब फैशन बन गया है
कृषि नया नारा है, उभरते सामाजिक सितारों का
नये राजनेताओं की राजनीति की सीढ़ी बनी कृषि
कृषि प्रधान देश में, कृषि नीति स्पष्ट सी नहीं लगती।
महान भारत के 75वें अमृतमहोत्सव को मेरी नमस्ते।

हे कृषक, हे अन्नदाता, हे धरती पुत्र, हे श्रमवीर, हे दरिद्रनारायण,
शांति, शक्ति, सहनशीलता से लबालब, अनुशासित राष्ट्र प्रेमी हो तुम
जिस्म को तपाने वाले, घाटे का व्यापार करने वाले, तुम प्रेरणा मेरी
खर्चे बढ़ते, आय घटती प्रतिदिन, बिन हक मांगे, मृत्यु चुनने वालो
कैसे लिखुं, कैसे बखान करुं व्यथा तुम्हारी, सर्वप्रथम, तुम्हें प्रणाम करुं
नंगे पैर रहते, दबाते चले, पैरों से काँटों, कंकरों को, सर्प बिच्छूओं को,
बिवाई गहराती जाती, ठोकर लगती, रक्त बहता, ना पट्टी मिली
ना मिले जूते, सहानुभूति मिली पसीने की, पानी मिला घाव धोने
उगाने धान, कपास, त्याग नीम छाया, निकले जून की, प्रचंड गर्मी में
शरीर अर्द्धनंगा, पानी में दिन भर खड़े रहना, प्रकृति से मुकाबला है
रंग बदला जिस्म का, होठ सूखे, गिरे खा चक्कर, गर्मी तीखी ऐसी
शहरी, नौकरी पेशे वाले, अमीरगण, करवट बदलते ए.सी. में भी
देने कपड़ा चावल हमें, खड़े खेत में, मशीनी मानव, तुम्हें मेरा सलाम
जनवरी माह, देना पानी गेहूं में, बिजली आती अंधेरी रात ही में
बर्फ गिर रही, दिखाई देता नहीं, शरीर साथ नहीं, फावड़ा उठता नहीं
हुई भोर सुहानी, आई चाय गर्म, घर से, पर मर चुका था पिता, ठंड से
ऐसा होता हादसा, ठंड बन जाती मौत का फंदा, अपने ही खेत में
मरा कृषक, समाचार नहीं, सवेंदना नहीं, सरकारी सहायता नहीं
बटोरने दाने खलिहान से, भूख प्यास से दिन पूरा बीत जाता उनका
मरता किसान खेत—खलिहान में, बेटा मरता खा गोली सीमा पर
व्यथा कर्मवीर की, लिखी, विधाता ने तोड़ कलम अंधेरे में
दुःख में, खेत में, हालात के बोझ तले दबे, अन्नदाता को नमस्कार
ले चले, जैसे तैसे, पसीने की दौलत को, बेचने बाजार मंडी में
मिलेगा दाम कितना, करना होगा इंतजार कितना, असमंजस भारी
मिला दाम, लागत से भी कम, की नहीं उफ, इस धरती पुत्र ने
इसी सज्जनता, सरलता, सहजता, अनुशासन को मेरा प्रणाम

दम तोड़ता, मरता, दरिद्रनारायण, पूछ गया एक प्रश्न
कहां गए, चौधरी चरण सिंह जैसे किसान हितैषी मानव?
कहां गए लोकनायक जैसे, महामानव जयप्रकाश नारायण जी?
अब हैं कहां, भूदानी बाबा, धरती प्रेमी, विनोबा भावे जी,
क्या, अब भारत खाली हुआ, हमारे लिए, संवेदनशीलता के लिए

किसानों की आस हूँ मैं, उनकी परेशानी का पैमाना हूँ मैं
उनकी मेहनत का पसीना हूँ, चिंता की लकीर हूँ मैं
कृषकों की अनगनित आत्महत्याओं का साक्षी हूँ मैं
मैं एक कृषि वैज्ञानिक, अब एक युवा कृषक बन जाऊँ
उनके परिवार का सदस्य बन, खेत खलिहान में रहने लगूँ
जान हाले कमजोरी, दलदल से निकलने की बात बता दूँ
खेती का हल, खेती से, निकालने की बारीकियाँ समझा दूं
अब किसी की ओर नहीं, स्वयं की ओर ही झांके
खेती को व्यापार मानें, कुटीर उद्योग मान खेती प्रारम्भ करें
पशु आधारित खेती से, खेती की हानि का बीमा करा लें
कृषि–वानिकी, कृषि–बागवानी से, निरंतर वर्षभर आय पाते रहें
कृषि मशीनरी उपयोग से, खेती के आदानों की लागत घटाएं
कर भूमि पर चिंतन, भौतिक, रासायनिक, रचना संरचना सुधारें
फसल चक्र में कर दलहन शामिल, भूमि का जैविक स्वास्थ्य सुधारें
आज संग कल की सोचें, अपनी ही नहीं बच्चों की भी सोचें
जल्दी पकने वाली, सूखा–रोधी किस्में उगाएं, जल बचायें
जैविक संसाधनों का प्रयोग करें, पर्यावरण बचाएं, मृदा बचाएं
कर्जा नहीं, आत्महत्या नहीं, ज्ञान व मेहनत की आहुति दिया करें
भूदानी हैं, लोकनायक हैं आप, त्याग की, ना कभी तिजांजलि दें
भारतीय किसान हो, त्याग की मिशाल हो, ना अपवाद बनो
सारा जहाँ तुम्हारा, भारत सहित, पूरे भूमंडल की भूख मिटाओ
कृषि वैज्ञानिक, भारतीय किसान, संग–संग मिल चला करें
धोने घाव किसानों के, रहने साथ किसानों के, मैं किसान बन जाऊँ।

बीसवीं सदी के भारतीय कृषक

महान् राष्ट्र का छोटा कृषक, भारतीय कृषक होने का गर्व मुझे,
गरीब आत्माओं का वास मुझ में, ग्रामीण लघु रोजगार का स्त्रोत मैं,
कृषि की आर्थिक स्थिति, भारत की खुशहाली का हरकारा मैं,
प्राचीन भारत हूं, पहचानो, अपनाओ मुझे, भारत कल्याण वास्ते।
मैंने कृषि क्रान्तियों से, कृषि वैज्ञानिकों का, स्वाभिमान बढ़ाया,
देश में रोटी कपड़ा की उपलब्धता से, अमन, चमन, समृद्धि छाई,
चेहरे खिले, भारतीयों की, मृत्यु दर को झटका लगा,
सब कुछ हुआ, हिंसा मिटी, अहिंसा का राम—राज्य आया।
जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, का नारा मिला,
मैं खुश था, मेरा भारत खुश था, खुशहाली थी समाज में,
इसकी चर्चा थी, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर, भारत का नाम था,
हम बच गए भुखमरी से, नाज़ियों से, नक्सलवादियों से।
मैं राजनीति दलों की विचारधारा बना, तरक्की की राह बना,
उनकी राजनीतिक की सहज सीढ़ी बने, हम कृषक गण
मेरी गूंज गली, गलियारों, गांवों से विधानसभाओं तक थी,
मेरा नाम लेना, आदर्श बन गया, इज्जत बनी कृषकों की।
मेरा नाम इतना चला, कॉलेज बने, विश्वविद्यालय बने, कृषक द्वार बने,
कृषक मंच बने, पंथ बने, संगठन बने, राजनीतिक दल भी बने,
कृषक लॉबी बनी, कृषक प्रधानमंत्री बने, किसान घाट बने,
कृषि नीति थी समय की पुकार, इज्जत बनी कृषकों की।
धन्य भारत, धन्य मेरे भारतीयों, बिठाया हमें आपने अपने कंधो पर,
मान आदर्श, भारत का भाग्य, बिठाया हमें, 20वीं सदी तक पलकों पर।

इक्कीसवीं सदी के भारतीय कृषक

भारत ने जब 21वीं सदी में प्रवेश किया,
तो कृषि की मशाल धीमी हो बुझने सी लगी।
अब हरित क्रान्ति की लौ टिमटिमाने लगी,
मशाल में तेल नहीं, पकड़ने वाले हाथ नहीं।
तूफानों के रहमो करमों पर पहुंची हरित लौ,
हमारा गौरव संकट में, वर्षा कम, जलस्तर घट रहा।
भूमि बंजर बन रहीं, फसल उत्पादन घट रहा,
मैं कृषक दाल, सब्जियाँ खरीदता अब स्वप्नों में।
चीनी, आटा, प्याज खरीद, पहुंच से किलोमीटर दूर,
मेरा उत्पाद सस्ता, खरीद की क्षमता में नहीं।
परिवार में हंसी नहीं, पारिवारिक शिक्षा भी गई,
भारी कर्जा मेरे सामने मेरी मातृ भूमि बिक रही।
जय राजनीति, जय विदेश, जय ऊँची इमारतें,
कृषक खेती छोड़, शहर की ओर, देखो अंधी दौड़।
झारखंड, छत्तीसगढ़, बुंदेलखंड, विदर्भ, अंन्नतपुर के कृषक,
दु:ख देखा न जाये, रात हमारी अब कटती ही नहीं।
दिन में अंधेरा, जीवन का प्रकाश बैंकों में,
बच्चे कृषक परिवार में शादी करते नहीं।
कुछ कृषक नक्सली बने, कुछ तैयारी में हैं,
हजारों ने आत्महत्या का कठोर रास्ता अपनाया।
बाकी तैयार हैं, कुछ भी कर गुजरने यहाँ पर,
क्यूं लगा आत्महत्या करने वालों का, यहाँ पर।
भारतीय कृषक बिके नहीं पर टूट रहे एक एक,
हरित क्रांति से मृत क्रान्ति तक आ पहुंचे किसान।
मैं इतना टूट चुका हूँ, कल देख ना पाऊं,
बच्चों ने भूख को अपनाया, खाना ही छोड़ दिया।
मैं शहीद हो रहा हूँ, सीमा पर नहीं खलिहान में,
कुछ नहीं मिला, पेपर में जगह मिले शायद कल।

क्यू मैं खड़े कृषकों की जय, कृषकों की आहुती की जय।
राजनीति से आस नहीं, कहाँ हैं शिक्षाविद्, समाज सेवक ?
पूर्वी सांस्कृति दब गई पश्चिमी चमक के सामने,
उत्तर, दे देना, जिंदा कृषकों को, बंद लिफाफे में
दे देंगे 2—4 दिन बाद, ऊपर ही आना हैं सम्भवतः उन्हें।

मैं फक्कड़, घुम्मकड़, सब के द्वार घूमता, फकीर हूं,
मैं सदा कच्ची, झोपड़—पट्टी में ही रहा करता हूं,
आलीशान महलों से आखिर मेरा क्या वास्ता ?

मैं धरा का अमूल्य, अन्तिम धरोहर कुंदन हूं,
मेरा अंग—अंग परोपकारी से जुड़ा रहता है,
मेरा पराये धन, बेइमानी से क्या वास्ता ?

मैं भारत का एक दरिद्र कृषक मजदूर हूँ,
मैं अपनी मंजिल तक पैदल ही जाता हूँ,
मेरा किसी मोटर—साइकिल से क्या वास्ता ?

मैं अपने गरीब समाज के लिये ही जन्मा हूँ,
मैं अपने समाज का अभिन्न अंग बन चुका हूँ,
मैंने शहंशाह, सम्राट, बादशाह देखें नहीं हैं।

मुझे परवरदिगार ने शांति दूत बनाकर भेजा है
मुझे भारी परिश्रम व दान देने के लिए भेजा है,
मेरा जहान की चमक—दमक, धन—दौलत से वास्ता क्या ?

मैं भारत का सर्वसाधारण, सामान्य नागरिक हूँ,
पुराने जमाने की धोती कुर्त्ता ही पहना करता हूँ,
मेरा सूट—बूट—पेंट से दूर तक भी वास्ता नहीं

मैं संसार में एक अज्ञानी बन कर आया हूँ,
मैं सदां ज्ञान की शरण में रहा करता हूँ,
मेरा उठा—पटक, छीना—झपटी से वास्ता नहीं।

मैं कृषक हूँ, अपने हक व अधिकार नहीं जानता,
भोजन मिलता खा लेता, नहीं तो भूखे सो जाता,
शांति का पुजारी, हुडदंग नहीं, त्याग तप जानता हूँ।

किसान मेरी नज़र में

एक—एक कोशिका, झुलस जाती, अंगार उगलती गर्मी में,
सिहर—सिहर, जम जाते जो, सियाचिन जैसी सर्दी में,
बगियाँ के हर मासूम को, रक्त से परवरिश किया करते,
सर्प बिच्छुओं बीच बाग उगाते, बिन भाव फल तोड़े जाते,
एक चपरासी से भी कम, पगार, जिन्हें मिला करती,
आजाद भारत में भी जो, औरों पर ही, आश्रित रहा करते,
इन फटे—फूटे भाग्य वालों को, भारतीय किसान कहा जाता,
इन राष्ट्रीय अन्नदाताओं को अनपढ़—गंवार, ग्रामीण कहा जाता।
पर, इनकी अब सुने कौन, मरहम आखिर लगाए कौन?
राजनीति राष्ट्रीय स्तर तक होती, फांसी लगाने से रोके कौन?
एक दूजे के हो जाओ, दुःख अपना, आपस में बांट लो
अब खुद ही चोट, खुद ही मरहम—पट्टी बन जाओ।
भाईयों, दर्द सहना भूल जाओ, दर्द देना भी सीख लो,
बहुत सहा, इंतजार किया, अब स्वयम् खड़े हो जाओ,
ज्ञान की आराधना करो, कृषि ज्ञान—विज्ञान अपना लो,
कृषि को व्यापार मान, विविधता अपना, कुछ नया कर लो।
कृषि को भाग्य पर ना छोड़ो, ज्ञान से इसे जोड़ दो,
सीख लो अब ठोकरों से, सीख लो अब अनुभव से,
करना है विशेष, हानि नहीं, लाभ कमाना है, ठान लो,
मृदा को माँ, फसलों—पौधों को, अपने बच्चे मान लो।

आय घट रही, लागत बढ़ रही कृषि उत्पाद स्थिर नहीं,
चुनौतियाँ नई, अनेक, हल आसान नहीं, फिर करें क्या?
अपने ज्ञान से, अपने अनुभव से, ज्ञान से,
करें पारिवारिक खेती, जुटे सारा परिवार, होगा लाभ।
है पानी उपलब्ध, खेती शहर समीप, तो उगायें सब्जियाँ,
खेती बरानी, दूरस्थ, लगाएं वृक्ष फलदार, दलहन वानकी,
उगाएं वृक्षों बीच, स्थानीय दलहन तिलहन पकें 60–65 दिन,
होगी आय निश्चित, स्थिर, सुधरेगी भूमि, बदलेगा वातावरण।
अपनाएं विविधता :किस्मों, वृक्षों, फसलों, बुवाई समय की,
हर हाल में गाय आधारित खेती अपना लो अपने फार्म पर,
गोबर, मूत्र, घी, मावा; कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट बेचें,
स्थानिय व बहुवर्षीय घास लगाएं, बहुपयोगी वृक्ष लगाएं।
सुधारें भूमि कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, हरी खाद प्राकृतिक खनिजों से,
तंदुरूस्त भूमि, तंदुरूस्त पौधे, तंदुरूस्त उत्पाद होंगे तंदुरूस्त हम।
गाँव स्तर पर, बीज खाद, उर्वरकों, कीटनाशकों की दुकान चलाएं,
खोले गांव में ई–मित्र, मोबाईल रिचार्ज, रिपेयर की दुकान चलाएं,
छोटे फसल काटने, गहाने, निराई करने वाले यंत्र किराये पर दें।
एक सदस्य, परिवार से, फौज में जाए, ट्यूसन दे गांव में दूजा,
कुटीर उद्योग, प्रशिक्षण केन्द्र, ज्ञान केन्द्र की व्यवस्था करें,
करें तैयार गाँव में नर्सरी सुन्दर पौधों की गमलों की,
गरीब मानव, पंचर, गाड़ी रिपेयर करें, कोरियर कार्य करें,
शिक्षा का उद्योग, सूचना का उद्योग बनायें गाँव में,
ईंट, सीमेन्ट, लोहा, बजरी केन्द्र, कला–कौशल केन्द्र बनाएं,
बना कृषि पर्यटन, जैविक हाट लगा, लाभ कमाएं गाँव में,
सामूहिक, सामाजिक, सजग, सशक्त, सुदृढ़ आंदोलन चलाएं गाँवों में।

आप भारतीय किसान विशेष

किसान भाईयों विशेष नागरिक जन ही नहीं आप,
आज के भारत की खुशहाली का पैमाना हैं आप।
सुख और शांति की एक झलक भी हैं आप,
आज का युवा ओज़ भरा भारत ही नहीं आप,
कल के उभरते भारत की तस्वीर भी हैं आप।
श्रद्धा व श्रम की पहचान ही नहीं कृषक आप,
भारत की तरक्की के द्वार भी हैं आप,
भारत की प्राचीन सांस्कृति की धरोहर हैं आप।
हमारे प्राचीन भारत के दीदार भी हैं आप,
राजनेता सरकार चलाते, प्रजातंत्र आप चलाते।
रोटी—कपड़ा उपलब्ध करा प्रजातंत्र मजबूत कराते,
भारी त्रस्त फिर भी कठोर राष्ट्रवादी हैं आप।
बीमार भारत के हर मर्ज की दवा कृषक आप,
पा जन्म भारत में, हैं धन्य भारतीय कृषक आप।
धन्य समझूं मैं स्वयं को, हूं कृषि वैज्ञानिक,
प्रिय किसान भाईयों आप इंसान ही नहीं हैं,
इंसानों से तो कहीं बेहद ऊपर हैं आप,
एक जिम्मेदार, नागरिक माने जाते आप,
होना भारत का कृषि वैज्ञानिक, भाग्य मेरा,
होना भारत का किसान, सौभाग्य आपका।

कृषक की आवश्यकताएँ होती नाम मात्र

गरीब किसानों की आवश्यकताऐं लगभग होती नहीं,
स्वस्थ किसान हर चुनौती को ध्वस्त करते रहते,
व्यायाम करने, व्यायामशाला वो कभी जाते ही नहीं,
खेत खलिहान, उनकी रोज़ व्यायामशाला बन जातीं।
नंगे पैर, कुर्त्ता, धोती, कम्बल, बना देते उन्हें लाल बहादुर,
होटल, रेस्टोरेन्ट, माल में, खाना खाने का विचार नहीं,
शुद्ध दूध, दही, घी, सब्जियां, दाल उन्हें बेहद भाते,
स्वास्थ्य संबंधी डाक्टर के व्यय निम्न हुआ करते।
शुद्ध शाकाहारी भोजन, कर्म, व्यायाम से तपते रहने से,
फालतू वसा, कोलेस्ट्रोल, शर्करा, मोटापा फटकते नहीं।
स्कटूर, कार में फालतू ईंधन कभी भरवाते ही नहीं,
पैदल, साईकिल चला, मंजिल पर प्रतिदिन पहुंचा करते।
लम्बा, सुखमय, स्वस्थ्य जीवन, जीते 80 वर्ष तक,
अन्त समय तक भी, चलते फिरते कर्म करते ही रहते,
कृषक जीवन में, कभी खाट पकड़ते ही नहीं।
पेय पदार्थ, शराब, सिगार, अफीम से सरोकार नहीं,
गरीब किसान, बीड़ी—हुक्का से आगे बढ़ते नहीं,
नीचे बैठ, कच्चे बर्तनों में, पत्तों पर भोजन करते।
गरीब, असहाय किसान, इतना आगे निकल चुके,
शहरी, दौलत वाले, उनके पीछे चलना चाहते।
शांति प्रिय तनाव रहित, लम्बा स्वस्थ जीवन जीते,
मृत्यु तक को भी ये गरीब किसान कभी भी,
बीमारी का लम्बा इंतजार कराते तक नहीं,
बस चलते फिरते, बिना बैठे, मृत्यु के हो जाते।

मौसम की बेरुखी से सीखें किसान

आयें आज बात करें, बदलते कृषि वातावरण की बात साझा करें,
वर्ष 2021, 2022 की वर्षों ने बताया, कृषि वातावरण बदलता रहता,
वर्ष 2021 में, अंकुरण बाद 40—50 दिन वर्षा का अकाल,
अंकुरण ढंग से हुआ तक नहीं, फसल की वृद्धि हो नहीं पाई,
फल, फलियाँ आने से, फसल कटने तक रही वर्षा ही वर्षा,
अधिकता संग, कमी जल की, फसल में, बताती जल तनाव,
थी जलप्रलय, डूब गईं, भीग गईं फसलें कटते—कटते।
वर्ष 2022 का मौसम था बिल्कुल उल्टा, 2021 से,
हुई वर्षा प्रारम्भ 15—20 जून को, होती रही, 25 अगस्त तक,
भारी नमी से, उगा एक—एक दाना, हुई पौधों की संख्या अधिक,
बिछी चटाई, मूंग, मोठ, ग्वार, सोयाबीन में, स्थान खाली नहीं,
हुई खरपतवारों की भरमार, फसल बीच, खेत बाहर हर जगह,
लगे भारी कीट रस चूंसने वाले, हुए पौधे दुर्बल, पीले, पतले,
रहीं अधिक, जीवाणु बीमारियां, कवक बीमारियों की भरमार।
कृषक करते रसायन छिड़काव, रोकने, कीट, खरपतवार,
मौसम दे रहा बढ़ावा, हुआ नहीं प्रभाव, गया रसायन भूमि में।
समा गया, बह गया पानी, ले पोषक तत्व, आएगा नहीं, काम,
पड़ने लगा सूखा 50 दिन बाद, बढ़ा तापक्रम, सूखने लगे पौधे,
पौधे लंबे, घने, बढ़ी पानी की आवश्यकता, काफी अधिक,
हुई फसल दोबारा मुखातिब पानी की समस्या से भारी वर्षा बाद।
निकालें हर तीसरी पंक्ति, हो जाएगी संख्या कम, बचेगी फसल,
करें गहरी गुड़ाई, निकालें पूरी घास, साफ करें आसपास क्षेत्र,
करें छिड़काव मारने सफेद मक्खियां, दूर करने अंगमारी, छाछियां,
बोई फसल 3—5 अगस्त बची प्राकृतिक विभीषिकाओं, विपत्तियों से।
मौसम दोनों वर्ष के, सिखाते हमें, एक ज्ञान अहम अपनाएं हम,
समझ लीजिए, गांठ बांध लीजिए, प्रकृति नहीं साथ हमारे,
कृषि तंत्र विविधता, भूमि की सक्षमता, छोटे पशु, करेंगे बेड़ा पार।

हम बहुसंख्यक गरीब कृषक, गरीबी में ही रहते, फलते—फूलते आये,
अल्पसंख्यक धन्नासेठों, व उनकी धन्नासेठी से हमें लेना—देना क्या?
धरती संग, खेलते, मुस्कुराते, लड़ते रहे, कभी ना गिरे, जीवन भर,
धरती से उड़ते, धरती पर ना टिकते, तो रोज गिरा करते हम।
ऊंची वातानुकूलित इमारतों, लम्बी कारों से, हमारा वास्ता क्या,
रह धरती पर, धरती की धूल—धूप से ही है, नाता अडिग हमारा।
शांत हैं, साधारण हैं, अनुशासित हैं, कभी ना अविचलित होते हम
साधारण मिट्टी से जुड़े हम, मिट्टी में सदा ही, सने रहते हैं हम,
सादगी से बने, सादा जीवन ही, बिताना चाहते हैं हम,
बन आम, आमजनों की, भीड़ में रहते, आए हैं हम,
बने आमजनों के लिए, करते धरते आमजनों के लिए हम,
विशिष्ट व्यक्ति बन, अकेले, समाज से दूर रहते नहीं हम।
तोड़ समाज, समाज से दूर, अलग—थलग रहना प्रवृत्ति नहीं,
संतुष्ट रहते सदां, सचेत रह, सोचा करते औरों के लिए हम।
भारतीय समाज तंत्र को, खाद्यान्न उपलब्ध कराने जन्मे हम,
कुछ मिलें ना मिलें, समाज दे, ना दे, देते रहेंगे सदां हम,
कृषक तपस्वी हम, झुलसते रहेंगे, भारत की सोचते रहेंगे हम,
आनंद, उल्लास, उत्सव को स्थान नहीं हमारे कर्म कलैण्डर में,
खेत आना, जाना प्रतिदिन, भूमि को खाद्यान्न का उद्योग बनाना,
है कलैण्डर विशेष वर्ष भर का, जीवन भर का ऐसा हमारा।
ऐसी जड़ें जमाई हमने, उड़े कहीं, दिशाहीन होते नहीं हम,
जाएं किसी दिशा, उड़ें आकाश, लौट आते धरती, शाम तक हम।

नहीं कुछ, वहीं सब कुछ

पास नहीं जिन के कुछ होता, पास उन्हीं के सब कुछ होता,
दौलत वाला दौलत से, महान साहूकार धनाढ्य होता,
गरीब बिन दौलत के, महान हो, महान दानदाता होता,
जिन्हें जाना जाता अकसर बेकार, कारवान हुआ करते।
कृषक भी ऐसा ही होता, दरिद्रनारायण हो कर भी दान देता,
मेहनत का पसीना दान दे, खाद्यान्न से राष्ट्र निर्माण करता।
राष्ट्र भक्ति बहती किसान के रक्त में, अनुशासन होता कर्मों में,
राष्ट्रीय समर्पण भाव समाया, कृषक की जीन के डीएनए में,
त्याग, कर्मठता से लदे कृषक, राष्ट्रीय मजबूती के संकेत होते।
अनिश्चितता के अत्याचार, भूखे वातावरण से सदां लड़ते किसान,
किसान जानते राष्ट्रीय आपदा, अव्यवस्था के घातक परिणामों को,
सांसारिक सुख, आनंद को, अपनी दरिद्रता की कसौटी से तोल लेते,
अपने शांत, सहनशील, स्वभाव से विविधता में एकता पिरोए रखते,
राष्ट्रीय आपदा विपदा में, असाधारण व्यवहार से, राष्ट्रीय समाचार बनते।
खौफनाक मंजर का, अंतहीन अंधियारों का सामना करता किसान,
सुनामी को पीछे धकेलता, ज्वालामुखी के लावे में चलता किसान।
कष्ट समाज का, आह किसान को, हर मर्ज की दवा किसान,
कुछ नहीं कृषक के पास, तभी तो सबकुछ है, पास किसान के।
छिपी दैविक शक्ति कृषक में, प्रकट होती सर्व—समाज कल्याण में,
मिलती शक्ति प्राकृतिक घटकों से, प्रकृति संग रहने, ऐसे विचारों से,
प्रकृति हारती, थकती नहीं, रहे जो प्रकृति संग, बन उभरे प्राकृतिक मशीन।

गाँव

मेरा गाँव मेरा मान

छोटा, सुंदर, सुसज्जित, दो नहरों बीच बसा गाँव मेरा, 'भरना',
चार सड़कों के संगम का हार पहन, यातायात का आकर्षण बना।
खुशहाली की हरियाली ओढ़े है, बसंती का चोला पहने है,
राष्ट्र का आकर्षण बन, तरक्की की मिसाल बना है गाँव मेरा।
मेहनतकश किसान मजदूरों की व्यायामशाला, मेहनत की चर्चा यहां,
नाकाराओं से नफरत, कर्म की ज्योति जलती मेरे गांव में।
आम, जामुन, अमरुदों की बहार खींचे खेतों—खलिहानों की ओर,
सघन छाया नीम की, लगे आई बहार सावन की जेठ में।
पक्षियों की कौतुहल भरी आवाज़, प्रेरित करें कर्म की ओर,
बच्चे दौड़ें पक्षियों की ओर, खेलें साथ, हर्षित होते जन—जन।
हल कंधे पर लिए, हलधर बने, बैलों की जोड़ी संग चले किसान,
पहुंचे खेत किसान, सीना फाड़ धरती का, कृषि उत्पाद खोजते।
धन्य, जन्मा हूँ, इस गाँव में, शीश झुकाऊं, सुख, दु:ख में,
नंगे पैर, अंग पूरा ढका नहीं, खाली पेट, किसान खेतशाला चले,
चिन्ता नहीं, तनाव नहीं, अन्न का उद्योग लगाने अन्नदाता चले।
मन में भारत का भाव लिए, लोक कल्याण का गीत गाते किसान चले,
गर्मी ठंड का डर कहां, भाई मेरे काम पूरे किए बिना, लौटते नहीं।
देश की हर राह में अग्रसर, अन्नदाता रहने की चाह में गांव वाले,
मेहनत रक्त बन टपके, पसीने की जलधारा ले खेत पहुँचे गाँव वाले।
फसल की हरियाली सब निहारें, अन्दर छिपे रक्त के आंसू ना जाने।
अन्न, दाल का सारा उत्पाद लिए, परिवार को भूल, मंडी चल निकले,
मेहनत को बेचने, देश की मंहगाई से लड़ने, मेरे गाँव के किसान चले।

मेरा गाँव मेरा देश

हरित व सफेद क्रान्ति की पावन सुगंध बहती मेरे गाँव में,
दूध, दही, की कमी नहीं, प्रचुरता की बात चले मेरे गाँव में।
बचपन हंसता घर आंगन में, कर खुश, एक रखता गाँव को,
वृद्ध पूजनीय, राह दिखाएं, हौंसला बढ़ाएं, आदर्श बन, चलें आगे।
सरस्वती पुजती, शिक्षा के द्वार खुले, सभी दौड़े आते भेदभाव बिना,
विद्यालय गाँव के सुख—दुख के केन्द्र, सभी शाम को आते चर्चा करते।
गाँव नहीं आदर्श है, प्राचीनता की झलक आज है यहां,
गाँव मेरा ईमानदारी, कर्म व विद्या का भव्य गांधीधाम बना हैं।
भारत की समस्याओं का हल यहां, बढ़ती महंगाई की चाबी यहां,
राष्ट्रवाद की सड़क शुरु यहां से, मानवता की मीनार खड़ी यहां।
प्रकृति का भव्य सौहार्द्र है, सम्पूर्ण प्रकृति उतर आई है यहां,
राम और कृष्ण की तस्वीर है हर गली, मुहल्ले, घर में।
गौतम और लाल बहादुर की सादगी अहिंसा, समाई जन जन में,
गाँव नहीं एक संग्रहालय है, प्राचीन भारत की संस्कृति का।
21 वीं सदी का द्वार है, उन्नति का रोड़मैप है गाँव मेरा,
गाँव मेरा एक धरोहर है, बेमिसाल, अजूबा है नए भारत का।
आओ आमजन, मेरे गाँव के दर्शन कर धन्य हो जाओ,
प्रत्येक 1 जनवरी को, मेरे गाँव के दर्शन किया करो।

गाँवों में वो बातें अब कहाँ ?

समय बदला, गाँव बदले, गाँव की फ़िजां भी बदली,
ग्रामीण बदले, रास्ते बदले, रिवाज व रिश्ते भी बदले,
गाँवों का वैश्वीकरण हुआ, अतीत का शहरीकरण हुआ,
पारिवारिक संस्कृति किनारे लगी, व्यक्तिवाद उदय हुआ।
सामाजिक चौपालें लगती नहीं, पड़ौसियों से सरोकार नहीं,
ग्रामीणों में आपसी प्यार नहीं, बुजुर्गों का अब सम्मान नहीं,
अपना कुछ बचा नहीं, बदलाव से विशेष कुछ मिला नहीं,
गाँव शहर बने नहीं, उनका मौलिक रुप रहा ही नहीं।
उपवनों की गहरी छाया, अब मई—जून की धूप बनी,
परिंदों की मोहक कौतूहल, अब अतीत की बात बनी,
नदियाँ के स्वच्छ जल में, अब मैं नहाने को बेहद तरसूं,
होली दीवावली के उल्लास, अब मैं सबसे पूछता फिरू।
खेतों खलिहानों में आकर्षण नहीं, फसलें सोना उगलती नहीं,
खेती से गहरा लगाव नहीं, उत्पाद की किसी को भूख ही नहीं,
रतियाँ इतनी सुहानी नहीं, दिन में मन लगता ही नहीं,
हरियाली का शासन नहीं, बसंत ऋतु अब आती नहीं।
कृषि भूमि की बोली लगने लगी, ऊँची इमारतें सजने लगीं,
पशुधन का मोल घटने लगा, मशीनरी से इज्जत बढ़ने लगी,
मानव संवाद समाप्त हुआ, तकनीकी संवाद, अब हावी हुआ,
गाँवों को पुस्तकों में खोजूँ, गाँव बीच, मैं गाँव को खोजता फिरुँ।

खेत बने अब पूरक एक दूजे के

गाँव—खेत बने अब, पूरक एक दूजे के, दुनिया भर में,
पूर्ण अधूरे एक दूजे बिन, अपवाद नहीं दुनिया भर में।
कृषि की आत्मा बसती गाँवों में, शरीर बसते खेतों में,
विचार बनते गाँवों में, पनपते खेतों और खलिहानों में।
कोमल फसलों की हरियाली, चहकती, नाचती खेतों में,
मुस्कुराते, पुष्प व फल, आकर्षण की गिरफ्त में ले लेते।
हरी पीली चादर बिछ जाती, आनंदित लहरें उमड़ आतीं,
रंग रंगीले कीट, भंवरे, मधुमक्खियाँ गुनाते गीत सुहाने।
हर मनवा, खिल उठता, प्रफुल्लित हो, हरसाने लग जाता,
मासूम फुदकने लगते, वृद्ध बच्चों संग दौड़ने फांदने लगते।
उमंग से भरे युवाजन, कर्म की गर्जना करने लग जाते,
कृषकों की मेहनत के ये फूल, समय पूर्व उत्सव ले आते।
बिन पीये, सामान्य कृषकगण, फसल का अमृतफल पी लेते,
खेतों की आदित्य चमक, झुकती, पीली पड़तीं, फसलें।
गली, कूचों, गाँव के कच्चे रास्तों में, सरगम बन गाते,
प्रसन्नता की धारा बहती, संतोष की धुन बजने लग जाती।
शीतल सुगंधित ठंडी वायु से, गांव वातानुकूलित बन जाते,
शारीरिक, मानसिक धारणाओं से लैस, कुरीतियाँ त्याग देते।
भुला तनाव, ग्रामवासी एक दूजे को, सुख बाँटने लग जाते,
खेतों की हरियाली, गाँवों की खुशहाली में, जब ढ़ल जाती।
परिकल्पना से परे, एक नये समर्थ भारत का उदय कर देती,
राष्ट्रीय जज़्बे का उदय हो जाता, जीने का उद्देश्य जाग जाता।

कैसे बदल गए अब गाँव

कच्चे रास्तों में उड़ते वो धूल के ठंडे ठंडे कण,
मुस्कुराहट—भरा खेलता बचपन, कहाँ खो गए।
संकरी नालियों में कल—कल करता जल—जीवन,
विदेशी पक्षियों के झुंड तालाबों से कहाँ चले गए।
खुले में विचरते, कूदते—फांदते मोर, हिरण, खरगोश,
पैदल ग्रामीणों से भरी सड़कें, सब इतिहास बन गए।
ऊँचे वृक्ष, गहराते उपवन, पुष्पों की अन्तहीन कतारें,
खेतों की बसंती, और हरियाली किसने चुरा ली।
ग्रामीण हाटें, पूजा स्थलों पर आस्था के हंसते मेले,
सब लुप्त हुए अभिमान व कुंठित जनों के हाथों में।
गांवों के लघु—उद्योग, ग्रामीण मेले, मिलना, जुलना,
पारिवारिक व्यवस्थाएं, सभी अब तहसनहस हो चुके।
अब तो अपना गाँव मुझे अपना नहीं पराया सा लगता,
रास्ते बदले, घर बदले, पूरा गाँव अब बैगाना सा लगता।
मेरे गाँवों में, अब गांधी पोषाक, गांधी विचार, गांधी टोपी,
गांधी रहन सहन, सभी बदले, सिर्फ तस्वीरें टंगी हैं कहीं।
गाँवों को नज़र लग गई, शहरों की चमकदार सांस्कृति की,
गाँवों के कुटीर उद्योग बिके, बड़े उद्योगों के लालच में।
लौटू गाँवों में फिर से, आभा लौटाने गाँव में फिर से,
गिरवी रखी सांस्कृति को, छुड़ा सौंप दूँ गाँवों को फिर से।
मैं कृषि वैज्ञानिक, युवा कृषक बन, गाँव की आभा बन जाऊं,
रह खेत, खलिहान, कृषकों संग, खेती को चमका दूँ मैं।

हमारे गाँवों का सामाजिक पतन

प्राचीन गाँवों की सघन सांस्कृति हो समाप्त,
अब समा गई है छोटे–छोटे अलग परिवारों में।
गाँव की मनोरंजन की महकती मुस्कुराती प्रवृत्ति,
अब सिमट कर रह गई टेलीविजन, मोबाइल में।
एक दूजे पर जान न्यौछावर कर, बचाने की प्रवृत्ति,
अब बदल, सिमट गई है, वीडियों के बनाने में।
गाँव के उमंग भरे, होली, दीवावली के उत्सव,
अब सिमट चले हैं व्यक्तिगत जन्मदिन मनाने में।
सार्वजनिक स्थान का मेल–मिलाप मुस्कुराता व्यवहार,
धूल चाटते, पकड़ा हाथ, अब शराब, अफीम, कोकीन ने
मेहमान किसी के, हुआ करते थे मेहमान, सारे गाँव के,
आव भगत समाप्त, किसी को पड़ोस की आवश्यकता नहीं।
उत्सव, शादी समारोह में, पूरे गाँव का जीमण धराशाही,
अकेले ही रहना, बुजुर्गों से दूरी, आई नई संस्कृति।
प्राचीन गांव थे स्वावलंबी, कुटीर उद्योग कृषि कर्मों में,
अब बढ़ई, लुहार, धोबी, कुम्हार, नाई, गाँव छोड़ चले।
ग्रामीण अनुशासन, बुजुर्गों की इज्जत, आशीर्वाद, थे चर्चित,
युवा सुनते नहीं, बुजुर्ग कहते नहीं, सामुदायिक अनुशासन नहीं।
ग्रामवासी अब कृषि छोड़, लघु उद्योग त्याग, शहर भागने लगे,
ग्रामीण शहरी बने नहीं, ग्रामीण रहे नहीं, बर्बादी का देखो सितम।

ऐसे होते भारत के गाँव

गाँव की उड़ती गर्म धूल को,
सदां ही प्राण वायु मानो तुम,
उपवनों की गहरी घनी शीतल छाया को,
वातानुकूलित छाया माना करो तुम।
भाइयों गांवों से दूर ना भागा करो तुम,
गांव में शिक्षा व्यापार किया करो तुम,
गांवों को भारत माना करो तुम,
भारत से प्यार किया करो तुम।
तनाव भगाना है यदि गांव में चलो,
स्वस्थ रहना है जीवन भर, गांव में रहो,
वर्तमान भारत खोजना है गांव चलो,
अपनी संस्कृति खोजनी है तो गांव चलो।
सदैव ही एक दूजे के लिए जहां,
आम इंसान जीते व मरते आये हैं,
उस जगह को गांव कहा करते हैं,
ऐसे गांव को धर्म स्थल बोला करते हैं।
बुजुर्गों को पूर्ण सम्मान मिलता जहां,
बच्चे सबके प्यारे होते हैं जहां,
ऐसी बस्ती को ही गांव कहते हैं,
ऐसे गांव को शांति स्थल कहते हैं।
भारतीय गांवों में बसती, रहती इंसानियत,
आओ गांव चलें, गांव की मुस्कान चूमने चलें।

पकड़ी ग्रामीणों ने उन्नति की राह

त्याग लंबी खामोशी, संतोष, इंतजार, ग्रामीण चले तरक्की की राह,
पकड़ी ग्रामीणों ने अब कृषि अनुसंधान, ज्ञान, विकास की सही राह।

देखते, सुनते, कृषि कार्यक्रम, पढ़ते पत्रिकाएं, जाते कृषि मेलों में,
सरकारी योजनाओं, बीमा क्लेम, बैंक कर्जा, सोलर का फायदा लेते।

भूमि परीक्षण, अच्छी किस्म, बीज उपचार, भूमि उपचार पर ध्यान देते,
वातावरण, जिंस उपलब्धता, बाजार भाव, आवक आधारित खेती करते।

जल व्यर्थ नहीं, रखते स्थितिनुसार पौध संख्या, बनाते भूमि को सशक्त,
अपना उचित फसल चक्र, विविधता, वातावरण दुष्प्रभाव को जीत लेते।

गांव में, स्वयं सहायता समूह, कृषक उत्पादक संघ, फैंसले सामूहिक होते,
रास्ते पक्के कराए, जल ठहराव नहीं, गंदगी से सभी ने हाथ जोड़ लिए।

बढ़ी उनकी आय, बने मकान पक्के, वाहनों की है अब भरमार,
वातावरण प्रेमी, लगाते वृक्ष घर, बाहर, पंचायत भवन, स्कूल प्रांगण।

खुले गांव में स्कूल, मानव, पशु अस्पताल, डाकघर, राशन की दुकान,
हर ग्रामीण बच्चे को भेज स्कूल, सरस्वती को पूजने लगे ग्रामीण।

ग्रामीण योजनाओं से, गांव सड़कों से, ग्रामीण यातायात से जुड़े,
खाद, बीज, उर्वरक, कीटनाशक, आवश्यक वस्तुएं गांव में मिलतीं।

सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएं खुली गांव में, उनकी पसंद बने गांव,
कृषि स्नातकोत्तर गांव में कृषि, नवचार, संचार क्रांति की अलख जगाते।

युवाओं में जोश, दौड़ रहे रात—दिन, अग्नि पथ का नया पैगाम लिखने,
बन रहे गांव लघु उद्योग, बन रहे स्वावलंबी, करें तुलना छोटे शहरों से।

आर्थिक स्थिति बदल रही, ग्रामीण क्रान्ति हो रही, कृषि टूरिज़म पनप रहे,
शांति, ताजगी, मौलिक भोजन पाने, शहरी सैलाब उमड़ रहा गांव।

गांव में ओलम्पिक खेल चल रहें, प्रतिभाएं निखर, प्रकट हो रहीं,
कर ना सकीं सरकार, समाज आज तक किया ग्रामीणों ने स्वयं।

त्यागी फिजूल खर्ची, त्यागा मृत्यु भोज, त्यागा जल्दी शादी ब्याह,
त्यागा नशाखोरी का व्यापार, बने ग्रामीण सशक्त सच्चे इन्सान।

कृषि सभ्यता

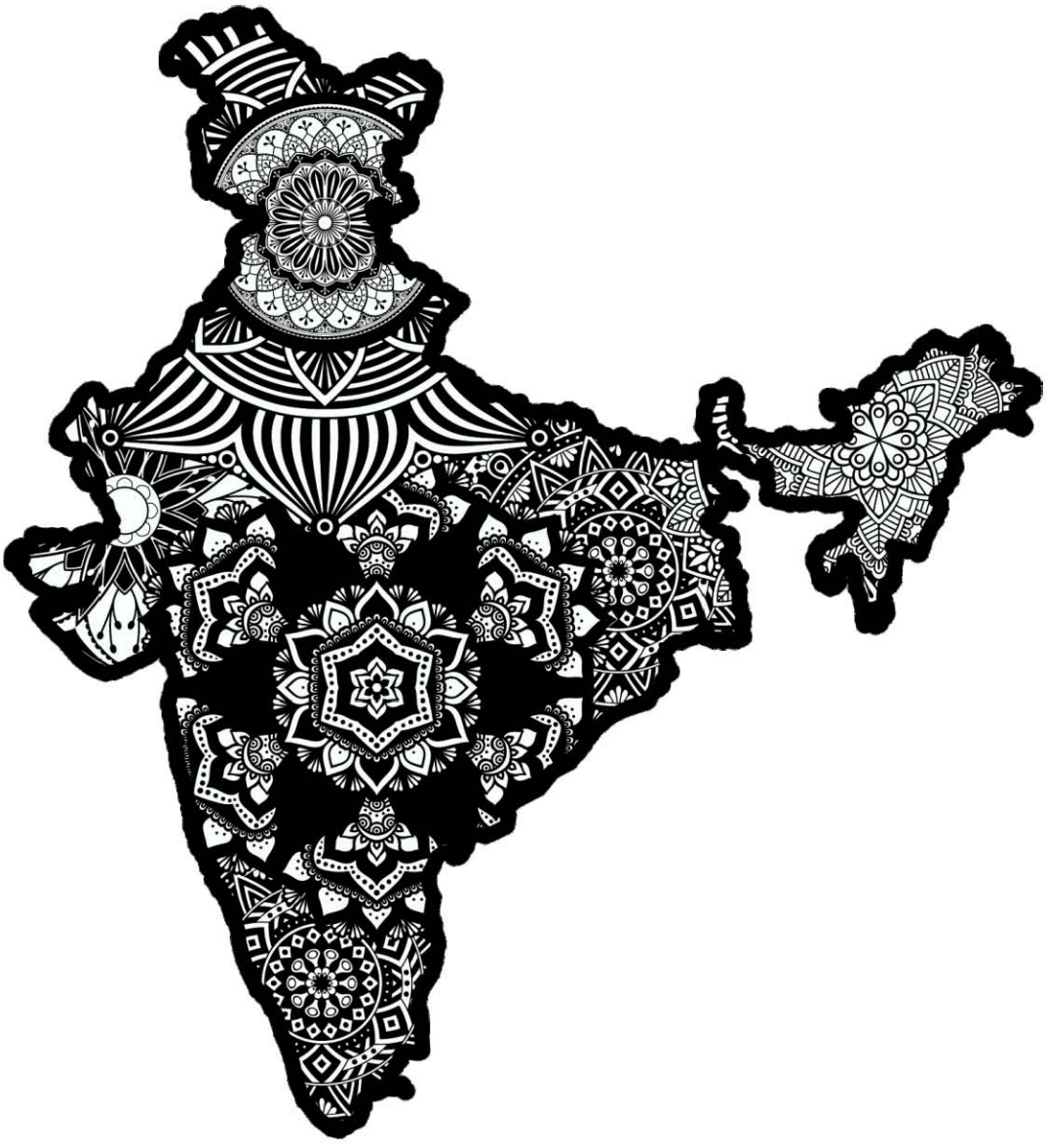

खेत का पूर्ण ज्ञान हैं कृषि, खेत बाहर कृषि नहीं,
कृषि समाई, खोई खेत में, बाहर कुछ भी तो नहीं,
अंदर, ऊपर, बाहर खेत के, जाने सब कुछ ढंग से,
पल पल, बदलती चुनौतियां कृषि की, रोज़ समझें,
धरातल नीचे कीट—कीटाणुओं, चीटियों को जानें,
दीमक, लट, कवक, सभी जीवित शत्रुओं को भी जानें,
खड़ी फसल खेत, प्राकृतिक विपदाओं को जान लें,
साथ देंगी, या खींचेगी टांग, कृषक की, फसल की,
खेत—खलिहान बाहर, आड़त—मंडी मिल लूटा करते,
पसीना निकालेंगे, चूसेंगे रक्त हमारा, यह ज्ञात नहीं,
पर, जोंक बन, चिपटेंगे, चूसेंगे रस, अवश्य हमारा,
खेत, घर, बाहर, प्राकृतिक आपदाओं की मार भारी,
गरजेंगे, चिंघाडेंगे, कर देंगे नेस्तनाबूत, ज्ञात नहीं,
खेतीहर आगे बढ़ते, विपदाएं पीछे खींचा करतीं टांग,
इसी जद्दोजहद की होली, होती रहती, जीवन पार,
जीवित, अजीवित कारकों संग, जंग चलती जीवन पार,
छींटे; रंग के, कीचड़ के, रक्त के होंगे, ज्ञान नहीं,
आपदाओं को जितना थकाएंगे, धकेलेंगे जीतेंगे हम,
नहीं धकेल सके, गुलाम बन जाएंगे, साहूकारों के हम,
सिलसिला थमा नहीं, शीघ्र गुलाम होंगे मौत के हम,
रक्त के आंसू भरी दास्तान है, भारतीय अन्नदाता की,
कृषि प्रधान हम, नीति नहीं लगती कारगर, हमारी कृषि की।

समाई भारतीय कृषि संस्कृति में

कृषि संग हुई उदय सांस्कृति, हुए उदय, उदार माता–पिता,
अतिथी बन गए, हमारी सांस्कृति में गुरु देव स्वरुप,
ना हुए अलग, बने रिश्ते सभी के, कृषि, संस्कृति से,
बने भारतीय, मातृ, पित्र, आचार्य, देव कृषि के ऋणी,
ले बोझ ऋण, भारतीय सांस्कृतिक मानव, रहते नहीं जीवित,
यह कृषि भारत की, उतारती, चलती ऋणों को लहरों समान,
समुद्र जल जैसे वाष्प बन, बादल में परिवर्तित होता, बिन भेद,
हो वर्षा में परिवर्तित, आ पृथ्वी पर, ऋण सब का उतार देता।
जल है महान, रखता चलायमान अभिन्न अंग हर जीवित प्राणी के
बने जीव, जल, जंगल, जलवायु, संस्कृति, सब परिवार के सदस्य,
हैं ब्रह्मांड के अटूट सदस्य, छिटकते नहीं, होते परिवर्तित सदा,
चले ना साथ, सम्पूर्णता के लिए, चुनौतीहीन बना रहेगा समय,
करती कामना कृषि संस्कृति, सर्व स्वास्थ्य, समुदाय, सुख, समृद्धि शांति की
हुआ सृजन ज्ञान का, मेल–मिलाप त्याग से, मिला प्रभु प्रसाद हमें,
प्रभु प्रसाद ने बनाया पशु, पक्षी, पत्थर, वृक्ष, नदी, वायु पूजक हमें,
पूजते तुलसी, बरगद, पीपल, मान जीवन दायिनी जैसे,
आवश्यकता, कृषि संस्कृति से उत्सर्जक ज्ञान से, बचाने मानवता को,
समाए भूमि पर 1 5 लाख कवक, 3 0 0 लाख कीट पंतगों की प्रजातियां,
होते करोड़ों सूक्ष्म जीव, एक ग्राम मिट्टी में, तभी है भूमि जीवित,
कृषि ज्ञान, सहजे संस्कृति को, लाखों सूक्ष्म जीवी प्राणीयों को,
सुधारते रहें, सृजित ज्ञान को भूमंडलीय कुटुम्ब वास्ते, फले संस्कृति,
भारतीय संस्कृति, कृषि बने पूरक, हैं स्त्रोत ऊर्जा के, एक दूजे के।

क्या है भारतीय कृषि ?

जोतना, खोदना, उगाना, पैदा करना, कृषि नहीं हैं भारत की,
व्यवहार, जीवन शैली, वंशानुगत स्तरों में, समाहित भारतीय कृषि,
प्राचीनता, सामाजिक ताना बाना, उन्नति की राह हैं, अंग कृषि के,
सरलता, सहजता, समानता, त्याग तप, परिश्रम में लिपटी कृषि,
मजबूती, जज़्बा, अर्थ, अनुशासन, जोश की कुंजी है भारतीय कृषि,
आपदा, विपदा, संकट, संकीर्णता, भुखमरी, भय से बचाती भारतीय कृषि,
जल, जमीन, जंगल, जन्तु, जलवायु, सबमें समाहित है भारतीय कृषि,
भारतीय दार्शनिक, जानते एक कल्चर नाम है, भारतीय एग्रीकल्चर,
राष्ट्र चैम्पियन कहलाते, कृषि समृद्ध होती, जिनके नीतिकार कृषक होते,
अकाल, भूचाल, महायुद्ध, सुनामी, सब हारे, कृषि की ढाल सामने,
कृषि व्यवसाय, हिंसक नहीं, मरहम लगाते, भूख प्यास के घाव पर,
फ़िजा बदली, कृषि बनी सीढ़ी राजनीति की, फैशन बना कृषि उच्चारण
कृषि में अवसर बहुत, संभावनाएं बहुत, चूंकि विविधताएं हैं यहां बेहद,
कुल 50 प्रतिशत भूमि पर खेती होती, सभी 15 जलवायु यहां,
40 प्रकार की भूमियां उपलब्ध, महत्वपूर्ण कृषि के क्षेत्र उपलबध यहां,
गंगा—यमुना क्षेत्र, पूर्वी तटीय क्षेत्र डेल्टा में, खेती होती 90 प्रतिशत,
हमारे प्राचीन ग्रंथों गीता, ऋग्वेद, वेदों में लिखी कृषि जानकारियां,
भारतीय कृषि 11,000 वर्ष पुरानी, मिलती जानकारी पशुपालन व फसल की,
भारतीय कृषि पहले से रही बहुआयामी सिद्धान्तों पर आधारित,
हैं महत्वपूर्ण एकीकरण, विविधता, मशीनरीकरण, गहनता, किराया पद्धति,
मूल्य संवर्द्धन मुद्दे, तभी कृषि है फायदेमंद हित सभी के साधती,
बोना काटना नहीं कृषि, चरित्र का चित्रण विचारों की गहराई है कृषि,
अनुसंधान, तकनीकियों का सही स्थान, समयानुसार क्रियान्वयन है कृषि।

भूमि कृषि की माँ, करें सेवा

जंगल, जमीन, धरती, भूमि, मृदा नाम दें कुछ भी इसे
ग्रामीणों की, कृषकों की मां, खेती की है व्यावसायिक माँ,
रखें समतल, सूक्ष्म जीवों को सुरक्षित, पोषक तत्वों से भरपूर,
रखें हल्की, रचना, संरचना उत्तम, जीवांषों से भरपूर,
रखें क्षारीय, खारेपन से परे, हो ना कभी जलभराव,
मां जैसी सेवा करें इसकी, रखें इसे गुणों से भरपूर,
रखें साफ, सुथरा, सुधारते रहें इसे हर वर्ष लगातार,
उन्नत तकनीकियों, तरीकों को पहचान, क्रियान्वित करें,
डाला करें प्राकृतिक आदान कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट प्रतिवर्ष,
ना भूलें रॉकफास्फेट, जिप्सम, चिकनी मिट्टी, आवश्यकतानुसार,
हरी खाद अहम, उगाएं, ढेंचा इसमें हर तीसरे वर्ष,
सनई, ग्वार, मूंग, मोठ, चवला भी आवश्यकतानुसार,
फसलों को ढकें, अपनाएं 4—5 वर्ष का फसल चक्र,
रंग होगा इसका बादामी, बनेगी भूमि दोमट, बादामी हवादार,
धारण क्षमता बढ़ेगी, जल रूकेगा, उर्वरक क्षमता बढ़ेगी,
सूक्ष्मजीवी बढ़ेंगे, पी.एच. होगी सामान्य, बढ़ेगी उर्वरता,
दलहन वृक्ष लगाएं चारों ओर, कीट मित्र वृक्ष लगाएं खेत बीच,
घास निकालें, अवशेष सड़ाएं, ग्रीष्मकालीन जुताई करते रहें,
भूमि बनेगी अनोखी, बनेगी दौलत की खान, उगलेगी सोना,
हरा आपदाओं, थका विषमताओं, ग्लोबल गर्मी को पिछाड़ेगी,
उत्पादन बढ़ेगा, गुणवत्ता सुधरेगी, स्थिरता आएगी,
आय बढ़ेगी, कृषकों की, यकीन बढ़ेगा कृषकों का मां पर,
रुचि जागेगी, ग्राम शहर बनेंगे, मुस्कान छाएगी चारों ओर,
बस, ऐसे बनेगा, भारत कृषि प्रधान देश, सही मायने में।

कृषि है सभ्यता, पेशा भी

हमारे प्राचीन धर्मो से जुड़ी प्राकृतिक संस्कृति है कृषि,
कर्म, अनुष्ठान की संवेदना से सदा लैस रहती कृषि,
समय स्थान व आवश्यकता के साथ, बदलती रहती कृषि,
प्राचीनता, विविधता, विषमता, व्यापकता से लदी रहती कृषि,
हर जीव, जन्तु, जन, जल की, प्राणवायु है कृषि,
संस्कृति संग चला करती व बदला करती कृषि,
संस्कृति व कृषि हुए उदय साथ, बने पूरक एक दूजे के,
मानवता, मनुष्यता, इंसानियत को लेकर चलती है कृषि,
मानवता, संस्कृति व कृषि ही तो हैं, प्रकृति के स्वरुप,
खोद गहरा कृषि को, राष्ट्र की संस्कृति जान लीजिए,
खुशहाली की राह प्रारम्भ होती कृषि के द्वार से,
धन्य है, सम्पन्न हैं, वो राष्ट्र, कृषि जहां हुई सम्पन्न,
खेत, खलीहान में दबी रहती, खुदा की खुदाई,
देती दिखाई, कृषकों को, जैसे श्रीकृष्ण दिखें पांडवों को,
व्यवसाय नहीं कृषि, सभ्यता की पालक बनी है कृषि,
सभ्यता को त्यागते नहीं कृषक, कभी मरते दम तक,
कृषक जीते सदां सभ्यता के लिए संसार के लिए,
महा यज्ञ है कृषि, सभ्यता को बचाने, कीजिए आहूत,
जानने, राष्ट्र की सांस्कृति, जान लीजिए राष्ट्र की कृषि।

कथन, गद्य व अनुभव कृषि के

किसान भाईयों, समझो, वातावरण, भूमि, जल, कृषि तकनीकियां,
मूल्य संवर्द्धन, बाजार, खेती के छः आयाम करते उपज का निर्धारण।

खाद्य व कृषि संगठन ने, भूमि की समतल सतह को बताया नायाब,
होती 25–30% उत्पादन में वृद्धि खेत की भूमि यदि समतल।

मानते ज्ञानी ध्यानी प्राचीन पद्धति को स्थिरता का अच्छा सूचक,
वर्तमान पद्धति अधिक उत्पादन का ज़रिया, करें दोनों का संकरण।

विविधता कृषि तंत्र में, है सीमांत कृषकों की जीविका की गारंटी,
समझ लिए, कृषि प्रसारकों ने सुझाए, कृषि के चार प्रमुख स्तंभ।

उपयुक्त आदान, उपयुक्त समय, उपयुक्त स्थान, उपयुक्त कृषक,
बदलते वातावरण परिवेश में, एकल फसल, है कृषि का विष।

रोग जनित कीट, कवक, सूक्ष्म जीव सोते कहां, हमें जगाते,
पौधे ही नहीं, हम ही नहीं, मृदा मां भी जीवित ही मानी जातीं।

तीनों समयानुसार प्रतिक्रिया देते, कार्य तापक्रम अनुसार करते,
मरु क्षेत्र की विषमताएं कृषकों को हराना, थकाना चाहती।

पीछे धकेलना चाहती, उन्हें चुनौती देना ही है सफल कृषि,
हैं कृषकगण परिश्रमी, खरपतवारों की निरन्तरता के कारण।

आय की स्थिरता, निरन्तरता के लिए करें खेती संग पशुपालन,
कृषि को कुटीर उद्योग व व्यापार मानना है कृषक की जीत।

करें कृषकगण अपनी फसल का चुनाव व क्षेत्र का निर्धारण,
जान फसल बाजार भाव, उत्पादन, आपूर्ति, मांग व वातावरण।

कृषक वही आकाश छुएगा, कम लागत में अधिक उत्पाद पाऐगा,
कर मृदा को तंदरुस्त, खेती की नई तकनीकियां अपनाऐगा।

कम लागत का कुटीर उद्योग खेती

कृषि है एक उद्योग, ढालें इसे सस्ते कुटीर उद्योग में,
लें साथ प्रकृति का, रहते जैसे लाखों वृक्ष, जीव वन में,
रहते सदां हरे–भरे, बिन मानव, पनप प्रकृति की गोद में,
प्रकृति के 16 प्रकार के पोषक तत्व, कराएं पौधों को उपलब्ध,
लगाएं, सूक्ष्म जीवों की संख्या व विविधता का कुटीर उद्योग, भूमि में,
लेते पौधे पोषक तत्व चक्रीय विधि से, सूक्ष्म जीव रहते इस चक्र में।
निकालें व्यय मुख्य फसल का सह–फसलों से, होगी मुख्य फसल बोनस।
कृषि के आदानों – खाद, बीज, कीटनाशक का करें फार्म पर उत्पादन,
पालें कैंचुऐं जाते गहरे 1.5 फीट, आते जाते अलग छिद्रों से,
कर भूमि पोली, वायु, जल की राह बनाते, छोड़ते विष्ट जड़ों में,
भूमि मुलायम होती, पोषक तत्वों की प्राप्ति से, खेती का व्यय घटता।
पालें देशी गाय, एक ग्राम गोबर से मिलते करोड़ों सूक्ष्म जीवी,
बनाएं गोबर, मूत्र व सह पदार्थों से जीवामृत, धनजीवामृत, भूमि में डालें,
होंगे उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्व, पालें 10 एकड़ पर एक गाय,
करें 100 किलो बीज उपचार, गोबर मूत्र से तैयार 20 लीटर बीजामृत,
हैं जीवामृत सूक्ष्म जीवों का महासागर, तैयार करें आवश्यकतानुसार,
तैयार करें इसे गोबर, मूत्र, बेसन, गुड़, दाल आटा, जीवाणु युक्त मिट्टी से,
करें इसकी 200 लीटर मात्रा से एक एकड़ में बुवाई बाद सिंचाई,
मिला 5 लीटर जीवामृत 100 लीटर जल में, करें पहला छिड़काव,
करें दूसरा छिड़काव 21 दिन बाद, 10 लीटर जीवामृत 150 लीटर जल,
करें इसी प्रकार तीसरा, चौथा छिड़काव, 200 लीटर बीजामृत से
ढ़के रखें भूमि को, रखें तापक्रम 25–30 डिग्री से. नमी 65–72%,
भूमि सतह पर अंधेरा, कहते इसे अच्छादन, रहता उचित वातावरण।
फसल, पेड़ बंड पर लगाएं, नाली में पानी दें, होगी जल की बचत,
बहु फसल पद्धति अपना, सह फसल दलहन लगाएं, फसल चक्र अपनाएं।
रखें फसल बुवाई की दिशा सदा उत्तर–दक्षिण, तेज हवा होगी पार,
अपनाई ऐसी फसल पद्धतियां, आएंगे नहीं कीट व बीमारियां,
हो प्रकट जैविक संकट, करें छिड़काव बना गोबर, मूत्र,
छाछ से नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्नि अस्त्र, फफूंदी नाशक दशर्पणी,
की खेती इस प्रकार, उत्पाद होगा अधिक गुणवत्ता से भरा व आर्थिक।

कृषि-मृदा-माता-सागर

कृषि है सागर से गहरी, बारीकियां जिसकी जानी जाती नहीं,
है कृषि, आकाश से भी ऊँची, नापी गई नहीं ऊँचाई आज तक,
कौन जान सका, आज तक, सागर के असंख्य जीव जन्तुओं को,
हैं मिट्टी के कण, सूक्ष्म जल जीव समान, कौन जान पहचान सका,
कौन जान सका इनके घनत्व को, कणों बीच छिपे जल कणों को,
जान सका ना कोई, छिपे मृदा कणों बीच, वायु के कणों को,
कौन जान सका, मिलेगा जल तेलीय, खारा, छारा, कितना गहरा,
रहतीं कैसे झाड़ियाँ जीवित हरी वर्षों तक, बिन वर्षा के,
बता सका ना, मृदा है, या पालनहार के लम्बे हाथ,
उड़ी वायु से, बही बाढ़ से, पर बसती गई मृदा वक्त के संग
मृत नहीं, जीवित मृदा, माता लगती बेहद करामात की
समाप्त हुए नहीं, दर्जनों पोषक तत्व, दबे इसमें हजारों वर्षों से
ऐसी महान मृदा माता, देती सदैव रहती वानस्पतिक भोजन
भर दिया जल इतना इसकी कोख में, समाप्त होता नहीं बातों में
अत्याचार किए हमने माता पर भले ही बार—बार, दिए घाव गहरे
उत्पादकता छोड़ी नहीं, मुंह मोड़ा नहीं, उत्पादन बढ़ाया रुक—रुक
गड्ढे खोदे, जल आया, वृक्ष आएं, बेकार छोड़ा कैक्टस उगें काम के
उजाड़ा, बंजर बनाया, नमक दिया, लवण रोधी पौधे दिए हमें
आई बाड़ भयंकर, चीर दिया मृदा माता का सीना, सारा
बालू दिया इमारतें बनाने, सीप, घोंघे छोटे दिए खेलने
आई बाड़, ले आई बहती मृदा माता, नए बीज, उर्वरकता लदी मिट्टी
कौन जान सका हैं, छिपी क्षमता कितनी कृषि मृदा माता में
हर भले—बुरे, कर्म—कदम पें, छिपा रहता आशीर्वाद मृदा माता का
रखती समेटे, सदा जीवित, सूक्ष्म जीवों, वानस्पतिक बीजों को
खराब कभी कोई होता नहीं, सड़ता नहीं, समाया इसकी कोख में
कृषि मृदा माता नहीं, साधारण, संग्रहालय है पोषक पदार्थों का
असीमित पाताल तोड़ कुआं जल का, जीन बैंक है वानस्पतियों का
ना जान सका साधारण मानव, पहचान लिया कृषक ने अपनी माता को।

खेती के मुख्य कथन

आओ मिल, खेती के मुख्य आयामों को जान, गांठ बांध लें,
वातावरण, भूमि, जल, तकनीकियां, प्रसंस्करण, खेती के आयाम।
सशक्त, समतल भूमि, देती 30—40% उत्पादन में फायदा,
देती विविधता, पारिवारिक खेती की सफलता की गारंटी।
प्राचीन खेती देती स्थिरता, वर्तमान अधिक उत्पादन, करें संकरीकर्ण
बदलते वातावरण, भूमंडलीय उष्मा में, एकल फसल है जहर।
जानें, रोग जनित जीव सोते नहीं, बनाते योजना हमें हराने,
पौध, मृदा, देते प्रतिक्रिया वातावरण संग, करें समयानुसार कार्य।
खरपतवार रखते कृषकों को अनुशासित, कार्यशील, सदा सर्वत्र।
शुष्क खेती है जुवा थकाती, पीछे धकेलती, हराएं इन्हें।
सफल कृषक, करेंगे खेती, बाजार, मांग, उपलब्धता जिंसों की, भांप,
मुस्कुरायेंगे कृषक, रखा हिसाब—किताब, माना कृषि कुटीर उद्योग,
लें कृषि पशु पालन साथ, रहेगी कृषि सदा स्थिर फायदेमंद
कृषक वही जीतेगें, लेंगे अधिक उत्पाद, कम आदान से।
लाएं खोज, आस—पास से, दूर से, खेती के नवाचार अलग,
खा ठोकर राह बदलें, तरीका बदलें, आदान बदलें,
मान हार ना हों कुंठित, न छोड़ें भाग्य पर, प्रयत्न करते रहें
हर रोज़, सीखें, भूमि से, फसल से, असफलता से, करने सुधार
ये हैं गुर, ज्ञानी, ध्यानियों, वैज्ञानिकों, बुजुर्गों के, कंठस्थ रखें,
इन कथनों को बदलते, सुधारते रहें, समय संग।

कृषि मृदाऐं

किसान भाईयों, दूं आपको ज्ञान विशेष, करुं आपकी भ्रान्तियां दूर,
पौध आधारित तकनीकियों पर दिया जोर अधिक, मृदा सुधार पर,
नहीं दिया ध्यान, बढ़ते रहे एक दिशा में, हो गई भ्रान्तियां खड़ी,
उभरी बड़ी भ्रान्ति, है जैविक खेती स्थिर या नहीं, दुनिया में।
है अनुभव, विकसित, विकासशील कृषकों ने कायम रखी भूमि की उर्वरा शक्ति,
घटी मात्रा कीटनाशकों, रसायनों की, पर घटी नहीं फसल उत्पादन,
है अर्न्तराष्ट्रीय अनुभव, भूमि सुधार से बढ़ता गया उत्पादन सदां।
आई भ्रांति पहली, बड़े फार्म ही देते खाद्यान्न पूरे संसार को, क्या?
मिला उत्तर, संयुक्त राष्ट्र संघ की खाद्य व कृषि संगठन से,
होते खाद्यान्न पैदा 75 प्रतिशत संसार में, पारिवारिक खेती से,
कृषक दुनिया में करते खेती अधिकतर अपने परिवार के लिए,
हो कृषि का वाणिज्यकरण, हो ना भले औद्योगिकीकरण, मशीनीकरण।
दूजी भ्रान्ति, बड़े, वृहद् औद्योगिक फार्म अधिक उत्पाद देते क्या?
होते बड़े फार्म आर्थिक, एकल फसलों के लिए, अनुसंधान बताता,
छोटे विविध ढंग के फार्म, दो गुणा अधिक खाद्यान्न पैदा कर देते।
तीसरी भ्रान्ति, परम्परागत कृषि सांसारिक भूख मिटाने है जरुरी क्या?
बताते अन्तराष्ट्रीय आंकड़े जैविक तरीके से घटता उत्पाद 20% तक।
करें खेती ढंग से, अपना फसल चक्र, ढके फसलें, बढ़ेगा उत्पादन 10%।
बात अजीब़, भारत में करोड़ों भूखे सोते, 21 मैट्रिक टन गेहूं सड़ जाता,
करें बर्बादी बंद, करें खेती ढ़ंग से, बढ़ेगा उत्पादन 10%।
करें खेती जैविक या रासायनिक, अन्तर विशेष नहीं, कोई मुद्दा नहीं,
समझें जटिलता भूमि की, तंत्र की, ना करें नजरअंदाज कृषक अनुभव,
कृषक हैं परिपक्व, अनुभवी, फार्म—वैज्ञानिक, निकाल लिया है तोड़,
जुताई कम, भूमि को ढकें, 3—5 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं।

बंजर ज़मीन की सच्चाइयाँ

कठिन, कठोर, पत्थर समान, हों ना पोषक तत्व, जल, वायु पार,
ना पैदा घास की पत्ती, बने कृषक पर बोझ, समझिए भूमि बंजर।
कहते किसान, प्राथमिक, मध्यम, सूक्ष्म तत्वों की भूखी हमारी भूमि,
डालते काफी रासायनिक उर्वरक, बढ़ाने गुणवत्ता, भूमि बंजर रहती।
यही भेद गहरा, समझने का, डालते उर्वरक भूमि में ठहरते नहीं,
उड़ जाते बन गैस, उतर जाते गहरे, बह जाते जल संग
अपशिष्टों से बने कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, इनका कार्य जान लें,
अपशिष्टों के अपघटन से देशी खाद बनती, ह्यूमस से लदी होती,
ऐसी भूमि काली होती, भंगुरता बढ़ जाती, धारण क्षमता बढ़ जाती,
भूमि में वायुकरण बढ़ता, सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ती, अपघटन बढ़ता।
अपघटित पदार्थों, जीवांशो बीच, पोषक तत्व रहते, पौधे सोखते,
आया भेद, समझ भूमि का, होती बंजर भूमि, अपशिष्ट पदार्थ रहित।
अपशिष्ट पदार्थ होते सूक्ष्म जीवों के घर, फलते—फूलते, बढ़ते,
कमी अपशिष्ट पदार्थों की बनाती भूमि को कठोर, पत्थर समान।
जड़ें बढ़ती नहीं, पोषक तत्व मिलते नहीं, जल ठहरता नहीं,
सूक्ष्म जीव, रखते भूमि को जीवित, पौधों को कम ही सताते।
मिलता नहीं भोजन पर्याप्त भूमि से, तब लेते पौधों से भोजन,
हितैषी सूक्ष्म जीव, कृषि अपशिष्टों में रहते, यही उनका निवास।
भूमि बंजर रासायनिक उर्वरकों से नहीं, देशी खाद्य की कमी से होती,
अपशिष्ट, अपघटित पदार्थ व जीवांश, सुधार, भूमि को युवा रखते।
है, सर्वमान्य, आसान, आर्थिक तरीका, बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का,
डालें 10—12 टन कम्पोस्ट या 5—6 टन वर्मीकम्पोस्ट, उगाएं ढ़ेंचा।

सीमांत, अर्द्ध—सीमांत, वित्त संसाधनों से जूझते किसानों की खेती,
बन गई, जी का जंजाल ना उगलते, ना निगलने बन रही,
उत्पादन अपेक्षित मिलता नहीं, आय व गुणवत्ता का ब्यौरा नहीं,
खेती है निष्ठुर, खेती की चाबी है रहती, प्रकृति के हाथ।
पसीना बहाया गहन, किए प्रयोग मंहगे आदान, अन्तर पड़ा नहीं,
तकनीकियां अपनाई अन्तराष्ट्रीय, किए विचार गहन, कामयाबी मिली नहीं।
प्राकृतिक आपदाऐं, विषमताएं, विभीशिकाएं, घेरे रहती कृषि को,
तकनीकियों को दबा देतीं, आदानों के प्रभाव उभरने देती नहीं,
तकनीकियां नहीं, दें चुनौती, विपदाओं को, खुले आकाश तले,
रुक्ष क्षेत्र की खेती, फेंका जाल मछली का, मछली फंसी ना फंसी।
जांचें, परखें, पाएंगे कृषि वातावरण तंत्र में विविधताएं अनेक,
उम्मीदें, अवसर भी हैं अनेक, चुन इन्हें शुभअवसर में बदलें।
आएं बाहर, सहकारिता समूह बनाएं, मिलें साथ तीन सौ किसान,
कर दें प्रारम्भ खेती, मिला तीन सौ मस्तिष्क, छः सौ हाथ।
प्राकृतिक विपदाओं के प्रसाद को बांट, आसानी से पचाएं कृषक,
रखें पक्की, सदृढ नींव भूमि में, मिलाएं कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट,
मैंगनी, बकरी की खाद, कुक्कुट खाद, नीम की खली, प्राकृतिक खनिज,
बढ़ेगा कार्बनिक जीवांश, होगी पी एच मान स्थिर, बढेगी धारण क्षमता।
सुधारें भौतिक, रासयनिक, जैविक रचना, संरचना, बदलेगा रंग भूमी का,
होंगी फसलें अच्छी, करेगी सामना बदलते वातावरण, भूमंडलीय गर्मी का।
होंगे कवक, बैक्टिरिया संतुष्ट ना करेंगे हमला फसलों पर,
धारण क्षमता ना होने देगी, जल की कमी, ना होगा जल भराव भूमि में
पोषक तत्व ना बहेंगे, ना जाएंगे नीचे, बन जाएंगे नैनो पदार्थ।
कर भूमि का प्रजनन, किया सुधार, भूमि की सुदृढ़ता को जन्म दिया,
होंगी सीमान्त, हारे थके कृषकों की परम्परागत तकनीकें सफल।

शुष्क भूमियां मांगती नई क्रान्ति

देखीं, अनुभव की, भारतीय जनमानस ने कृषि क्रान्तियां, हरित, पीली,
नीली, सफेद, इन्द्रधनुष क्रान्तियां बाकी है देखना अभी ग्रे क्रांति।
अपेक्षाएं, आवश्यकताएं, कार्य–क्षेत्र, विधि, होंगे इस क्रान्ति के भिन्न,
होंगे शामिल, 14 बरानी जनपद राजस्थान के; हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश,
विदर्भ; अन्नतपुर लाल मिट्टी क्षेत्र, रायचूर गुलबर्गा कर्नाटक क्षेत्र,
जाना जाता क्षेत्र भारत का बिल्कुल भिन्न, रेतीली, भूखी, प्यासी भूमि से,
गर्मी से बेहाल, गरीबी, जटिल समाज, कृषि की विविधताओं से।
देने क्रांति स्वरुप, मोटे अनाज, स्थानीय दलहन, तिलहन चुनने होंगे,
खाद्य फसलें, दुग्ध, फल, चारा फसलें एकीकृत करने होंगे,
पशु पालन, जैविक खेती, भूमि सुधार, क्रान्ति के आधार टिकाऊ होंगे।
समय, स्थान अनुसार, बाकी गतिविधियां इर्द–गिर्द, आती–जाती घूमेंगी,
शुष्क फल–बेर, गूंदा, कैर, फालसा, करौंदा; जल्दी पकने वाली शुष्क रोधी
दलहन तिलहन, ज्वार, बाजरा की किस्में, मुख्य धारा में शामिल होंगी।
थारपारकर, कांकरेच, नागौरी गाय, जमनापुरी बकरी, मारवाड़ी, भेड़ शामिल होगी,
दलहन वृक्ष–खेजड़ी, कुम्मट, सब्जियों व गौंद के स्त्रोत साथ होंगे,
व्यापकता, विविधता, बहुउद्देशीय, स्थानीय अनुकूल घटकों को चुनना होगा।
न उगाएं, लम्बी अवधि, अधिक पानी वाली फसलें, वृक्ष कोई,
रहें कृषक अरंडी, कपास, मूंगफली, गेहूं फसलों से कोसों दूर,
यह तंत्र भूमि सुधार, उत्पाद, आय स्थिर करने में होगा सहायक,
प्रस्तावित हरित–श्वेत–मृदा क्रान्ति को भारत के रुक्ष क्षेत्रों में उतारें।
पशुपालन + वानिकी + खाद्यान्न + बागवानी को मानें इकाई एक,
यह तंत्र, लम्बे समय तक चलने वाली, असरदार कृषि क्रान्ति कहलाएगा,
समय, समस्या, आवश्यकतानुसार आदानों की समीक्षा करनी होगी।

कृषकों के माथे का पसीना, उनकी चिन्ता की लकीर हूँ,
बन गए अनेक किसान मौत के ग्रास, उनका साक्षी मैं,
खेती की समस्या का हल, खेती से ही निकालने आया मैं,
भाईयों किसी की ओर नहीं, स्वयं की ओर ही झांकें।
खेती के आय व्यय का हिसाब किताब रखा करें,
पशु आधारित खेती अपना कर खेती को स्थिर बनाएं,
अपना बागवानी को, वर्षभर आय सुनिश्चित किया करें,
खेती में ज्ञान का उपयोग किया करें, इसे आहूत किया करें,
कृषि मशीनरी के उपयोग से, लागत घटा, क्षमता बढ़ाया करें,
भूमि हैं बीमार, कमजोर, इस बारे में चिंतन अवश्य किया करें,
फसल चक्र में कर दलहन शामिल, भूमि का ध्यान रखा करें,
उगा, जल्दी पकने वाली फसलें, पानी की बचत किया करें,
स्थानीय, फसलों, किस्मों, वृक्षों, पशुओं को कृषि का अंग माना करें,
आज की ही नहीं भाईयों, भविष्य के भारत का भी ख्याल रखा करें,
कृषि को जैविक बनायें, पर्यावरण की रक्षा करें, धरती को बचाएं,
कर्जा ना लें, बना महासंघ कृषि को चुनौती दिया करें,
आप विनोबा भावे हैं, लोकनायक भी आप, त्याग की आहुति दिया करें,
हैं आप भारत इसे सदा उज्ज्वल, सशक्त, महान बनाते रहा करें,
अपनी किसानी को, वैज्ञानिकों की वैज्ञानिकी, के साथ चलाया करें,
समस्या का हल समस्या से, खेती का हल खेती से निकलेगा,
सफलता से सीखें, असफलता से सीखें, जीवन में, हर हाल में सीखें।

खेती किसानी आसान नहीं

खेत किसानी, साथ देती नहीं, कारगर नहीं,
समझ में किसान के, आसानी से आती नहीं,
प्राकृतिक जंजाल सी, लगती लघु किसानी,
प्रकृति ढाल बनेगी या तलवार, अंदाजा नहीं,
वर्षा, जल की होगी, या होगी ओलों की,
शीत लहरें चलेगी या चलेगी शांत लहरें।
फसलें टूट ढेर बनेगी, धरती को चूम लेगी,
सीधी स्वस्थ खड़ी सूर्य को नमस्कार करेगी,
ढेर बनेगी मिट्टी का, अनाज़ के मोतियों का,
यही ज्ञात नहीं, खेती करना, आसान नहीं।
खेती, द्वंद, प्राकृतिक आपदाओं संग जंग हैं,
हमें नवाचारों, अनुभवों का, संचय करना होगा,
इन विपदाओं व आपदाओं को हराना ही होगा,
विपदाओं को विविधताओं से जीतना होगा।
बदलते माहोल को जीत, खेती करनी होगी,
प्रकृति की टेढी नजर पर, नज़र रखनी होगी।
फल—फसल—पशु—मृदा को एकीकृत करना होगा,
आपदाओं को धकेल खेती को बचाना ही होगा,
फसल सुधार संग, भूमि का सुधार करना होगा,
भूमि को मां, फसलों, पशुओं को पुत्र मानना होगा,
इस मोह जाल से आय तीन गुना करनी होगी,
एकीकृत उपायों से, एक चक्रव्यूह रचना होगा,
चक्रव्यूह में फंसा आपदाओं को, खेती करनी होगी,
बचा खेती, भारत को, संकट से निकालना होगा।

खेती किसानी को करना है आसान

गहन, गहरा, घना अनुभव बोलता, खेती किसानी नहीं, आसान,
लदें हम, ओज भरे जोश से, करना है इसे, लाभदायक आसान,
स्थानीय कृषि वातावरण जानें, विषम, विपरीत स्थितियों को समझें,
बाजार का ध्यान, कृषि जिंसों की कमी, अधिकता का ध्यान रखें।
फैसला करें उचित, करनी है खेती कौन सी, जिंस की कितनी,
जानें भूमि में, पोषक तत्वों का स्तर, पूर्ण समतल इसे कर दें,
सुधारने भूमि की रचना, संरचना, मिलाएं बोने से एक माह पूर्व,
कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, मैंगनी का खाद व रौकफोसफेट मिलायें,
करें भूमि व बीज उपचार आवश्यकतानुसार ट्राईकोडरमा, पी एस बी से,
भूमि संग छेड़—छाड़ कम करें, कचरा जलाएं सड़ाएं ना।
स्वयं परंपरागत किस्म का बीज खेत पर ही तैयार करें,
बन वैज्ञानिक, पौधों बीच घूमें, इनका लगातार चयन करते रहें।
रहे ध्यान, बुवाई के उपयुक्त समय का, भूमि में नमी का,
नमी कम, भिगो बीज जल में बोयें, गहरा, उथला ना बोएं,
बोएं पंक्तियों में, उचित दूरी पर, रहे पौधों की संख्या उपयुक्त
खरपतवार खेती के शत्रु, निकालते रहें, हाथ से, मशीन से।
रखें निगरानी फसल पर, आवश्यक पोषक तत्वों का छिड़काव करें
फूल, फली, फल आने पर, नमी व पोषक तत्वों का ध्यान रखें विशेष
देखें कोई पौधा पीला वायरस ग्रस्त, उखाड़ तुरन्त जला दें
लगें रस चूसक कीट, फैल रही वायरस, छिड़के नीम तेल 5%
निकले ना धूप, हो वर्षा अधिक, हो जल भराव, हो जायें सजग
फसल जनित बीमारियाँ करेगी हमला, तुरन्त पाउडर या रसायन छिड़कें
सतही सिंचाई ना अपनाएं, उगाएं फसल फव्वारे, ड्रिप से
अपनायें फसल चक्र, विविधता; आसपास भूमि साफ रखें
पके फसल, 5—7 दिन पूर्व काट, सुखा, ढंग से, दाने निकालें,
भंडारण करें उचित, मेहनत से संवारें, जाए ना कोई कीट,
कीटाणु, अंडा, नम पदार्थ, दानों के संग, बोरों में कभी।
रहें कृषि ज्ञान से परिचित, करते रहें नवचारों का प्रयोग,
रखें आय व्यय का ब्यौरा, आदान कम डालें, उत्पादन बढ़ाएं,
हो फसल खराबा, घबराऐं नहीं, खोजें कारण, पूछें हम सेवकों से।

सनातन धर्म की जन्मभूमि होती थी भारत,
अब समेटे है, बहु धर्म, महान संस्कृति भारत,
प्राचीनता, परस्परता व परिपूर्णता से संतृप्त भारत,
मानवता, सर्व समाज मित्रता में डूबा था भारत,
शिक्षा—दीक्षा, आचार—विचार—विहार में था अग्रणी,
न्याय, युद्ध की कुशलता में निपुण था हमारा भारत,
न्याय—तंत्र, राज—तंत्र पहलू थे, राजनीति के,
जन—जन को प्रभावित करते थे, आयाम राजनीति के
जीवन शैली, जीने की राह में घुली थी राजनीति,
फलदाई, निष्कर्षदायी, शिखरदायी थी हमारी राजनीति,
रईस, राज्य, रजवाड़े चलते सदा राजनीति के संग,
घुलती चली गई राजनीति भारत की संस्कृति के संग,
सभी शासक प्रशासक थे राजनीति में पूर्ण लिप्त,
बढ़े, चले, गिरे, संभले, हो राजनीति में लिप्त।
भारत की आजादी की लड़ाई का खौफनाक अंत,
था भारतीय कृषि को बर्बाद करने का एक षड्यंत्र,
बांटे थे सिंध, पंजाब, अग्रणी राज्य खीच लकीर,
भूमि को बांटा, नहर, नदियों को बांटा राजनीति ने,
कारखाने गए कहीं, क्षेत्र जूट के गए कहीं, राजनीति में,
था बंटवारा कृषि का, मारने भूखा, राजनीतिक हथियार से,
समझे ना भारतीय, बहका दिए, अंग्रेजी राजनीति ने,
बंटवारा नहीं धर्म का, था कृषि का, करने बर्बाद खेती को।

जैविक खेती

जैविक खेती का अभिप्राय

सुन्दर, समतल, सुडौल सतह वाली मृदा से ही,
निकला करती उन्नत जैविक खेती की सुन्दर राह,
भूमि जो भौतिक, रासायनिक, व जैविक रुप से,
पूर्ण होती, पोषक तत्वों से लबालब हो जाती,
देती अधिक उच्च कोटि उत्पादन, समस्या नहीं
बीमारियें, कीटं; बदलते वातावरण को हरा देती,
हर विषमता, विभीषिका को, विविधता से पस्त कर
अपेक्षा पूरी कर, अनिश्चितता के बादलों को रौंद
नाम ऊँचा करा, मुस्कान की वर्षा कराती, ऐसी भूमि
समाज व राष्ट्र का गौरव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाती,
हां, यही है भूमि, कृषि की मां, जैविक खेती की जननी।
बनाओं मृदा मां को, हर हाल में, स्वस्थ, पूर्ण आकर्षक,
भूमि मां की उम्र है हजारों वर्ष, इसे यों जर्जर ना होने दें,
पौध सुधार ही नहीं भूमि प्रजनन कर भूमि सुधारते रहें,
मनाएं भूमि उत्सव हर वर्ष, भूमि को नवीनता, निरंतरता,
तरलता से सृजन कर, घनिष्टतम संबंध प्रगाढ़ करते रहें।
जैविक खेती प्रारम्भ करें, भूमि मां से, पावन धरा से,
बीमारियों, घटती उम्र, स्वास्थ्य को, बिगड़े वातावरण से,
समाज को बचाएं, युवाओं को युवा रखें, लम्बी आयु दिलाएं,
भूमि सुधारें, जैविक खेती करें, एक नागरिक का फर्ज निभाएं,
जीते सभी, तुम जैविक खेती करके, अपना फर्ज निभाते जियों।

आओ प्यारों आओ, जैविक खेती के हुनर की पुड़िया खोलें,
सर्वप्रथम, अपनी भूमि की पूर्ण जानकारी हासिल कर लें,
साथ ही स्थानीय, आवश्यक, फसलों, वृक्षों के बारे में जान लें,
सोचें, करें तय, दीर्घकालीन फसल कृषि उत्पाद की नीतियां,
करें समाप्त धीरे—धीरे बाजारों से प्राप्त आदानों पर निर्भरता,
घटाएं शनैः—शनैः ऊर्जा स्त्रोतों पर आवश्यक कृषि के व्यय,
बांधे गांठ, उपयोग करें सिर्फ प्राकृतिक संसाधनों आदानों को,
रहे कृषि प्रणाली टिकाऊ, रहें सदियों तक बुरे वातावरण से मुक्त।
करें विभीषिकाओं, विषमताओं, भूमंडलीय बढ़ती गर्मी से मुकाबला,
करें आदान ऐसे प्रयोग, न हो प्रकृति संसाधन समाप्त हमारे।
कदमों में सर्वप्रथम कदम, करें भूमि की तंदुरूस्ती सबसे पहले दुरूस्त,
करें अधिक उपयोग फसल अवशेष, जैविक खाद का उपयोग,
ना भूलें उचित फसल चक्र, बहु—फसल प्रणालियों को अपनाना,
त्यागें विचार गहरी घनी जुताइयों का, करें भूमि से छेड़—छाड़ कम,
सदा ही ढ़कें भूमि को, अवशेषों से जैविक पदार्थों से, फसलों से,
रखें मानचित्र मस्तिष्क में, रहते भूमि में लट, दीमक, कवक कहां,
रखें भूमि को समतल, बढ़ाए धारण क्षमता, उर्वरक शक्ति इसकी,
है भूमि अब तैयार, देने भरपूर गुणात्मक, जहर मुक्त उत्पाद का ढ़ेर,
अक्षम रहेगी भूमि, करेगी मुकाबला प्राकृतिक आपदाओं, विषमताओं,
भूमंडलीय बढ़ते तापक्रम का, प्रभावी रहेगी, धकेलेगी दुष्प्रभाव को दूर।

जैविक खेती प्रारम्भ कैसे करें ?

आओ भाईयो बहनों, जैविक खेती की नीति बना, प्रारम्भ करें,
बिठा भूमि पर निर्णय का कठोर पहरा, इसे समतल करें।
करें दलहनों का चुनाव, आवश्यकतानुसार रख वातावरण का ध्यान,
प्रथम वर्ष, साठ, नब्बे, एक सौ बीस दिन वाली दलहने उगाएं क्रमवार,
आसान शब्दों में मूंग, चंवला, सोयाबीन, अरहर दलहनें उगाएं।
मिलाएं एकड़ में 3 टन कम्पोस्ट व केंचुआ खाद 2 : 1 अनुपात में,
बुवाई संग, भूमि में मिलाएं 4 किलो ऐजेटोबेक्टर + पी एस बी,
सुधरेगी संरचना, मिलेगी आवश्यक नत्रजन, फास्फोरस उपलब्ध,
उगाएं दलहनें, राइजोबियम कल्चर से बीज, भूमि करें उपचारित।
बिछा दें खेत में फसल के सारे सभी अवशेष,
करें 200 लीटर जीवामृत से एक एकड़ में सिंचाई।
होगा अंकुरण जबरदस्त, तोड़ पर्त अवशेषों की, आएगा बाहर
मिलाएं भूमि में रॉकफास्फेट 200 किलो एकड़ में कम्पोस्ट संग
दें खुराक दूसरी जीवामृत की, 25—30 दिन बाद, जल संग
बढ़ायें जैव विविधता खेत में, वनस्पति, बीज, बुवाई की
उगाएं अवश्य चारों ओर कीटो के आकर्षण वाले वृक्ष
उगाएं गैंदा, लाल अम्बाढ़ी, बैंगन, मिर्च, टमाटर के पौधे खेत बीच
ना डालें भूमि में रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, बीमारी मारक रसायन
रखें पौधों की संख्या उपुयक्त, रखें पूर्ण प्रकाश, जल भराव से दूर
धीरे—धीरे, भूमि सुधारते रहें, स्थानीय जैविक पदार्थ मिलाते रहें

जहर मुक्त, सस्ती, टिकाऊ, व्यवस्था पर आधारित होती जैविक खेती,
प्राकृतिक संसाधनों, सस्ते स्थानीय आदानों पर निर्भर रहती जैविक खेती,
कायम रखी जाती मृदा उर्वरता, अनुभवी प्राकृतिक तरीकों से,
भूमि के जीवांश का बार बार, चक्रीयकरण प्रयोग किया जाता,
वायु, सूर्य प्रकाश का कर उपयोग भरपूर, जैविक क्षमता को बढ़ाते रहना,
प्रकृति विरुद्ध आदानों पर लगाएं पूर्ण लगाम, रहे उत्पाद पूर्ण प्राकृतिक,
रहे ध्यान सदा, प्रयोग जैव विविधता का, इसके संरक्षण का,
रहे प्राकृतिक जीवों का ध्यान, करें प्रयोग व पूर्ण संरक्षण उनका,
देती सदा साथ जैविक खेती, छोटे गरीब, हारे थके कृषकों का,
हैं जैविक खेती सीमांत, अर्द्ध—सीमांत कृषकों की सच्ची साथी।
करें सस्ते प्राकृतिक आदान प्रयोग, लागत घटाएं, आय बढ़ाएं,
जैविक खेती पद्धति नहीं उड़न पक्षी, सदा साथ खड़ी रहती,
ताजगी, सादगी, पोष्टिक तत्वों से भरपूर, भगवान का जैविक भोजन,
भूमंडल की बढ़ती गर्मी, बदलते वातावरण के स्वरुप को धकेल,
गुणकारी उत्पादन सस्तें में सुनिश्चित करती, भारतीय जैविक खेती
प्रकृति संग रह, प्रकृति की गोद में उत्पादन लेना होता है,
ले अपना उत्पाद, बाकी सारा प्रकृति को लोटा देना होता है।
यही जैविक खेती, रख प्राकृतिक सोच, अमल करना, जैविक खेती।
हर आदान प्राकृतिक, अपने खेत का, यही प्रकृति है जैविक खेती की।

जैविक कीट नियंत्रण

आओ किसान भाईयों आओ, मिल बैठ आज बात करें विशेष,
हानिकारक कीटों के जैविक प्रबंधन पर चर्चा करें विशेष,
बढ़ता प्रकोप इनका, हर दिन चिंता में धकेलता जाता हमें,
बढ़ाते हम, वातावरण अनुकूल इन घातक कीटों का,
घटती कीटरोधक क्षमता फसलों की, चिंता हमें सताती,
छिड़कने लग जाते, ढ़ेर सारे कीटनाशक उगते ही फसल पर,
गलत प्रयास हमारे, घटा रहे, संख्या मित्र कीटों की हम,
पहुंच जाते कीटनाशक अवशेष, दानों, फलों फलियों, चारे में,
होती हानि आमजनों की, भूमि की, उर्वरता शक्ति, संरचना की,
घट रहा उत्पाद, गुणकारी उत्पाद, हैं खेती मंहगी, उपाय करें,
यांत्रिक, कीट मित्र, वानस्पतिक जिंस, एकीकृत तरीके अपनाएं,
दुश्मन कीट घटे, मित्र कीट बढ़े, ऐसा कीट प्रबंधन करें,
तरीके हैं ढेर सारे, हैं जैविक आदान भी अनेक, करें विचार,
करें बुवाई, गुड़ाई उचित समय पर, अपनाएं कारगर फसल चक्र,
अंतः फसल, सहफसल, मिश्रित फसल, प्रपंच फसलों पर दें ध्यान,
करें प्रयोग नीम, आक, धतूरा, करंज, ग्वार पाठा की पत्तियों का,
लाभदायक पत्ती सहजन की, तुलसी की, सोनामुखी की, बेशरम की,
सीताफल, निम्बोली, तुम्बा फल, सहजन फलियां, हल्दी व हींग
करें आवश्यकतानुसर एकल या सामूहिक प्रयोग, भगाएं दूर कीट,
उचित प्रयोग विधि जान लें, यकीन इन पर हम कर लें।

फसलों पर होता नुकसान भारी मृदा जनित पादप कारकों का,
हो प्रारम्भ अंकुरण से, चलता फूल आने तक और आगे भी,
फसल उत्पाद घट जाता 50% तक, मृदा जनित कारकों से,
जहां अशांति, वही है शांति, ऐसा है ट्राइकोडरमा के संग
ट्राइकोडरमा विरीडी व हरजीनियम से दूर भागते रोग कारक,
मृदा जनित कवक बीमारियां है अनेक : सामान्य बीज सड़न,
अर्द्धगलन, मूल विगलन, अंगमारी, उखटा, म्लानी हैं रोग मुख्य
ट्राइकोडरमा कृषक मित्र फफूंद, उत्पादन बढ़ाना है आवश्यक,
करें उत्पादन, बढ़ाएं संख्या, घरेलू ग्रामीण विधि से,
लें सूखे उपले 85, मसलें हाथों से मिलाएं पानी होगा ढ़ेर भूरा,
खरीद उच्च कोटि का ट्राइकोडरमा, 60 ग्राम मिलाएं ढ़ेर में,
ढ़कें ढ़ेर को, जूट के बारे से, भिगोएं बोरे को ढंग से,
छिड़कें पानी समय–समय, सूखने ना दें ढ़ेर को कभी,
मिलाएं, हिलाएं ढेर को किसी फावड़े से 12–15 दिन बाद,
करें फिर नम, मिलाएं फावड़ें से, जमेंगे कवक 18 दिन बाद,
हो जाएगा कंडो का ढ़ेर, बिल्कुल हरा, 28–30 दिन में,
यही है, जीवित, सक्रिय, ट्राईकोडरमा कवक, तैयार उपचार वास्ते,
मिला भूमि में सक्रिय कवक का, 20 किलो ग्राम प्रति एकड़, उपचार करें,
कर ना सके भू उपचार, मिलाएं भूमि में पहली गुड़ाई बाद,
रखें ध्यान, हो ना तापक्रम 25–30 डिग्री से ऊपर,
बढ़ा ताप, मर जाएंगे ट्राइकोडर्मा कवक, ना आएंगे काम।

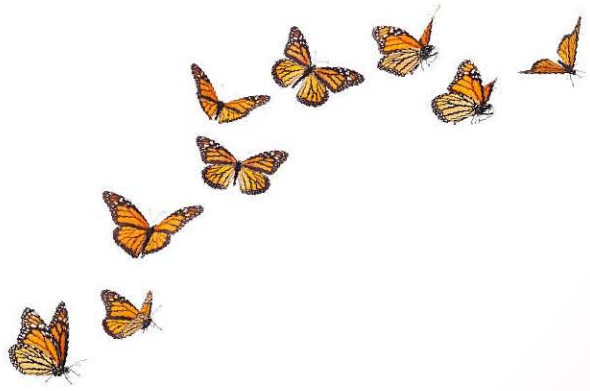

वेस्ट डिकम्पोजर का करें प्रयोग पूरजोर

है बनाना अपने फार्म को सोने की खान, करना होगा कर्म विशेष,
बेकार अपशिष्ट, अवशेष घटकों को, सड़ाना होगा डिकम्पोजर से।
कर नजरअंदाज इन बातों को, कृषक इस खदान को खो बैठते,
कर मृदा का भौतिक, रासायनिक, जैविक अंत, उत्पादकता खो देते।
बना गाय के गोबर से, है करोड़ों जीवाणुओं का अज़ब खज़ाना,
खा गोबर, पत्तियों, डंठलों, जड़ों, पदार्थों को, जीवांश में बदल देता,
भूमि हो काली, हल्की, भंगुर, उत्पादकता की खदान में बदल जाती।
हानिकारक कीट तड़प जाते, देख भूमि की बदली धारण क्षमता,
यही जादू है, सस्ते डिकम्पोजर का, आम के आम, गुठली के दाम।
तीस एम एल की डिकम्पोजर की सीसी, आती सिर्फ तीस रुपए में,
बनता इस सीसी से, डिकम्पोजर 200 लीटर, आता तीन वर्ष काम।
धरती पर बोझ पदार्थों को, डिकम्पोजर बनाता मित्र 30—40 दिन में,
दो सौ लीटर डिकम्पोजर, एकड़ के अपशिष्टों को कमपोस्ट में बदल देता,
खेत में कम्पोस्ट उपलब्ध कराता, अलग कम्पोस्ट की आवश्यकता क्या,
करें इसका 40 प्रतिशत जल में छिड़काव, कीट बीमारियों को दूर भगायें।
घोल 30 एम एल को 30 लीटर जल में, 20 किलो बीज उपचारित करें,
बदल पुवाल, दूसरे अवशेषों को जीवांश में, वातावरण को सुधारते रहें।
डिकम्पोजर जनित घोल छिड़काव से नील गाय, जंगली जानवर आते नहीं,
हो जाते पी.एच. मान व खारापान उचित, डिकम्पोजर के प्रयोग से,
सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ जाती, डिकम्पोजर के प्रभावी प्रयोग से,
उत्पादन गुणकारी मिलता, रासायनिक कीटनाशकों, उर्वरकों की छुट्टी,
जैविक खेती की राह को बना सुगम, डिकम्पोजर मंजिल तक ले जाता।

कम्पोस्ट बनाने की संक्षिप्त जानकारी

भाईयों जान लें विधि, बना लें वर्मीकम्पोस्ट अपने फार्म पर,
होगा मृदा की, रचना, संरचना, जैविक स्वास्थ्य में सुधार,
करें गोबर एकत्रित 20—30 दिन तक, वृक्ष की शीतलता में,
करें इस गोबर को ठंडा, छिड़क पानी तीन दिन,
बनानी होगी अब बंढ़े, ठंडे गोबर से शैड नेट के अन्दर,
बिछाएं प्लास्टिक 100 x 25 फुट की धरती पर
बनाएं गोबर से चौड़ी 4', ऊँची 1.5', लम्बी 24' मेड़ें।
खरीदें पहले ही अच्छी प्रजाति के कैंचुएं, उचित मात्रा में,
चाहिए 12—13 किलो केंचुए 24 फुट की मेंड़ पर,
एक किलो वर्मीकल्चर में पनपते, 1000—1200 केंचुए,
ढंग से ढक दें सभी मेड़ों को, भीगी हुई बोरियों से,
ना ढकें कभी, इन बडों को, पराली से, घास फूस से,
रखें इन बडों को, गीला डाल पानी या माइक्रोस्प्रिंकलर से,
मिला दें केंचुओं को किसी यंत्र से पहुंच जाएंगे नीचे,
लगभग साठ दिन बाद होगा तैयार वर्मीकम्पोस्ट बदलेगा रंग,
हो जाएगा काला बारीक कोयला, कहेंगे काला सोना,
अब करें केंचुए अलग, डाल कच्चा गोबर मेड़ों बीच
ले जाएं वर्मीकम्पोस्ट अब भर टोकरी छान लें छन्नी में
होगी नमी 15 से 20%, नत्रजन 1.6%, फास्फोरस 0.87%
पोटाश भी मिलेगी इस वर्मीकम्पोस्ट से 0.8%
3 टन गोबर ट्रॉली, आती रुपए 2000 में, बन जाती इससे,
24 फीट लम्बी तीन मेड़ें, मिलता 1.5 टन वर्मीकम्पोस्ट,
अर्थशास्त्र बताता, प्रयोग करें यदि 20 ट्रॉली गोबर,
बिकेगा वर्मीकम्पोस्ट एक लाख अस्सी हजार में,
बिक जाएंगे केंचुए भी लगभग रूपया चार लाख में।

कृषि जलवायु

वर्षा है उत्सव कृषि का

घनघोर घटा घिर आई, उत्सव का साजों सामान लाई,
फूल नहाएं, नवीनता ओढ़े हैं, अपनी ओर खींचते हैं,
फसलों में नोक—झोंक, करने बात कृषक से बेताब,
भूमि के छोटे—बड़े कणों में, जल बैंक खुले गए हैं,
बंजर भूमि जी उठी, हरियाली की चादर ओढ़ ली है,
सत्ता हरियाली के हाथों, सूखा, गरीबी वर्षा की गिरफ्त में,
कारी बदरियां आती, आंचल से जल का ख़जाना लुटाती जाती,
शीतलता महके, बरसे, खुशहाली की डोर, दिलों पर राज़ करें,
खुशियों ने कमर कसी, बदरियां अपने संग कष्ट ले उड़ीं,
ग्रामीणो देखो, मुहब्बत की बाहों ने मौसम को घेर लिया है,
कृषक भाईयों, धरती के अंगारे शांत हुए, लम्बे अरसे बाद,
बादलों की सेना का हमला है, सूखती, मुरझाती फसलों पर,
अज़ीब इत्तेफाक देखो, सेना हमला कर रही, कृषक नाच रहे,
बादलों की चमक, आज गौ माता को चूम रही, रह रह कर,
अनमोल जल की झड़ी हैं, जमीन, आकाश का अज़ीब संगम,
जीव—जन्तु, पशु—पक्षी, स्त्री—पुरुष, निकल पड़े नहाने आज,
जी भर कौतूहल करेंगे, भेद नहीं गांव शहर का आज,
कर ना सके साहूकार, सरकार, मुस्कान दे ना सके, आज तक,
वर्षा ने कर दिखाया, अरसे बाद, आज एक पल भर में।

सबक सिखा गया वर्ष 2022 का मानसून

अनुभव लिया नहीं ज्ञान से, शिक्षा ज्ञान रहेगें दोनों अधूरे,
किसान भाईयों, लो अनुभव, प्राकृतिक आपदाओं से, संपदाओं से,
वर्षा कम या अधिक, हानिकारक या लाभप्रद्र, है कृषि की संपदा,
लें अनुभव गहरा, गहन, वर्षा से, आज व कल के लिए,
हुई वर्षा 2022 में लगभग दो गुनी, वर्ष 2021 की तुलना में,
हो प्रारम्भ, मध्य जून से होती रही वर्षा अगस्त अन्त तक,
हुई मारवाड़ क्षेत्र में धीरे, नहीं हो पाई समस्या बाड़ की
हुई बवंडर स्वरुप कोटा संभाग में, आई बाढ़, फसलें बरबाद
कृषक बोते 15—20% अधिक बीज, हर दाना उगा वर्षा में,
हुई पौध संख्या अनउपयुक्त, अधिक, बनी पौध संख्या तनाव,
बिछी चटाई, लगे फसल बादलनुमा, वायु प्रकाश प्रवेश दुर्लभ,
खरपतवार निकाले ना जा सके, वर्षा से हुए पौधे, अपेक्षाकृत लम्बे,
दलहन फसलों में, पुष्क्रम आया देर, फलियां कम शाखाएं लम्बी,
करें तुलना पिछले वर्ष से, क्षेत्रफल बढ़ा फसलों का इस वर्ष,
अधिक नमी, कम ताप ने बनाई अनुकूल स्थितियां कीटों की,
लगे कीट रस चूसने वाले, बालियां, फली, टिंडे खाने वाले,
वायरस, कवक जीवाणु जनित बीमारियों की है भरमार,
किए छिड़काव अधिक खरपतवार, कीट, बीमारियां समाप्त करने,
होगी हानि भूमि की, कम होंगे सूक्ष्म जीव, गुणवत्ता होगी प्रभावित।
बढ़े क्षेत्रफल से, बढ़ेगा उत्पादन, घटेगी फसल उत्पादकता,
बढ़ते ताप से, अधिक पौध से, पौधे महसूस करेंगे जल तनाव जल्दी
फसल बुवाई की है मशीन से, निकाल दें हर तीसरा खूड़
करें गहरी नराई, गुड़ाई, होगा जल संरक्षण, वायु आगमन
नहीं ऐसी समस्या दलहनों में यदि बोई गंई काफी देरी से
पौधों की संख्या उपयुक्त, शाखाएं कम, छोटा कद, फलियां अधिक
बीमारियां, कीट, खरपतवार रहे कम, मिलेगा उत्पादन बेहतर

होंगी रबी बारानी फसलें सरसों, तारामिरा, चना अच्छी
बोऐं अगले वर्ष दलहने देरी से, अन्न फसलें जल्दी ही
डालें बीज कम, करें बुवाई मशीन से 50 से.मी. दूरी पर
कर पाएंगे खरपतवार दूर मशीन द्वारा पूरी तरह से
करें फसल बुवाई मेड़ों पर, अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में।

जल प्रबंधन से करें सूखा प्रबंधन

हुई वर्षा बेहद कम, मर गई फसलें, पानी की कम उपलब्धता से,
हुई वर्षा काफी अधिक, गली फसलें, पानी की अति उपलब्धता से,
दोनों ही परिस्थितियां, बोली जाती, जल जनित शुष्कता, जल तनाव,
समय संग, जल बनता रहता, कृषक का मित्र या शत्रु कभी।
जल जनित शुष्कता, हैं अन्तराष्ट्रीय स्तर की कृषि समस्या,
कहती संयुक्त राष्ट्र संघ रिपोर्ट, सूखा भारत की गरीबी की मुख्य जड़,
तपती धरती, मुर्झाती, सूखती, मरती फसलें, बढ़ रहा सकंट भारी
बढ़ी सूखा की प्रवृत्ति 57%, भारत में पिछले ढाई वर्षो में,
बढ़ता जल संकट, करता प्रभावित 25 करोड़ आम जनों को प्रतिवर्ष
भारत में भी अगली पीढ़ी, जूझेगी जल संकट से, दुनिया के संग
होगी सूखे की समस्याएं भारत में चरम, आने वाले 25 वर्षो में,
पड़ चुका है सूखा दो—तिहाई भारत में पिछले दो वर्षो में,
रखने गरीबों को गरीबी रेखा से नीचे है, सूखा प्रमुख कारण,
करते संसार में 2.3 अरब मानव, जल संकट का सामना,
जल जीवन है, जल है तो कल है, करें सदुपयोग इसका,
होते विस्थापित लगभग 21.6% लोग—बाग सूखा के दंश से,
जल उपलब्धता राष्ट्रीय आपदा बड़े शहरो, वित्त राजधानियों में,
बहते जल का करें प्रबंध, पहुंचाएं टांके में करें रबी फसलों में उपयोग,
छत के जल को कर संग्रहित, पहुंचा दें टांके में, लें पीने के काम,
अगेती, स्थानीय किस्मों को उगा जल की आवश्यकता घटाएं,
रखें पौधों की संख्या कम, करते रहें गहरी निराई गुड़ाई फसल की,
करें बंढ़ो पर बुवाई, खूडों को ढ़के मल्च से, करें ड्रिप से सिंचाई,
कर भूमि की पुनरस्थापना, धारण क्षमता बढ़ा, जल उपलब्धता बढ़ाएं,
रखें ध्यान, पौधे जल पीते नहीं, सोखते, सिर्फ रखें भूमि नम,
गंदे जल को साफ कर, खेती करें दुरूपयोग को उपयोग में लाएं,
नहर के रिस्ते जल को कर एकत्रित, मछली पालन कर आय बढ़ाएं,
वर्षा जल, नहर जल, धरातलीय जल मानें, लघु उद्योग के आदान।

जान लें, समग्र विश्व, में जलवायु परिवर्तन उगलती नकारात्मक परिणाम,
अनुक्रमिक परिणाम से, उत्पन्न चरम मौसमी घटनाएं, घटाती कृषि उत्पाद,
अनिश्चित वर्षा, बाढ़, ओले, ग्रीष्म, शीत लहरें, अनउपयुक्त घटनाएं,
मांग करती, कृषि को, घटनाओं के अनुकूलता में ढालने की।
बदलते परिदृश्य में, अभ्यास कृषि—वानिकी को माना गया महत्वपूर्ण,
कृषि—वानिकी, भूमि उपयोग प्रणाली, सम्मिलित करती जो वृक्षारोपण,
फसल उत्पादन व पशुपालन को एकीकृत करती, उतरी प्रणाली खरी
कृषि उत्पादकता, लाभप्रदता, विविधता व पारिस्थितिकी को सुधारती,
करने ऐसा, भूमि संग वृक्ष व झाड़ियों को भी एकीकृत करती,
जानी जाती कृषि—वानिकी महत्वपूर्ण, करती आवश्यकताएं पूरी हमारी,
आधी ईधन, दो—तिहाई ईमारती लकड़ियों, 70—80% प्लाईवुड
60% लुग्दी उद्योग, 9—11% हरा चारा पूर्ति करती प्रणाली।
दे रही महत्वपूर्ण योगदान वृक्ष उत्पाद व प्रदत्त ग्रामीण सेवा में,
है कृषि वानिकी एक वृक्ष आधारित खेती की समग्र प्रणाली।
करती कार्बन के तटस्थ विकास में सहायता, भूमि जीवांश बढ़ाती,
वन क्षेत्रों बाहर, वृक्षारोपण का विस्तार कर, किसानों की आय बढ़ाती।
मानी जाती कृषि—वानिकी, महत्वपूर्ण, आशाजन घटकों में एक,
पत्तियां, अपघटित हो, ह्यूमस का निर्माण कर, भूमि सुधारतीं,
पोषक तत्वों की पूर्ति कर, आवश्यकताओं को कम करतीं
कर पूर्ति रासायनों की जैविक खेती को पूरकता प्रदान करती।
करना है, अतिरिक्त वन आवरण से, 3 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड
समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक का सृजन, वर्ष 2030 तक,
करना हैं 2030 तक 260 लाख हेक्टेयर भूमि क्षरण तटस्थता
भूमंडलीय गर्मी, बदलते वातावरण का सामना, भूमि क्षमता बढ़ाने,
जल उपयोग, चारा उत्पाद, फसल उत्पाद बढ़ाने का रास्ता कृषि—वानिकी।

फसलें

मैं, बाजरा महत्वपूर्ण सदस्य, मोटे अनाजों का, मिले पंख हमें उड़ने 2023 में
घोषित किया संयुक्त राष्ट्र संघ ने, मोटे अनाजों का वर्ष—2023
हो रही अब चर्चा हमारी हर गली, गाँव, शहर समस्त संसार भर में,
समाज हितैषी, जलते, झुलसते, अपेक्षाओं, आवश्यकताओं पर खरे उतरते
मैं, मोटे अनाजों बीच, विपरीत परिस्थितियों बीच, कुंदन बन उभरा हूँ
गरीब, ग्रामीण, परिवेश बीच, भोजन, चारा, दाना का, सस्ता स्त्रोत मैं
बेहद कम, अनिश्चित वर्षा की स्थिति में, उगने वाली निश्चित फसल मैं
ऊंची, नीची, विकृत भूमि की, कम लागत वाली निश्चित फसल मैं
उलट जायें स्थितियाँ, परिस्थितियाँ पूरी, मैं और किसान अलग होते नहीं
तभी तो संसार के बरानी क्षेत्रों में, 95% कृषकों की पसंद हूँ मैं
पहिचान मेरी जैविक, सस्ते प्रोटीन, कैल्शियम, जिंक, लोहा, फास्फोरस स्त्रोत की
मुझे खाने वाले हष्टपुष्ट, लम्बे होते, शर्करा, रक्त दबाव, कोलेस्ट्रोल से वास्ता नहीं
मैं सबसे गरीब जनों की ऊर्जा हूँ मेरे खाने के स्वरुप हैं अनेक
मैं भुखमरी, कंगाली के आँसू पूँछ, इज्जत की मुस्कान दिलाता उन्हें
मैं झुग्गी, झोपड़ियों से चल कर 5—सितारा होटल तक पहुँच गया हूँ
मैं शहनशाहों, शाहूकारों, राष्ट्रनायको, महानायकों, विचारकों की इज्जत बन चुका हूँ
मुझे ग्रहण करना, राष्ट्रीय, अर्न्तराष्ट्रीय गोष्ठियों में चर्चा करना, इज्जत की बात हैं
तभी तो छोटे, गरीब कृषकों, भूमि, वातावरण व स्त्रोत की जीत है
मुझे अब चपाती ही नहीं, खीच, पापड़, बिस्कुट, काचरे, लड्डु बना खाया जाता
मैं, अब बाजारु मॉल, उद्योगों व निर्यात की फसल जाना जाता हूँ
मुझे उगाने व प्रयोग करने का विस्तृत ज्ञान है उपलब्ध
मैं अच्छी किस्मों, शंकर किस्मों, संकुलों द्वारा 60—90 दिनों में पकाया जाता हूँ
मैं रुक्ष—बारानी क्षेत्रों की पहचान हूँ, स्वस्थ, जीवन का पैगाम हूँ
उगाओं मुझे, खाओं मुझे, स्वस्थ व स्वावलंबी भारत के लिये
बचायें मानव को कुपोषण, भुखमरी से, बाजरा व इसके परिष्कृत पदार्थों से।

दाल

वर्षा, शरद, ग्रीष्म—ऋतु की, वार्षिक दलहन हम,
कृषक मित्र, समाज मित्र, पर्यावरण हितैषी हम,
पानी की चाह नहीं, उर्वरकों की चाह कम,
रचना, संरचना, जैविक दशा भूमि की सुधारते।
रासायनिक उर्वरक नहीं, देशी खाद, मित्र हमारे,
जल भराव दुश्मन हमारा, वहाँ पनपते नहीं हम।
हम बीज विशिष्ट, अच्छी बीज संया चाहते,
हमारी मान्यता राष्ट्रीय, कुपोषण मिटाते समाज का।
कराते प्रोटीन, आवश्यक अमीनो—अम्ल, खनिज, रेशे उपलब्ध,
युवा रखते, ऊर्जा भरते, युवाओं, खिलाड़ियों, सैनिकों में हम।
बुढ़ापे के दुश्मन, रक्त—चाप, कोलेस्ट्राल, दूर भगाते हम,
अपना लो, शामिल कर लो हमें फसल चक्र में, कृषकों।
धारण क्षमता बढ़ाएंगे, जल, खाद व उर्वरकों की हम,
नेत्रजन स्थापित कर, वातावरण से, जीवांश सुधारेंगे।
उगाओ, गैर दलहनों पूर्व, उत्पादन व आय बढ़ाएंगे,
बिना बैंक की, प्राकृतिक दौलत, पर्दे पीछे रहते हम।
जान लो, पहचान लो, गरीब कृषकों, हम हैं आप के लिए,
हम दर्जनों दहलने : चना, अरहर, मूंग, उड़द, मसूर, खिसारी,
राजमास, लोबिया, कुल्थी, मोठ, गहद इत्यादि उगतीं भारत में।
सबसे अधिक दालें पैदा होती भारत में, सबसे अधिक खाते हम,
स्थिति अनुकूल नहीं, तभी उत्पादकता भारत की है काफी कम,
टूटी रुकावट दशकों की, दाल उत्पादन की 2016—17 में,
हुआ उत्पादन 23.13 मिलियन टन, ना होगी कमी भारत में।
धन्य दाल कृषक, धन्य दाल वैज्ञानिक, धन्य सरकारें हमारी,
हो रही भारत में दाल क्रान्ति, ना छुऐंगे भाव आकाश कभी।

हम हैं मरु क्षेत्र की मरु दहलनें,
ग्वार, मूंग, मोठ, चंवला हैं मरु दलहनें,
कम वर्षा, देख–रेख चाहती हम दलहनें,
विषम परिस्थितियों, हालातों से लड़ते आए हम।
चारा, भोजन, सब्जियां, परिष्कृत पदार्थ देते हम,
कृषकों के पारिवारिक सदस्य, सदां साथ खड़े हम,
साथ छोड़े, वर्षा व प्रकृति, हम सदा साथ ही खड़े,
हो वर्षा 150–500 मि.मी., रुठे 30–40 दिन
भारी प्रकोप सूर्य देव का 40–42 डिग्री से.तक,
पर हम कृषि सैनिक डटे रहते खेत में हिलते नहीं,
वर्षा आई जल्दी, आई देरी से, गई जल्दी से,
हम खूब लड़ते रहे दुष्वारी से, धोखे के हालात से,
हम उगे कृषक हाथों से, कटते भी कृषकों से,
हम स्थिरता लाते, भूमि सुधारते, कटान रोकते,
कृषकों की श्वांसों को हम रोके रखते, खड़े खेत में,
हम ही इतिहास, हम ही हैं भूगोल मरु कृषकों के,
हम अधूरे, विषय परिस्थितियों बिन, बने इनके लिए,
हम व विपरीत हालात बने, मरु कृषकों के लिए,
पशु आधारित खेती के मुख्य आयाम हम ही हैं
पशु मित्र, कृषक मित्र, भूमि मित्र, दुष्वारी के मित्र हम
रहेंगे हम, रहेंगे जब तक, मरु कृषक, मरु भूमियां,
साथ हमारे चल रहा अनुसंधान, विकास आजकल भारी,
जान लें, अपना लें हमें, हार ना मानेंगे उत्पादन में हम।

मसाला फसलें : लागत कम आय अधिक

है भारत प्राचीन मसालों की भूमि, फैल रही महक पूरे संसार में,
विशेष तेल व महक मिलते पौधों की पत्तियों, फूलों, बीजों, जड़ों से।
ठंडे राष्ट्रों की भोजन सामग्री में प्रयोग होते मसाले काफी कम,
इथोपिया, इंडोनेशिया, भारत जैसे गर्म राष्ट्रों में होते प्रयोग अधिक।
है भारत अग्रणी, उगाता दुनिया की 109 में से 63 मसाला प्रजातियां,
उगाई जाती सफलता पूर्वक, 20 प्रजातियां बीजीय मसालों की भारत में,
हैं महत्वपूर्ण, आकार छोटा, कीमत अधिक, क्षेत्र कम, फायदा अधिक,
पारम्परिक फसलों संग, ये फसलें, जानी जाती एकांतर लाभ की फसलें
ज्ञानी—ध्यानी मानते, गुजरात, राजस्थान को बीजीय मसालों का मुख्य क्षेत्र
यह क्षेत्र उत्पन्न करता भारत का इन मसालों का 80% उत्पादन
जीरा, धनिया, कलौंजी, सौंफ, मैथी, अजवायन, मुख्य बीजीय मसाला फसलें,
हैं ये नकदी, मूल्यवान, निर्यातक महत्व की, लगती लागत कम,
11.83 लाख टन उत्पादन, निर्यात 21.5 लाख रुपए का, 181 देशों में,
सबसे बड़ा निर्यातक राष्ट्र चीन, फिर यू.एस.ए., बांग्लादेश होता।
फसलें हैं बहुत महत्व की, सुगंध की, स्वाद की, मावन स्वास्थ्य की,
करती पाचन दुरुस्त, हड्डी मजबूत, वजन नियंत्रण, रक्तचाप सामान्य,
कैंसर, शर्करा, जी घबराना, एनिमिया, मूत्र संवर्धन, यकृत स्वास्थ्य वर्धक,
दूर करती पेट की ऐंठन, सर्दी, जुक़ाम, बवासीर व दूसरे रोगों में लाभदायक,
मूल्य संवर्द्धन से लबालब, उतरे सह—उत्पाद इनके खरे बाजार में
बनाए गए मेथी—मक्का से मधुमेह बिस्कुट, मीठे, कम मीठे बिस्कुट,
धनिया, चाय मसाला, धनिया आर.टी.एस. हैं उपलब्ध जैविक उत्पाद,
गर्म मसाला, चना मसाला, राज़मा मसाला, सब्जी मसाला जीरे की गोलियां,
जीरा पाउडर, तेल, वनस्पतिक तेल, सांभर मसाला, पाव भाजी मसाला
शाही पनीर मसाला, जल जीरा मसाला व हैं दूसरें पदार्थ उपलब्ध
लें ताजा ज्ञान, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर से।

मैं जीरा, कम अवधि, थोड़ी भूमि, कम लागत से, दूं आय अधिक,
मैं नगद, निर्यातक, महक, सुगंध, स्वास्थ्य, रसोई, शक्तिवर्धक हूं,
गुजरात, पश्चिमी राजस्थान को मेरा मुख्य उत्पादन क्षेत्र मानते
छोटा, हल्का, सफेद, काला, अंबर रंग मेरा, मारवाड़ का सफेद सोना हूँ
मुझ से बीज, पाउडर, सामान्य तेल, वाष्पित, ओलियोरीजन तेल बनाये जाते
बढ़ा मुद्रा की कीमत, 70 राष्ट्रों में हो निर्यात, विदेशी मुद्रा कमा लाता मैं,
खूबियाँ अनेक, पर मुझे उगाना थोड़ा कठिन, हूं कोमल, छुई मुई,
अंकुरण में परेशानी, अधिक ओस, ठंड, पाला, गर्मी, जल भराव, सुहाते नहीं,
मैंने सीख लिया भूमि से, कृषकों से, वातावरण से, बताऊं क्या करें?
उगाएं मुझे 25 डिग्री से.ग्रे. पर, रेतीली, दोमट, समतल, उपजाऊ भूमि में,
बोऐं उथला, मिट्टी की हल्की नरम परत चढ़ाएं मुझ पर,
6 घंटे भिगो पानी में बोएं, 6 दिन में आऊँगा, मैं बाहर
उत्तम किस्म जी.सी.—4 का 14 किलो बीज प्रति हेक्टर बोयें,
मशीन द्वारा 30 से.मी. दूर पंक्तियों में बोया करें मुझे,
मुझे बिखेर कर भूल कर भी कभी ना बोएं
10 टन कम्पोस्ट, 5 टन केंचुआ खाद या मैंगनी 4 टन हेक्टर दें
बचाये रखे मुझे खरपतवारों, कीटों, बीमारियों व पाले के प्रकोप से,
हूँ मैं कोमल, कमजोर, सशक्त नहीं, करने इनका मुकाबला,
बचाने उखटा से, मिलाये अंतिम जुताई पर 2.5 टन सरसों तूड़ी अवशेस,
व 5 किलो सरसों की खली प्रति हेक्टर, साथ ही 250 ग्राम,
ट्राईकोडरमा, 100 किलो कम्पोस्ट प्रति हेक्टर भूमी में
रोकने प्रभाव एक साथ जुलसा व छाचिया रोगों का, करें छिडकाव,
प्रभावित पौधों पर टेब्युकोनेजोल 25% डब्लु जी 1.5 पी पी एम का,
रोकें प्रकोप जुलसा का, करें बीज उपचार 2 ग्राम मेन्कोजेब किलो बीज
करें छाचिया रोग प्रबंधन, छिडकें 5.0% प्याज का रस पतियों पर
छिडक नीम तेल 2% या 2 एमएल एजेडीरेचटीन/लीटर कीट रोकथाम करें
साथ ही लगायें ट्रेप्स हरे पीले रंग के 25—30 हेक्टर पुष्प आने पर
रखें खेत खरपतवार रहित बोने के 45 दिन तक, करें गहरी गुडाई

सींचें 6—7 बार, बोने के 7—8 दिन बाद अवश्य सीचें
ना सीचें मुझे फूल फल आने पर, ना सीचें पकने पर,
निर्यात बन, जाना विदेश, कटाई, मडाई, दें भंडारण पर ध्यान,
झड़ने से बचाएं, कार्टे मुझे पकने से 7—8 दिन पूर्व, रखें तारपोलिन पर,
रखें पक्के फर्श पर, अधिक सुखाएं नहीं, तेल उड़ेगा मेरा,
भंडारण करें मेरा 8—10% नमी पर, ढंग से
बोरियों में गाड़ियों में, भंडारण में न होने पाये मिश्रण अनचाहा,
जागो कृषक, बादामी सोना उगा ढंग से, साहुकार लखपति बन जाओ।

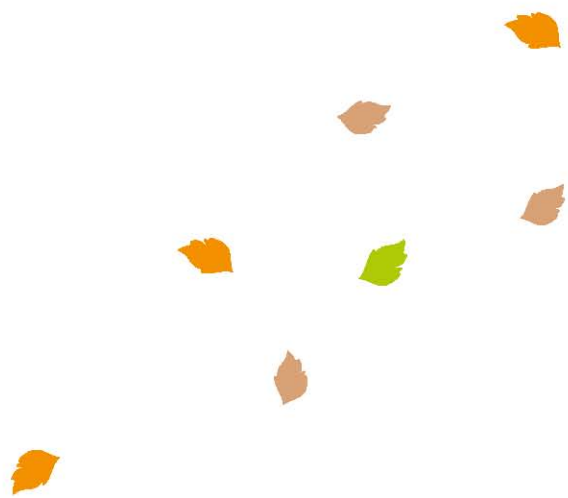

महत्वपूर्ण बीजीय फसल, उगाई जाती गुजरात राजस्थान में मुख्य रुप से
मानते रुचिकर, मधुर, सुगंधित, स्वादिष्ट; डालते सूप, अचार, सॉस,
सौंफ आबू क्षेत्र की, रखती अपना सबसे अलग स्थान,
सुगंध, स्वाद, चमकदार हरे रेशे दानों से जानी जाती;
चाहती गर्म, आर्द्र जलवायु बढ़ते वक्त, पुष्पन समय, शुष्क ठंडा मौसम
है ताप 15—18 डिग्री से., उपयुक्त, पी.एच. मान भूमि का 6.5 से 8.0
जल निकास युक्त, गहरी दोमट काली मृदा सौंफ को सुहाती
बनाएं समानान्तर बड़ें, रखें दूरी अंदर की 100 व 170 से.मी. बाहर की
मिलाएं भूमि में बुवाई पूर्व 10 टन कम्पोस्ट व 2 टन वर्मीकम्पोस्ट,
0.5 टन अरंडी केक, दें 100+50+30 किलो ग्राम एन.पी.के.
करते बुवाई बीजों की 50 x 30 से.मी. दूरी पर सितम्बर—अक्टूबर में
रोपाई विधि से करते बुवाई, तो करें रोपाई सितम्बर में
लगता बीज अधिक 10—12 किलो, सीधी बुवाई से,
लगता बीज नर्सरी द्वारा, सिर्फ 2.0—3.0 किलो हैक्टर
अमजेर सौंफ—1, अजमेर सौंफ—2, आबू सौंफ किस्में, जैविक खेती की,
बीज उपचारें 2—3 ग्राम ट्राईकोडरमा, 10 ग्राम ऐजेटोबेक्टर, व पी.एस.बी. से
दें सिंचाई बुवाई पूर्व, करें रोपड़ फिर बाद, दें 15—16 सिंचाई कुल
चेंपा लगे, करें छिड़काव नीम तेल 2%, ऐजेडीरेचटीन 2 मि.ली./लीटर
अपनाऐं आईपीएम मोड्यूल, लहसुन अर्क 10 मि.ली./लीटर,
तुम्बा फल अर्क 10 मि.ली./लीटर का करें छिड़काव
तना गलन, कालर रौट, ग्रोमासिस, छाछियां, बीमारियां घातक करें खयाल
पड़ा तना काला समझें, तना गलन रोग, ट्राइकोडरमा बीज उपचार करें
तने पर चढ़ाई मिट्टी अधिक, हुई नमी अधिक, दिया न्यौता, कालर रौट को
छिड़कें 0.3% कॉपर आक्सीक्लोराइड, ना करें सिंचाईयां अधिक।

निकले चिपचिपा पदार्थ पुष्प क्रमों से, बनती काली फफूंद, है यही गमोसिस
खड़ी फसल में सूक्ष्म तत्त्वों का छिड़काव करें, करें सभी क्रियाएं संतुलित
बदले क्षत्रक हरे से पीला रंग, क्षत्रक को चुन तोड़ कटाई करें,
8—10 दिन सुखायें छाया में, मिलेगी उपज 22—25 क्विंटल/हेक्टर।

ईसबगोल

है महत्वपूर्ण, उगाता भारत, संसार का 80% ईसबगोल, कहते जीरा घोड़ा,
मिलती दानों से भूसी 30%, बाकि महत्वपूर्ण पदार्थ गोली, खली,
महत्वपूर्ण भूसी, आयुर्वेदिक, यूनानी, ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धतियों में भारी,
है विशेष छपाई, रंगाई, आइसक्रीम, चॉकलेट, गौंद, सौन्दर्य प्रसाधन उद्योगों में
सह–पदार्थ ईसबगोल के गोली, खली, खरी, आते काम चारा उद्योगों में,
है गुणकारी, माना जाता इसे गुजरात, राजस्थान की सिंचित नगदी फसल
शरद–शुष्क जलवायु उपयुक्त, अंकुरण अच्छा 20–25 डिग्री से.पर
झड़ जाता बीज, वर्षा से, पकाव पर फूलती भूसी, खो देते बीज गुणवत्ता
ज्ञानी ध्यानी मांगते साफ, शुष्क धूप भरा मौसम इसे पकाते समय
छोटा बीज ईसबगोल का कहता करो खेत ढ़ंग से तैयार मेरे वास्ते
रखें दूरी 30 से.मी. पंक्तियों की, बोऐं नवम्बर प्रथम पखवाड़े में
सप्ताह बाद करें गुड़ाई, रखें पौधे 5 से.मी. दूरी पर
बीज उपचार 5 ग्राम मेटालेक्सिल 35 एस.डी./किलो, से रोकें तुलसिता प्रकोप
अच्छी किस्में आर आई–1, आर आई–2, आर आई–4 सर्वगुण सम्पन्न
दें 8 टन कम्पोस्ट, 30 किलो नत्रजन व 20 किलो फॉस्फोरस/हेक्टर
दें प्रथम, दूसरी, तीसरी सिंचाई, 10–15, 30–35, 60–65 दिन बाद
खरपतवार नियंत्रण आवश्यक, करें नियंत्रण जैविक, अजैविक, हाथ से अवश्य
छिड़कें 600 ग्राम सक्रिय आइसोप्रोट्यून हेक्टर में, एक–दो दिन बाद बुवाई के
मोयला फैलता फूल आने, पर छिड़के डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर हेक्टर में
तुलसिता आता 55–60 दिन बुवाई बाद,
करें छिड़काव मेनकाजेब 0.2% का आवश्यकतानुसार
उखटा रोग आता किसी भी अवस्था में ड़ालें बुवाई पूर्व 2.5 किलो ट्राईकोडरमा
अंगमारी, करें छिड़काव 0.2% मैनकोजब, चूर्ण फफूंद, छिड़कें कैरोथेन 2 ग्राम लीटर
कार्टे फसल पकने से दो दिन पूर्व, सुखाएं दिन तीन, तब करें मंडाई
भरे बोरों में, करें सही भंडारण, उपज मिलेगी 9–10 क्विंटल हेक्टर में।

ग्वार के उपयोग

सूखा, गर्मी रोधक, आर्थिक, बहुउद्देशीय, है ग्वार एक चमत्कारिक रुक्ष दलहन,
देती भूमि को 40 कि.ग्रा. नत्रजन/हेक्टर, ले वायुमंडल से, यह दलहन।
हैं हरी फलियां, स्वादिष्ट स्त्रोत हरी सब्जियों का, अप्रैल से अगस्त तक,
सुखा हरी फलियों को, आलू की चिप्स समान, प्रयोग में लाया जाता।
हरी फलियों से मिलते कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, खनिज, विटामिन ए, सी, प्रचुर,
आते काम ग्वार के उबले बीज, प्लेग, बढ़े यकृत, सर की सूजन, टूटी हड्डी में
पशुओं को स्वस्थ रखते, होते बीज इसके दस्तावर, पाचन सुधारते
ग्वार देता पोषक, स्वादिष्ट हरा चारा, खिलाया जाए पुष्प आने पर
पाया जाता 60% पाचक शुष्क पदार्थ, व मिलती 16% कच्ची प्रोटीन
स्वास्थय वद्र्धन के लिए, उबाल ग्वार के बीजों को पशुओं को खिलाया जाता
पकी फलियां, गुच्छे ग्वार के तिड़क, भूमि पर गिरते नहीं, बड़ा फायदा
पकते पकते, गिर सारी पत्तियां, मिल भूमि में, पोषकता प्रदान करतीं
स्थानीय दलहनों की तुलना में, भंडारण में कीटों का प्रभाव कम होता
ग्वार उद्योग में, बीज के बाहरी कवच, चूरी को, आहार में प्रयोग करते
प्राप्त कोरमा ग्वार उद्योग से, 40—45% कच्ची प्रोटीन का स्त्रोत होता
बड़े जानवरों के लिए ऊर्जा का अच्छा, सस्ता स्त्रोत माना जाता कोरमा
ग्वार बीज के भ्रूण से प्राप्त पाउडर, अन्तराष्ट्रीय निर्यात महत्व का होता
घुल ठंडे जल में पाउडर, ग्वार गोंद कहा जाता, बदल देता जल का स्वरुप
मोटापा, स्थिरता, बांधना, जल सोखन, जल बहाव, कठोरता के गुण रखता
विशिष्ट गुणों के कारण, ग्वार गोंद, ढेर सारे औद्योगिक पदार्थो में काम आता
अर्न्तराष्ट्रीय जगत में, है भारत की पहचान ग्वार गोंद के भी कारण
ग्वार गोंद, भोज्य पदार्थ उद्योगों, खनिज व दूसरे उद्योगों में काम आता
वस्त्र उद्योगों, कागज, खनन, आयुर्वेदिक, कान्तिवर्धक
उद्योगों में काम आता, तेल के कुऐं खोदने के भी काम आता
हैं राजस्थान में ही 150 से अधिक छोटे बड़े ग्वार पाउडर उद्योग
भारत उत्पन्न करता पूरे संसार का 82% ग्वार, पाकिस्तान 15%
कुल औद्योगिक ग्वार गोंद व सह—पदार्थो का 90% निर्यात होता।

जादुई सहजन वृक्ष

आओ भाईयों मिल बैठ बात करें, एक जादुई वृक्ष की बात करें,
अंग अंग औषधी, कुपोषण की मारक दवा, पोषण बम्ब सहजन,
कुदरती चमत्कार, जड़, फूल, पत्तियाँ, तना, गोंद मानव उपयोगी,
है प्रचुरता कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, लोहा,
मैगनीशियम, इत्यादी खनिजों की इस जादुई वृक्ष सहजन में,
मिलते प्रचुर विटामिन ए, बी, सी, डी, बी काम्पलैक्स भी
मिलती प्रोटीन सहजन में तीन गुणा अधिक, दही की अपेक्षा,
मिलती शक्ति 100 ग्राम सहजन से, मिलती 5 ग्लास दूध से,
मिलते विटामिन सी व ए, चार गुणा सहजन से, संतरे व गाजर की अपेक्षा,
होता पोटेशियम खनिज तीन गुणा अधिक केले की अपेक्षा सहजन में,
कैल्शियम दूध से चार गुणा सहजन में मिलता
मिलते प्रचुर आवश्यक एकल संतृप्त वसा अम्ल शरीर वास्ते,
पीऐं सुबह शाम, फलियों का रस, मिलता लाभ उच्च रक्त चाप में,
करना है कब्ज दूर, पीएं इसके पत्तों का रस आवश्यकतानुसार,
करने बुढापा दूर, खाएं हरी सब्जी, होंगी आखों की रोशनी दुरस्त,
करने रक्त धमनियाँ साफ, पीएं सहजन का सूप हर रोज,
बीजों का तेल रखे त्वचा साफ, आता मालिश के काम, है सौंदर्य स्त्रोत,
बीजों का पेस्ट, आता काम मृत त्वचा को पुनर्जीवित करने
दिल व कैंसर रोगियों को, पत्तों का पाउडर है आयुर्वेदिक स्त्रोत
कुपोषित मासूमों, महिलाओं के भोजन में, सहजन है एक वरदान,
उबाल सहजन को पानी में, भाप ली, जुखाम की जकड़न होगी देर,
प्रचुरता कैल्शियम की, लोहे की सहजन करती हड्डियाँ मजबूत,
पीसी पत्तियों को लगाने से, घाव सूजन दूर होते शरीर कें

कीट प्रबंधन

भूमंडल के जीवों में, है संख्या व विविधता कीटों की, अधिक
रहता मानव—कीट संघर्ष सदां, भूमंडल पर भोजन के लिए,
वनस्पतियां सहारा कीटों का, वो मरे, उन्मूलित न हो कभी
कार्यकी, आनुवांशिकी बदलाव ने उन्हें प्रतिरोधक, घातक बनाया
खोजी तकनीक प्रपंच की, बचाने पौधों को कीट प्रकोप से
प्रपंच पर्यावरण हितैषी, सर्वग्राही, आधारित जियो, जीने दो, भाव पर,
कर कीटों को भ्रमित प्रपंच, नियंत्रण से प्रबंध की ओर ले जाते,
कीटों को छद्म भोजन, छद्म प्रकाश, छद्म गंधपास देते,
हो मोहित, आकर्षित कीट नियत खिंचे चले आते प्रपंच की ओर,
पहुंच कीट, चिपक, चिपचिपे, जहरीले पदार्थ पर, समाप्त हो जाते,
मरते इस विधि से लक्षित कीट, मित्र कीट हमारे बच जाते,
प्रपंचो में गंधपाश—मादा हार्मोन, प्रकाश प्रपंच, खाद्य गंध, प्रपंच
प्रकाश प्रपंच में, तरंग दैर्ध्य किरणें उत्सर्जित, होते कीट आकर्षित,
मादा हार्मोन प्रपंच—गंधपाश, नर कीटों को ही आकर्षित करते
खाद्य प्रपंच में, मिथाइल यूजीनोल संश्लिष्ट रसायन प्रयोग किए जाते,
करते पीले रंग के विभिन्न तानों को प्रयोग, होते कीट आकर्षित,
छुड़ा उनका पत्तियों से आशियाना, भ्रमित प्रपंच अपनी गिरफ्त में लेते,
इन प्रपंचो के साथ, फंदा फसलें प्रपंच भी प्रयोग किए जाते
गैंदे के बसंती पुष्प, फली छेदक को आकर्षित कर लेते,
बसंती गैंदे को सफल माना गया, टमाटर फली छेदक को रोकता,
भिंडी, कपास के बॉल वार्म, मिर्च, सरसों के माहू को भी रोकता,
पत्तागोभी, के हीरक पृष्ठ शुलभ हेतु, फंदा फसलों का काम करता,
प्रपंच सस्ते, सुविधाजनक, पर्यावरण हितैषी, जैविक हथियार, होते।

नर्सरी में कीट प्रबंधन

पौध रोपण बाद अकाल मृत्यु नर्सरी की साधारण समस्या,
रोपण पूर्व, नर्सरी वातावरण में, विद्यमान कीट, है सामान्य समस्या,
आम आदमी को जाननी चाहिए, बारीकियां प्रबंध वातावरण की,
अकसर, कमी आवश्यक पोषक तत्वों की, पौधों को झकझोरती,
अधिक उर्वरकों से पौधे लम्बे पतले हो, पत्तियां झुलसने लगतीं।
है समस्या आम, पानी की कमी भी, इनकों जल्दी सुखा देती,
अधिक पानी देना भी नहीं ठीक, जड़ें नीचे बैठती नहीं,
पौधे विकसित होते नहीं, रोग जनकों का हमला हो जाता।
हो उचित देखभाल, उर्वरकों व पानी में हो पूर्ण संतुलन,
धूप—छाया में जल्दी बदलाव से पौधे समायोजित हो पाते नहीं,
रखें सदां नर्सरी को पूर्ण साफ़, हटाते रहें समय—समय पर,
घास—फूस, कचरा, प्लास्टिक, पुरानी जड़े, रोगग्रस्त पौधे,
बरतें नर्सरी में स्वच्छता, वायु संचालन, छाया, धूप, अनुपातित
ना करें प्रयोग सींचने में छोटे पौधों को, खारे पानी से,
नगरपालिका पानी प्रयोग करें, दें क्लोरोक्स ब्लीच उपचारित पानी,
गमलों में निराई—गुड़ाई करते रहें, ताकि पहुंचे पानी जड़ों पास
हर हाल में बचाएं पौधों को तेज धूप, बर्फीली हवाओं से
अवश्य मिलाएं प्रारम्भिक अवस्था में जड़ों नीचे दीमक की दवा
ना बैठने दें कीट, पौधों पर जाल लगाएं या हटाएं हाथ से,
नर्सरी अवस्था, पौधों की देखभाल की है अहम अवस्था
रहे भूमि में उचित नमी, जैविक रसायन, उर्वरक उपलब्ध।

गुलाबी सुंडी, पुष्प जिसके प्रभाव से, लगते गुलाब आकृति के,
बुवाई के 40—50 दिन बाद, माना जाता खौंफनाक कीट नरमा का,
हैं तरीके अनेक, रोकने प्रभाव को, करने होंगे छिड़काव,
अनेक बार 40 से 90 दिन तक, बढ़ेगा खेती का खर्चा
छिपते अंडे इस कीट के, पुष्पों के अन्दर, मई—जून माह में,
गर्मी बढ़ती, तापक्रम चढ़ जाता 35 डिग्री से.ग्रे.से ऊपर,
हो जीवन चक्र प्रारम्भ, बनते अंडो से सुंडी, प्यूपा व पतंगे,
सुंडी हमला कर, खाती टिंडों को अक्टूम्बर में, बनती नहीं कपास
सुंडियां मरती नहीं, रसायन छिड़कावों से, छिपी रहती टिंडों में,
है आसान, आर्थिक उपाय, न होने दें मिलन, नर मादा का,
तोड़ें इसके जीवन चक्र को, कर नर पतंगो को अलग थलग,
आई एक नई सुगम सफल पी.बी.नॉट जापानी तकनीकी,
किया सफल प्रदर्शन, दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र ने प्रोजेक्ट बंधन का,
उत्तरी—पश्चिमी, मध्य व दक्षिणी भारत के कपास खेतों में,
होता यह एक पतली राखी नुमा धागा खुला दोंनों ओर से,
भरा फैरोमान से, करता व्यवधान कीट मिलन से,
बांधा जाता इसे नरमा के पौधे पर, मान एक रक्षक बंधन,
बांधा जाता इसे प्रत्येक पौधे में, 25 वर्ग मीटर की दूरी पर,
बांधते बुवाई के 40—45 दिन बाद, पौधे की प्रथम शाखा में
प्रति एकड़ होती संख्या 160, सीमा पर लगाते अधिक
आकर्षित कर नर पतंगो को, नर, मादा को मिलने नहीं देता रसायन
पौधे बढ़ें, फूलें, शाखा दें या करें छिड़काव प्रभाव नहीं बंधन पर,
रहता यह बंधन प्रभावी 90 दिन तक पतंगों की संख्या घटाने,
कटाई बाद लकड़ियों को दबाएं खेत में, छड़ीयों को चरने दें पशुओं को,
खेत रखें साफ, सुंडी बीज संग, आती नहीं, किस्म नहीं कोई रोधक,
करें ध्यान, बीटी व गैर बीटी मिलाने से भी इस पर प्रभाव नहीं
खा प्रोटीन बीटी कपास की, बना यह कीट, प्रतिरोधक क्षमता वाला।

खाद्यान्न

अंकुरित बीजों में छिपा लम्बा और स्वस्थ जीवन

आओ स्वास्थ्य लाभ की बात करें, अंकुरित बीजों की महिमा की बात करें,
मिलते भोज्य पदार्थों से पोषक तत्व वृहद्, सूक्ष्म पोषक तत्वों के रुप में,
करते ऊर्जा प्रदान शरीर को, करते निर्माण शरीर की संरचना का,
बचाते बीमारियों से, रखते शरीर में रासायनिक प्रक्रियाओं पर नियंत्रण।
करती निर्भर, पोषक तत्वों की आवश्यकता, आयु, लिंग, कार्य, वातावरण अनुसार,
होते नहीं किसी भोजन में सभी आवश्यक तत्व, करना होता चुनाव, समझ—बूझ।
करते हैं अनाजों का प्रसंस्करण व नियोजन बढ़ाने इनकी गुणवत्ता,
है उद्देश्य क्रियाओं का, जटिल खाद्य अणुओं को तोड़, पोषण बढ़ाना,
अपोषक तत्वों—लेक्टिन, फाइटिक अम्ल, टैनिन, ग्लूटेन, शर्करा को हटाना
हैं महत्व अंकुरित बीजों का, जो सुपाच्य बन जाते, उन्हें समझें हम।
विटामिन, खनिज, प्रोटीन, अमीनो अम्ल आदि की उपलब्धता बढ़ाते,
अंकुरित बीज हमें कई आश्चर्य जनक स्वास्थ्य लाभ प्रदान कराते।
अंकुरित बीज, बढ़ा भोजन में रेशे, हमारी पाचन प्रणाली में सुधार लाते,
रेशे की अधिकता व ऊर्जा की कमी से, अंकुरित बीज, वजन घटाते।
होते ये प्रोटीन के बेहतरीन स्त्रोत, करते हड्डियों, मासपेशियों का निर्माण,
किया मुट्ठीभर अंकुरित बीज आहार में शामिल, होगा कम दूर एनिमिया की समस्या।
होती पर्याप्त मात्रा विटामिन ए व सी की अंकुरित बीजों में,
अंकुरित बीजों में बढ़ती विटामिन ए की मात्रा दस गुना तक।
बढ़ती श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या, रक्षात्मक, सुरक्षात्मक क्षमता में वृद्धि,
अंकुरित बीज समाऐ रखते, एंटी—एजिंग गुण, त्वचा को साफ सुंदर रखते,
विटामिन बी—कॉम्पलेक्स की मात्रा, कोशिकाओं को मरम्मत व पुनर्जीवित करती,
माने जाते अंकुरित बीज ओमेगा—3 वसीय अम्ल के स्रोत, हृदय को स्वस्थ रखते,
ये खराब कोलेस्ट्रोल को घटाते, अच्छे कोलेस्ट्रोल को बढ़ाते,
ये बालों के विकास में सहायक होते व दृष्टि में सुधार लाते,
अंकुरित अनाजों को किसी भी प्रकार के आहार में शामिल करें हम,
इन्हें दैनिक आहार—सब्जी, दाल, स्नैक्स, सलाद में शामिल करें हम।

बचाने दिल के दौरे से खायें फल विशेष

दिल का दौरा बीमारी घातक, होती रक्त की वाहिनियां अवरुद्ध,
होता बुरा कोलेस्ट्राल जमा, पड़ता रक्त दबाव और दिल का दौरा,
हैं संसार में फल कुछ, मिलता इन से आराम, करें सेवन।
खाएं, ब्रोकली सब्जी, होता प्रचुर पोटेशियम व सेल्फरोफिन,
पोटेशियम खजिन, रक्त वाहिनियों में कैल्शियम को जमने से रोकता,
वाहिनियों को साफ रखता, सेल्फरोफिन जाना जाता विशिष्ट प्रोटीन वास्ते,
जो घटा रक्त चाप को, कोलेस्ट्रोल को जमा होने से रोकता।
ऐवोकाडो विदेशी फल, मिलता भारत में, है इसकी प्रवृत्ति विशेष,
बढ़ाता अच्छे कोलेस्ट्रोल को, प्रचुर विटामिन ई की मात्रा,
आक्सीकृत कोलेस्ट्रोल को नसों में जमने से रोक, लचकता देती
जैतून तेल में पाई जाती प्रोटीन ए–4, रक्त के थक्के को रोकती,
रक्त चाप दुरस्त कर, बुरे कोलेस्ट्रोल घटाती,
अच्छे कोलेस्ट्रोल को बढ़ाती, है बेहतर भोजन बनाने का तेल।
तरबूज भारतीय फल, जाना जाता लिसीट्रयला अमीनो अम्ल के लिए,
बढ़ा देता नाइट्रिक: ऑक्साइड अनुपात, होता नसों में दबाव कम।
हल्दी महत्वपूर्ण घरेलू रसोई पदार्थ, जाना जाता करक्यूमिन वास्ते,
देता शक्तिवर्धक व एंटीइंफ्लेमेटरी क्षमता शरीर में जबरदस्त,
हल्दी में विटामिन बी–6 भी होता, नसों में सूजन को रोकता।
मूंगफली गरीबों का बादाम, करें सेवन आवश्यकतानुसार,
रहेगी 30–40% तक दिल की बीमारियां, दूर हमारी।
अखरोट स्वास्थ्य के लिहाज से सबसे बेहतर सूखा फल,
मिलता इसमें ओमेगा–3 वसीय अम्ल व लिनोलिक अम्ल प्रचुर।
बादाम, माना जाता अच्छा स्वास्थ्य वर्धक सूखा फल,
होता इसमें प्रचुर मात्रा में मोनो असंतृप्त अम्ल प्रचूर।
मैगनीशियम खनिज, जो रक्तचाप को कम किए रखता,
रेशे की मात्रा बढ़ती, खाएं अखरोट व बादाम, रहेंगे फिट।

क्यों ना खाद्यान्न बर्बाद

सुनों देशवासियों, सुनो देश चलाने वालो, आमजनों, कृषि वैज्ञानिको सुनो
भूमि, जलस्तर घट रहे, ग्लोबल उष्मा बढ़ रही, वातावरण रहा बिगड़,
बढ़ती आवश्यकताएं व आबादी, घट रहा उत्पादन, मुख्य फसलों का,
नहीं चेते, निकाली नहीं राह, होंगे परिणाम घातक, झांके पड़ौस में,
बढ़ती भुखमरी, बढ़ रहा सांसारिक भूख मानक, दुनिया भर में,
हम बेवफा, भावनाओं से जुड़ते नहीं, गरीब—बेसहारों की सोचते नहीं,
चिंता घटते उत्पादन की, कुप्रबंध की, सामाजिक एहसास नहीं,
आंकड़े बताते, गेहूं, चावल, मक्का उत्पाद हो जाते बर्बाद 30% तक,
होगा क्या आखिर, फेंकी जा रहीं सब्जियां कचरे में लगभग 45% तक,
सजधज जाते आयोजनों में, खुशियां बांटने, दिखाने स्वयं को आकर्षित,
करने जाते व्यापारिक सौदा, संबंध खूब बनाते, खो जाते आवेश में,
खाते नहीं, फेंक देते उतना, बना आयोजनों को व्यर्थ स्थल लौटते।
ताकते, झांकते, हाथ फैलाते भिखारी, जूठन उन्हें नहीं, कूड़ेदान को मिलती,
चिंता भारी, हो जाते खाद्य पदार्थ बर्बाद दुनिया में 750 लाख डॉलर के,
साथी, सगे, बंधु भाई हमारे भूखे सोते, दुनिया में रोज 80 करोड़,
बर्बाद करते, 210 लाख टन गेहूं, 50 हजार करोड़ रुपयों का प्रतिवर्ष
बिन बर्बाद, रहे भूखे एक समय, हराया था पाकिस्तान को 1965 में,
मनाएं, अन्तराष्ट्रीय खाद्यान्न बर्बाद जागृति दिवस हकीकत में रोज़।
दें ना दोष सरकार को, तंत्र को, प्रकृति को, अपने कृषक भाईयों को,
अन्न उत्पादन करते नहीं हम, फिर बर्बादी का अधिकार हमें कैसे?
रोक बर्बादी खाद्यान्नों की, बचा लें 81.8 करोड़ कुपोषित जनों को
भक्ति यही हमारी, राष्ट्रीय धर्म, कर्म, होगा सबसे बड़ा फर्ज यहीं हमारा,
रोकें यह बर्बादी, उपकार करें राष्ट्र पर, भूखे, गरीब, कुपोषितों पर,
करे ऐसा, मानव से इंसान, इंसान से नागरिक, देव बनें भारत के हम।

श्वेत क्रान्ति

ऊँट मरु क्षेत्रों में उपयोगी, यातायात, ढुलाई व दूध वास्ते,
हैं ऊँट दुनिया में करीब 270 लाख, फैले 40 राष्ट्रों में,
होता विशेष लाभदायक प्रकृति का ऊँट का दूध कम लागत में,
करें गौवंश से तुलना, मिलते ऊँट के दूध में कम प्रतिशत में,
वसा, कुल प्रोटीन व ठोस पदार्थ, होते जबकि, रक्षात्मक प्रोटीन,
कुल लवण अधिक, उपयोग होता किणवीकृत दूध संसार भर में,
माना जाता दूध विशिष्ट श्रेणी का, विपरीत स्थितियों में,
प्रतिरोधकता व प्रतिरक्षा देने वाले हार्मोन होते प्रचूर,
आइसोजाइम, लेक्टोफेरिन, लैक्टो पर आक्साइड मिलते अधिक
गौवंश तुलना में, ऊँट के दूध में मिलते असंतृप्त वसीय अम्ल अधिक,
होती वसिय अम्ल की कड़ियां लम्बी, होता लैक्टोज अधिक,
केसिन ऊँट के दूध की मुख्य प्रोटीन, मिलती गाय दूध से अधिक,
ऊँट दूध को आयुर्वेदिक पोषक तत्वों से भरपूर माना जाता,
होता रक्षात्मक यह दूध कोलेस्ट्राल व रोटा वायरस के प्रति,
लम्बे समय से व्याप्त व्याधियों, प्रतिक्रियाओं, से छुटकारा दिलाता,
मधुमेह की सुस्ती, बच्चों की पेचिस, यकृत की खराबी, चिड़चिड़ापन,
खट्टेपन, शराब जनित यकृत की खराबी, कैंसर को रोकने की क्षमता रखता,
इसमें पेपटाइड प्रोटीन की उपस्थिति, जैविक गतिविधियों को सुधारतीं।
विज्ञान बताती, ऊँट के दूध में विशेष प्रकार की प्रोटीन होती,
जो मस्तिष्क के विकास व सुरक्षा के लिए उपयोगी जानी जाती,
हर आयुवर्ग के मानवों के लिए यह दूध उत्तम पाया जाता।
कम लागत, कम देखरेख में, उत्पन्न होता ऊँट का दूध,
रहता काफी सुरक्षित विपरीत परिस्थितियों में लम्बे अरसे तक,
सुरक्षात्मक, प्रतिरक्षात्मक, आयुर्वेदिक गुणों के लिए उत्तम ऊँट का दूध।

देशी व विदेशी गायें

देशी गायें बेहद कीमती, कम लागत, प्रबंधन, दूध अधिक,
प्रजातियाँ थारपारकर, नागौरी, काकरेच, साहीवाल नहीं अब शुद्ध,
पहचान करें, पहले हम देशी, विदेशी गायों की साधारण रुपेण,
होता कुंभ या हम्प देशी गायों में, होती अन्दर सूर्यकेतू नाड़ी,
कहता वैदिक विज्ञान, करती नाड़ी ब्रह्मांड से औषधीय पदार्थ एकत्रित,
प्राप्त करती शक्ति सौरमंडल, सूर्य, तारों ग्रहों से यह नाड़ी,
कर देती शक्तियों से भरपूर अपने दूध, घी, गोबर, मूत्र को,
विदेशी गायों में नाड़ी होती नहीं, कान देशी गायों के होते लम्बे,
सींग देशी गायों के लम्बे, शक्तिशाली, बड़े आधार वाले होते,
मुंह देशी गाय का सफेद, सुंदर गोलाकार पाया जाता,
खुर देशी गाय के छोटे, मिले होते, करते सुरक्षा प्रदान,
झालरनुमा लटका भाग गर्दन नीचे, देता प्रतिरोधक क्षमता इन्हें,
विदेशी गायें स्वयं को विपरीत परिस्थितियों में ढाल पातीं नहीं,
देशी गाय का दूध ए—2 पौष्टिक होता, ओमेगा—6 वसीय अम्ल भरपूर होता,
विदेशी गाय का दूध ए—1, बीटा मॉरफीन युक्त नशा देता,
ए—2 दूध में कैल्शियम, मैग्नीशियम 2:1 अनुपात में होता
यह अनुपात ए—1 दूध में 10:1 का, घातक माना जाता,
एक लीटर दूध से 24—32 ग्राम कैफीन, करता बीमारग्रस्त
स्थापित होता इसमें हिस्टीडीन प्रोलीन के स्थान पर, डी.एन.ए. में,
67वें स्थान पर होता, करता उत्पन्न 2—3 अमीनों अम्ल अधिक,
पहुंचते ये तत्व दूध द्वारा शरीर में, गंभीर रोग पैदा कर देते।
मिलते तांबे के कण मूत्र में, दूध में स्वर्ण लवण, देशी गाय में,
होता देशी गाय का दूध, दही बेहद ही पौष्टिक,
मिलते प्रोटीन 8, विटामिन 6 व खनिज 25 प्रकार के
अमीनों अम्ल 21 प्रकार के, फास्फोरस विद्यमान होते दो प्रकार के।
तभी तो भारतीय गण, देशी गाय को दिल से पूजा करते।

हे गौ माता तुझे प्रणाम!

अनजान, अज्ञानी, अपरिचित धर्मावलम्बी कहते,
मानते समझते साधारण पशु जिसे,
पाया था, उसी ने सांसारिक रक्षक पालक,
श्री कृष्ण गोपाल का अभेद आशीर्वाद।
पूजा जा रहा, जो युगों युगों से,
वही पशु बना, सनातनियों का मोक्षधाम,
कहलाया वही रक्षक, सचेतक, बहुमूल्य,
भारतीयों की पुण्य पवित्र पूजनीय गौ माता।
हैं तीन माताएं हमारी जननी, भूमि, गौ माता,
लिपटा आशीर्वाद, प्रभू का तीनों में,
है यह पशु असाधारण, इस भूमंडल पर,
माना गया, इसे मानव वास्ते, दसवीं निधी।
गौ माता, है पशुओं बीच एक अपवाद,
जाना जाता, चलता—फिरता जैविक उद्योग,
ओढ़ती गौ माता शक्ति, स्फूर्ति, स्वास्थ्य,
सामाजिक समता, उत्थान के समस्त आदान।
राष्ट्रीय खुशहाली, भूमि सुधार, जैविक खेती द्वार,
गौ माता के पदचिन्हों से ही खुलते, माने जाते।
महान दार्शनिक, विचारक, भक्ति में डूबे,
मुनि, सदा रखते माता को अपने संग,
धर्मस्थलों, यज्ञशालाओं, अखंड कीर्तनों आयोजनों का
अभिन्न अंग बनी है, हमारी माता गौ माता,
सुन्दरता, अंग अंग का आकर्षण, उपयोगिता,
धरातल पर गौ माता ही है एक पशु।
मूत्र व गोबर दौलत से तुलते, निर्यात होते,
मान्यता इतनी, मंदिर नहीं, गौ दर्शन ही सही।

चपाती रोज़ एक माता को, परमोधर्म माना जाता
हाथ फेरा रोज़ कमर पर, होगी बीमारी गायब,
धूम्रकेतू नाडी, संचित कर ऊर्जा देती हमें,
आएं, मिल, गौ सेवा करें, रक्षा करें इसकी,
नफरी बढा, अकस्मात खतरों से इन्हें बचाएं,
दुर्घटना को रोकें, रिफ्लेक्टर सींगो पर लगाएं,
इसे जन आंदोलन का रुप दें, गली मुहल्लों,
शहरों, कस्बों, बड़ी सड़कों पर इसे प्रारम्भ कर,
एक नया आन्दोलन खड़ा कर इसके भागीदार बनें,
इसके हर उत्पाद की व्याख्या गीता से जान लीजिए।

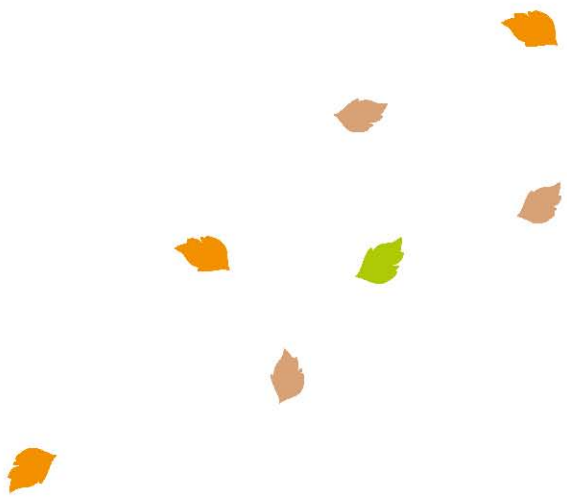

सफलतम कहानियाँ

अनार की सफलतम कहानी

चर्चा करें, मिला अनार पर पदम्श्री, उनकी ही चर्चा करें,
डीसा—भीलड़ी सड़क पर, सरकारी गोलिया गांव, गैनाराम पटेल का,
थी भूमि असमतल, जलभराव, कम उर्वरकता से ग्रस्त,
कृषक ने बदली ऊपरी सतह, चिकनी मिट्टी से 28 एकड़,
खोद गड्ढे, 12 × 8 फीट दूरी पर, सिकने दिया गर्मी में, माह दो,
भरे गड्ढे, डाल बराबर मात्रा रेत, चिकनी मिट्टी, कम्पोस्ट, नीम खली,
लाए 18000 ऊत्तक पौधे, भगवा, सिंदूरी, नासिक से, 2005 में
लगा पौधे, जुलाई में, जोड़ दिया, ड्रिप तंत्र से, वर्ष एक बाद,
लगाए गए 400 पौधे एकड़, आया खर्चा, रुपए 4 लाख 15 एकड़ का,
दिया पूरा ध्यान पोषक तत्वों पर, लगाए जब पौधे गड्ढों में,
दिया, कम्पोस्ट, मैंगनी खाद, नीम खली, बराबर, नहीं दिया दो वर्ष,
दिया तीसरे वर्ष तरल खाद जीवामृत ड्रिप से 20—25 दिन बाद,
की छंटाई पुरानी शाखाओं की मई, जून, आएंगे फल नई शाखाओं पर,
ली सहफसल प्रथम दो वर्ष, उगा मिर्च, टमाटर, 12 फीट चौड़ी पंक्तियों बीच,
मिला उत्पादन 15—20 किलो तीसरे, 30—40 किलो चौथे वर्ष/वृक्ष
मिली आय रुपए 4.0 लाख एकड़, रूपए 800—1000 प्रति पौधा,
हुआ खर्चा रुपए 1.0 लाख, मिली असल आय रुपए 3 लाख एकड़,
हुई देखभाल कम, बदला तापक्रम, जाएंगे फल तिड़क,
करते भ्रमण कृषक 10 हजार, अनार की खेती देखने प्रतिवर्ष,
लगाते गैनाराम पटेल पहली या दूसरी तारीख, अनार पाठशाला,
दौरा करें, सीखें हकीकत खेत की, गैनाराम की, सफलता की।

अनार में कीटों की रोकथाम

पदार्थ जितने सुन्दर, सस्ते, श्रेष्ठ, होता उनका विरोध भरपूर,
अनार में सूत्रकृमि, फल मक्खियां, ओसिय कवक, पत्ती धब्बा समस्याएं,
पुष्प झड़न वर्षा से, कवक ओस से, सूखना, सुकरा क्राउन से,
दबना फलों का, तोते, गिलहरी, सुअरों का आंतक, समस्याएं अनार की।
लगाएं चार पंक्तियाँ गेहूं, चारों ओर भरा पेट, नहीं होगा नुकसान,
रोकी गिलहरी, चढ़ी नहीं, लगाई प्लास्टिक एक फुट अनार पर,
रोकने नीलगाय, किया मूत्र का का छिड़काव चारों ओर,
रोका सूअरों का आंतक, खोज उनका रास्ता डाला तेज मिर्च व बालू,
आते सूअर, सूंघते राह बीच, फंसे मिर्च व बाल, बचने सूअर भाग जाते,
सूत्रकृमि रोकने किया ड्रिप तंत्र बंद वर्षा में, खोदी खाई चारों ओर,
डाल फार्मेल्डिहाइड भरा पानी, भरी खाई, लगाए गेंदे चारों ओर बीच,
छिड़कें मैनकोजेब—45+ कार्बेन्डोजिम (0.2 प्रतिशत) रूकेगा पत्ती धब्बा,
करें भंडारण फलों को 20 डिग्री से.पर, ना होंगे खराब आसानी से,
फल होते नहीं खराब अनार की तुड़ाई बाद 6 माह तक,
मुड़ पत्तियां पीली हुई समझें रस चूसक मक्खियाँ लगीं भारी,
करें छिड़काव डाइमिथाएट 30 ई.सी. 0.06 प्रतिशत पत्तियों पर
फल छेदक, सूंडिया रहती फलों में, गिरते जाते फल,
आती दुर्गन्ध फलों से, छिड़कें डेल्टामेथरिम 2.8 ई.सी. फूलों पर,
तना छेदक, भरें छिद्रों में फेनवेलेरेट 20 ई.सी., 5 एम.एल. प्रति लीटर,
सूंडियां छाल को खातीं, टनल बना छाल के नीचे रहा करतीं,
छिद्रों में पहुंचाएं क्यूनोलफास 25 ई.सी. का 0.1 प्रतिशत,
करें स्वच्छ खेती, रखें पौधें दूर, तोड़े प्रभावित शाखाएं बार—बार,
पाने व्यवहारिक ज्ञान, करें दौरा गैनाराम पटेल फार्म का।

मारवाड़ में खजूर की सफलतम कहानी

किसान भाईयों नवाचार की बात करें, मारवाड़ में खजूर की बात करें,
नवाचारी कृषक बोलते, खजूर भुज में होते, तो बाड़मेर में क्यों नहीं ?
किया हौसला भारी सादुलराम ने, लिया खजूर का पूर्ण ज्ञान,
की संयुक्त अरब अमीरात से आयात टिशू कल्चर की किस्में दस,
बरही, मैजडूल, अल्अजबा, नागेल, फर्द, खुलेजी, ख्लासा, इलावी,
संग्रान, जगलूल इत्यादि, 2010 में।
खेती मारवाड़ में मानी जाती जुआ, खेती खजूर की उगलेगी,
शांति, सुकून, संतोष, समृद्धि, बेइन्ताह, होगी विविधता,
लगाया पूर्ण तकनीक से, दिए फूल 3 वर्ष में बिरही किस्म ने सर्वप्रथम,
मिला उत्पादन 30—40 किलो प्रति पौधा, बढ़ा 80—90 किलो 2013 में,
बिक जाता गुणवत्ता वाला खजूर मारवाड़ में रूपए 1000—5000 किलो
मिल गई आय संतोषजनक, कृषक को आलमसर, चौहटन, बाड़मेर में,
मिले रुपए 20 लाख 2017 में, 45 लाख 2018 में 600 वृक्षों से,
मिलते भाव अलग—अलग खजूर की किस्मों के गुणवत्ता अनुसार,
बिक जाते खजूर खुलेजी रुपए 1000, अल्अजबा रुपए 5000 किलो।
हैं अर्थशास्त्र खजूर का मजबूत, अच्छे खजूर बाजार में बिक जाते,
खराब गुणवत्ता वाले खजूर चले जाते, खजूर की वाइनरीज में,
फल बिक ही जाते देर सबेर, समस्या नहीं हमारे भारत में।
हैं खट्टे अनुभव खजूर के, मादा पौधों में परागण समस्या कठिन,
चाहिए खजूर को तापक्रम, अधिक, 44—45 डिग्री, पकते समय,
भारत में पकाव समय जुलाई में, गिर जाता ताप काफी नीचे तक,
प्रभाव हानिकारक कम ताप का, घट जाता उत्पाद करीब आधा।
दिया जाता देशी खाद 100 किलो/वृक्ष, आधा नवम्बर, आधा अप्रैल में,
आवश्यकता नहीं खजूर को रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों की,
कहते हैं, खजूर का हो सिर गर्म पर हैं, पैर ठंडे जल में।
जानने और अधिक, दौरा करें, आलमसर खजूर फार्म का।

पोली हाउस से, संतुष्टि व आत्मनिर्भरता

बताऊँ, किसान भाईयों, होते कैसे पोली हाउस से माला माल,
चर्चा, आत्माराम विश्नोई, फूलदेसर बीकानेर पोली हाउस के महारथी की,
पांच पोली हाउस, चाहते 2 और, पाया सूत्रकृमि पर नियंत्रण,
करते 20 तकनीशियन कार्य, देते नौकरी व तकनीकी सलाह,
कमाते रुपए 10–12 लाख प्रति वर्ष एक पोलीहाउस से,
अनुभव बहुत पोली हाउस का, जाना चाहते इज़रायल, किसी तरह,
पोली हाउस 4000 वर्ग मीटर, सुसज्जित, वर्तमान सुविधाओं से,
सभी आवश्यक सुविधाएं हैं, ड्रिप, तरल उर्वरक, फोगर; पोली हाऊस में,
नमी, ताप नियंत्रण कर, लेते 2–3 फसलें खीरा, टमाटर प्रति वर्ष
खीरा, टमाटर, वाणिज्य फसलें शहर समीप पोली हाउस की,
एक मीटर फासलें पर बनाते, बड, होती दूरी 40 से.मी.,
बडों के ऊपर लगाते खीरा, टमाटर, रखते फासला 30 से.मी.,
रखा जात ड्रिप तंत्र बढ़ों बीज, रखते खीरा टमाटर को सीधा,
बांधते ऊपर रस्सी से, गिरे, झूलें ना, फल वजन से,
गर्मी, फोगर चलाते, नमी, प्लास्टिक जाली हटाते,
पानी, तरल उर्वरक देते आवश्यकतानुसार, तीन प्रकार से,
13:0:45, 15 दिन बुवाई बाद, 0:0:19 फूल आने पर,
0:0:50 फल आने पर, नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश, क्रमशः।
हर दूसरे वर्ष, भूमि में, फसल लगाने से एक माह पूर्व
मिलाते 10 टन कम्पोस्ट या 5 टन वर्मीकम्पोस्ट प्रति हेक्टेर।
सूत्रकृमि, रुकावट भारी उत्पादन की, पोली हाउस में अधिक नमी से
ग्रीष्म कालीन समय 1.5'x1.0' खाई खोद मैनकोजेब पाउडर 4 प्रतिशत व
फार्मल्डिहाइड पाउडर भर, खाई में पानी दे देते,
इस खाई के ऊपर बिछा प्लास्टिक, गर्मी पहुंचाई जाती,
सूत्रकृमि, नियंत्रण में नहीं आता तो बायोएजेंट छिड़का जाता,
पांचो पोली हाउस से 300 टन खीरा प्रतिवर्ष प्राप्त हो जाता,
फलों को स्थानीय बाजारों, बीकानेर, गंगानगर होटल में खपाते,
फार्म उन्नत मॉडल सा दिखता, किसान भाई देखें, सीखें, आएं यहां।

संवर्धन, प्रसंस्करण, गेहूं के ज्वारा की कहानी

है जज्बा, जोश, ज्ञान, भर देगी दौलत सरकार आप की झोली में,
मिल रहीं सरकारी वित्तीय सहायता, वर्षों से कैलाश चौधरी को,
देने प्रशिक्षण, जैविक खेती, किसानों को, बनाने उन्हें ज्ञान से समृद्ध।
फल नहीं सह–पदार्थ बेचते, गेहूं का ज्वारा बना, उसका निर्यात करते,
कम्पोस्ट बनाते, फसल उत्पाद का ग्रेडिंग कर पैक में बेचते,
काढ़ा बनाते, पोषक तत्व प्राकृतिक देते, बाजरा रोपित ही लगाते।
हुआ उत्पादन 80 टन अपना, खरीदा 30 टन आंवला किसानों से,
किया मूल्य संवर्धन आंवलों का, दूसरे फलों का लिया फायदा खूब,
बनाने लग गए ढ़ेर सारे मूल्य संवर्धित पदार्थ : आंवला जूस, आंवला
पाउडर, आंवला कैंडी, जामुन पाउडर, जामुन रस, ऐलोवीरा रस, त्रिफला रस
बेल रस, अदरक कैंडी, जैविक सरसों तेल, बेल मुरब्बा इत्यादि।
फल नहीं, फल संवर्धित पदार्थ बेचते, बने मूल्य संवर्धित किसान।
थोड़ा कमीशन दे ऐजेंट गेहूं खरीद, बेचते जयपुर दोगुने भाव में,
ग्रेडिंग कर, छोटे पैक में बेचे, दोगने दाम में गेहूँ कैलाश ने,
खाली स्थान कृषक व ऐजेंट बीच भर दिया, सोच से कैलाश ने।
गेहूं का ज्वारा करता, लाल रक्त कणिकाओं का निर्माण, करते निर्यात
करते कार्य भिन्न, चलते राह अलग, परम्परागत फसलें लेते नहीं कैलाश
उगाते गेहूं का ज्वारा पोली हाउस में, काटते 15–20 दिन में, बनाते पाउडर,
80–90 किलो एक बार में, बेचते रुपए 1500–1600 किलो,
करते एक करोड़ का व्यापार प्रतिवर्ष, रखते आय–व्यय का ब्यौरा
बोना, काटना खेती नहीं, संवर्धन, प्रसंस्करण, विपणन संग चले, खेती पूरी,
चाहिए जानकारी, मिलें कैलाश चौधरी, कीरतपुर गांव, कोटपुतली, अलवर में।

विपरीत हालातों को बनाया मित्र

भाईयों बहनों आओ, काली हालतों से लड़ते, कृषक की बात करें,
वित्त, शिक्षा, सरकारी सहायता विहीन, जिंदा दिलों की बात करें,
ढाला अनुभव, हुनर में, उनके उड़ते हौंसले, की बात करें,
ठिकाना बाज़ार से दूर, कच्ची सड़क, रेत के, घुमावदार रास्ते,
घिरा घर, रेंगते टीलों से, सतही जल नहीं, वर्षा होती कम,
करते टीलों पर, पशुपालन, चारागाह, बारानी खेती, गोंद की खेती,
आधी भूमि में घास, चौथाई में बाजरा, बाकी में दलहन उगाते,
किया पशुपालन, पाले 25 भेड़, 20 बकरी, 2 बछड़े, गाय रखीं 4,
धामन, सेवण, भुरट् रहते उपलब्ध वर्षो तक, वर्षा सहारे,
घास खिलाते, गिरता बीज जमीन, करता इन्हें पुनर्जीवित,
मूंग, मोठ, बाजरा परिवार खाता, ग्वार, बाजरा चारा, दाना पशु खाते,
बना कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, भूमि सुधारते, गाय का मूत्र बेचते,
बिकता दूध, ऊन, भेड़—बकरी की मिट्टी भी बिकती,
जा शहर, रख सर बर्तन, घी बेचते, धोखा देता नहीं घी,
देशी घी की साख, बिकता घी रुपए 25 हजार प्रति वर्ष
लगाएं कृषक ने पेड़ कुम्मट के 50, लगाये इंजेक्शन,
बेचा गोंद रुपए 28 हजार, प्रति वर्ष स्थिर हुई आय,
रोक दिया, कृषक ने, कटाव भूमि का, काफी हद तक,
लगा खीप, फोग, करौंदा, कुम्मट, फैलती बेल के पौधे,
मिली आय रुपए 1,15,000 वर्ष, 30 बीघे से, परिवार खुश, शिकवा नहीं,
सोचा मंत्र उन्नति का, बढाएंगे, निर्भरता पशुओं व कुम्मट पर,
जानने, बारीकियां, रहना विपत्तियों संग, टग्गा राम, लापला, बाड़मेर जाएं
शान्ती व सुख से रहना, विपत्तियों संग सोना, सीख लें टग्गा राम से।

कृषि वैज्ञानिक

मैं भारत का कृषि वैज्ञानिक

मैं कृषि वैज्ञानिक, भारतीय किसानों की सेवा के लिए जन्मा हूं।
ध्येय कृषि सेवा, समाज सेवक, कृषकों को जगाने आया हूं।
क्रान्ति की चिंगारी हूँ, परिश्रम को उत्पाद में ढालने आया हूं।
मृदा और जल से कृषक के कंधे मजबूत करना चाहता हूं।
मृदा को, जल और वनस्पति की चादर से ढकना चाहता हूं।
मूल्यवान जैविक विविधता को, राष्ट्र की धरोहर बनाना चाहता हूं।
जनसंख्या के ज्वालामुखी को, खाद्यान्न उत्पादन से शांत कराया है।
रोटी, कपड़ा, मकान से, भारतीय लोकतंत्र को मजबूत बनाया है।
शुद्ध, संतुलित भोजन से, भारत की पीढ़ी को जवान बनाया है।
बुढ़ापे को पीछे धकेला है, मृत्यु दर को झटक दिया है।
अनुसंधान के आयामों को चुन, बारानी खेती में क्रांति लांऊगा।
थार में गेहूं, क्षार में दलहन, शुष्क भूमियों में धान उगाऊंगा।
पर्वतों पर फूलों की खेती, भूमि सुधार से बीहड़ में बादाम उगेंगे।
बूंद–बूंद सिंचाई से, सूखे, खारेपन की समस्या समाप्त कराऊंगा।
मैं, कृषि द्वारा, भारत को आकाश की बुलन्दियों तक ले जाऊंगा।
कृषि की विकास दर को, देश की तरक्की की वैतरणी बनाऊँगा।
कहीं रहुं, जाऊं, कृषकों की समस्याओं व निदान के गीत गाता रहुंगा।
मैं भारत को फिर से, गौतम और अशोक का देश बनाऊँगा।
पश्चिमी देशवासियों से भारत को, सोने की चिड़िया कहलवाऊंगा।
देश पर राज करेगा किसान, देश को स्वर्ग बनाएंगे, कृषक व कृषि वैज्ञानिक।

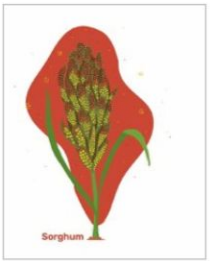
Sorghum

Pearl millet

Foxtail millet

Proso millet

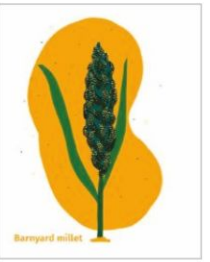
Barnyard millet

Browntop millet

White fonio

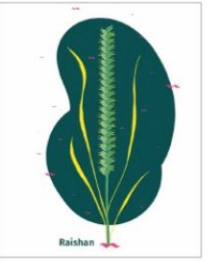
Raishan

Job's tears

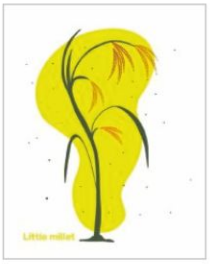
Little millet

Kodo millet

Black fonio

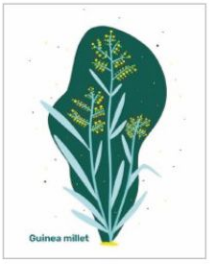
Guinea millet

Finger millet

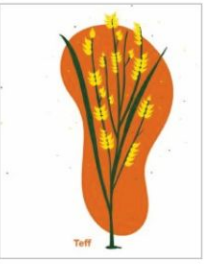
Teff

G20 भारत 2023 INDIA

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS 2023

SOUTH ASIA BIOTECHNOLOGY CENTRE®

दक्षिण एशिया जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र

जोधपुर, राजस्थान, भारत